



विद्याविनियोगाद्विकासः

पंद्रहवाँ अंक

प्रतिविष्ट

फरवरी 2026



विद्याविनियोगाद्विकासः

भारतीय प्रबंध संस्थान अहमदाबाद

वस्त्रापुर, अहमदाबाद - 380 015

दूरभाष: 91-79-7152 4691 फैक्स : 91-079-26300352, 26308345

ईमेल : agm-hindi@iima.ac.in वेबसाइट : www.iima.ac.in

© प्रतिबिंब – पंद्रहवाँ अंक, फरवरी 2026

संपादक

डॉ. मुकेश शर्मा

सहायक महाप्रबंधक-हिंदी

भारतीय प्रबंध संस्थान अहमदाबाद

सहयोग

बिन्दु डोडिया

सहायक प्रबंधक - हिंदी

एवं

प्रकाशन विभाग

भारतीय प्रबंध संस्थान अहमदाबाद

“प्रतिबिंब” में प्रकाशित रचनाओं में व्यक्त किए गए विचार एवं दृष्टिकोण संबंधित लेखकों के हैं।
संपादक एवं संस्थान का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है।

- संपादक

संटेरा



हमारा देश सांस्कृतिक एवं भाषाई विविधता से समृद्ध एक महान राष्ट्र है। हमारे देश की सभी भाषाएँ एवं बोलियाँ हमारी जीवंत धरोहर हैं और हमारी राजभाषा हिंदी सभी भाषाओं की उत्कृष्ट श्रृंखला में अपनी विशिष्ट पहचान रखती है। हमारी राजभाषा हिंदी ना केवल हमारी संपर्क भाषा है बल्कि वैश्विक भाषा के रूप में भी अपनी विशेष पहचान बना चुकी है। हमारे प्रवासी भारतीयों द्वारा राजभाषा हिंदी का वैश्विक पटल पर किया गया प्रचार-प्रसार हम सभी को गौरवान्वित कर रहा है।

भारत सरकार की राजभाषा नीति की अनुपालना में हम सब का यह संवैधानिक कर्तव्य है कि हम अपने दैनिक कार्यों में राजभाषा हिंदी का अधिकाधिक प्रयोग करें। इस गृह-पत्रिका का प्रकाशन भी इसी उद्देश्य को ध्यान में रखकर किया जाता रहा है। इसके माध्यम से संस्थान के ज्यादा से ज्यादा सदस्यों को अपने विचारों की अभिव्यक्ति का अवसर तो मिलता ही है और साथ ही संस्थान में राजभाषा हिंदी का प्रचार-प्रसार भी बढ़ रहा है। मैं ऐसा मानता हूँ कि हमारे इस उद्देश्य को प्राप्त करने में हम काफी हद तक सफल भी रहे हैं।

मुझे अत्यंत खुशी हो रही है कि हमारे संस्थान की हिंदी गृह-पत्रिका “प्रतिबिंब” के पंद्रहवें अंक का प्रकाशन हो रहा है। इस पत्रिका के इस अंक में भी इसके पिछले अंकों की तरह ही विभिन्न विविधतापूर्ण विषयों पर रोचक एवं ज्ञानवर्धक जानकारी प्रदान की गई है। मुझे पूर्ण विश्वास है कि इसका यह अंक भी राजभाषा कार्यान्वयन के क्षेत्र में अपनी अहम भूमिका अदा करेगा।

संस्थान की हिंदी गृह-पत्रिका “प्रतिबिंब” के पंद्रहवें अंक के प्रकाशन के लिए संस्थान के वे सभी सदस्य प्रशंसा के पात्र हैं जो इस गृह-पत्रिका के माध्यम से राजभाषा हिंदी को आगे बढ़ाने में अपना योगदान दे रहे हैं। मैं इस अंक के प्रकाशन से जुड़े सभी सदस्यों को हार्दिक शुभकामनाएँ देता हूँ और आशा करता हूँ कि “प्रतिबिंब” का यह अंक भी पिछले अंकों की तरह ही काफी सराहा जाएगा।

शुभकामनाओं सहित।


प्रोफेसर भारत भास्कर
निदेशक

संदेश



मुझे यह जानकर अत्यंत प्रसन्नता हो रही है कि हमारे संस्थान की हिंदी गृह-पत्रिका “प्रतिबिंब” का यह पंद्रहवाँ अंक प्रकाशित हो रहा है। यह पत्रिका राजभाषा हिंदी के प्रति हमारी प्रतिबद्धता और हिंदी के प्रति हमारे लगाव को दर्शाती है। इसका हर अंक संस्थान के सदस्यों की साहित्यक प्रतिभा को निखारने के साथ-साथ राजभाषा कार्यान्वयन को भी आगे बढ़ाने में सहायक सिद्ध हो रहा है।

इस अंक में प्रकाशित रचनाएँ यह दर्शाती हैं कि संस्थान के स्टाफ सदस्यों के साथ-साथ संस्थान में जारी कार्यक्रमों के छात्र एवं पूर्वछात्र भी राजभाषा हिंदी को अपना रहे हैं। जो छात्र देश-विदेशों में अपनी प्रबंधकीय क्षमता का ढंका बजा रहे हैं वे भी राजभाषा हिंदी के प्रति अपने लगाव के कारण उनके विशेष कार्य-क्षेत्रों में हमारी अपनी भाषा हिंदी का परचम फहराने के लिए प्रोत्साहित हैं। राजभाषा हिंदी के प्रति संस्थान के सदस्यों के बढ़ते लगाव में हमारी हिंदी गृह-पत्रिका “प्रतिबिंब” भी अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है।

हमारी राजभाषा हिंदी हमारे देश की पहचान है क्योंकि भाषा से ही देश की पहचान होती है और देश से भाषा की पहचान होती है अर्थात् दोनों ही एक दूसरे के पूरक हैं। राजभाषा हिंदी पूरे देश की संस्कृति को संजोए हुए है और राष्ट्र को संगठित रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है। हिंदी का पूरे विश्व में निरंतर प्रभाव बढ़ रहा है क्योंकि इसे समझना और सीखना अन्य भाषाओं की अपेक्षा ज्यादा आसान है। यह पूरे विश्व में हमारी सांस्कृतिक विरासत को आगे बढ़ाने में सार्थक सिद्ध हो रही है।

मैं, हिंदी गृह-पत्रिका “प्रतिबिंब” के संपादक मंडल एवं संस्थान के उन सभी सदस्यों को हार्दिक बधाई देता हूँ जिनकी स्वरचित ज्ञानवर्धक एवं रोचक रचनाओं के माध्यम से इस अंक का प्रकाशन संभव हो सका है। साथ ही आशा करता हूँ कि “प्रतिबिंब” का यह अंक भी इसके पिछले अंकों की तरह ही सभी की उम्मीदों पर खरा उतरेगा और कामना करता हूँ कि इस पत्रिका का हर अंक सफलता की बुलंदियों को छूता रहे।

शुभकामनाओं सहित।

जगदीश जोशी

कर्नल (डॉ.) जगदीश सी. जोशी

(सेवानिवृत्त)

मुख्य प्रशासनिक अधिकारी



संपादकीय

हमारे संस्थान की हिंदी गृह-पत्रिका “प्रतिबिंब” का यह पद्रहवाँ अंक आपके हाथों में सौंपते हुए मुझे अपार हर्ष की अनुभूति हो रही है। इस पत्रिका की शुरूआत वर्ष 2012 में इसी सोच के साथ की गई थी कि यह पत्रिका हमारे संस्थान के हिंदीप्रेमी सदस्यों को अपनी रचनाएँ प्रकाशित करने के लिए एक मंच प्रदान करेगी और उनकी हिंदी में लेखन की प्रतिभा को उजागर करते हुए रचनात्मकता को प्रोत्साहित करेगी। हमारी आशाओं के अनुरूप हम इस पत्रिका के हर अंक में इस पत्रिका के उद्देश्य को फलीभूत होते हुए देख रहे हैं और साथ ही साथ संस्थान में राजभाषा कार्यान्वयन की दिशा में भी आगे बढ़ रहे हैं।

हमारे देश के प्रथम राष्ट्रपति डॉ. राजेन्द्र प्रसाद जी ने राजभाषा हिंदी के विषय में कहा था कि “राष्ट्रभाषा के प्रचार को मैं राष्ट्रीयता का अंग मानता हूँ।” उनके इन्हीं विचारों से प्रेरित होकर हम राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार को आगे बढ़ाने के लिए पूरी लगन और निष्ठा के साथ प्रयासरत हैं। इस अतुलनीय कार्य में अपना सहयोग प्रदान करने के लिए मैं संस्थान के उन सभी सदस्यों का आभार व्यक्त करना चाहूँगा जो बिना किसी आर्थिक लाभ के राजभाषा हिंदी को आगे बढ़ाने में हमारा सहयोग कर रहे हैं। इस पत्रिका के माध्यम से राजभाषा हिंदी के प्रति सभी सदस्यों की तरफ से किया गया सहयोग उनकी राष्ट्रीय भावना का परिचायक है।

मैं, हिंदी गृह-पत्रिका “प्रतिबिंब” के पंद्रहवें अंक से जुड़े उन सभी सदस्यों के प्रति आभार प्रकट करता हूँ जिन्होंने प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से इसके प्रकाशन में अपना सहयोग किया है और आशा करता हूँ कि भविष्य में भी इसी तरह से सहयोग मिलता रहेगा। मुझे पूर्ण विश्वास है कि “प्रतिबिंब” का यह अंक भी इसके पिछले अंकों की तरह ही सफलता की बुलंदियों को छुएगा तथा राजभाषा कार्यान्वयन की दिशा में मार्ग प्रशस्त करेगा। इस पत्रिका को और अधिक सुसंस्कृत करने की दिशा में आपके सुझाव/ प्रतिक्रियाएँ सादर आमंत्रित हैं। हमें आपके सुझावों एवं प्रतिक्रियाओं की प्रतीक्षा रहेगी।

हार्दिक शुभकामनाओं सहित।

आपका अपना,

डॉ. मुकेश शर्मा
सहायक महाप्रबंधक - हिंदी

अनुक्रमाणका

- राजभाषा कायान्वयन एवं विसंगतियाँ
 - ये दंग
- क्षितिज की ओर उड़ान
 - हिंदी हूँ मैं
- गर्जन ने क्या कहा?
 - कोई भी दुखी न चाहिए
 - हमें पता भी न चला
- इकिठ
 - बूढ़े सवाल
 - सौंदर्य
 - तकनीकी शिक्षा में हिंदी की स्थिति
 - कैपस का कण-कण
- महाभारत: आत्मबोध, साहस और सत्य का महाग्रंथ
 - मन की उलझान
 - अजनबी से अपनापन
- एआई गवर्नेंस : भारत के सुरक्षित, नैतिक और समावेशी भविष्य की दिशा
 - नन्ही पटी
- प्राथमिक शिक्षा में मातृभाषा का महत्व
 - संघर्ष
- ज़िंदगी का सोपान
 - जल, जीवन, आत्मा
- ऑपरेशन सिंदूर
 - बिखरा हुआ संसार और सबको समेटती वो
- किताबें हमारी सबसे अच्छी दोस्त हैं
 - नन्हा पवंश
- अंतरराष्ट्रीय टैटिफ और आर्थिक लेखा जोखा
 - अपना था, मेरा है
- अंतरराष्ट्रीय पुरुष दिवस
 - कौन हो तुम
- मेरी कर्मभूमि: आईआईएम अहमदाबाद
- पुरुषोत्तम
 - प्रश्न कर
- क्या तकनीक हमें अधिक बुद्धिमान बना रही है या आलसी?
 - आप गर हम हो जाते
- दक्षिण कोरिया का प्रवास, यात्रा संस्करण
- संस्थान की राजभाषा गतिविधियाँ
 - रोशनी
- भ्रष्टाचार : एक सामाजिक अभिशाप
 - मन छोटे
- आत्मा का बंधन
 - शतरंज
- डिल्लीक्षिया: बाल्यकाल में भाषाई अधिगम की तांत्रिका-जैविक चुनौतियाँ एवं समावेशी समाधान
 - ज़िन्दगी एक पहेली
 - हम भारत हैं

डॉ. मुकेश शर्मा	05
नरेन्द्र कुमार शुक्ल	08
प्रतिमा भारती.....	09
अनन्त	10
प्रोफेसर विशाल गुप्ता	11
हरीथा वाहेला	12
डॉ. के.ए.एस. मणि	12
नवनाथ पवार	13
श्रीमती कुमुद वर्मा	15
प्रोफेसर प्रथांत दास 'साहिल'	16
आयुष मिश्रा	17
जगदीश रबारी	19
प्रगति काछी	20
प्रतीक पटेल	22
प्रतिमा भारती.....	22
 श्रीमती मीना टेकवानी	 23
राखिता प्रदोष थीया.....	28
उमेश मेहता	29
रवि पाटेख	30
जानवी पटेल	31
श्री दामजीभाई सोलंकी	32
श्रीमती कुमुद वर्मा	32
प्रीति नांगल	33
प्रगति काछी	34
नवनाथ पवार	35
डॉ कृतिका टेकवानी	36
चंद्रशेखर सोलंकी.....	37
अभिषेक वर्मा	38
विनय शर्मा	39
कृपेश पाटेख	40
प्रवीण जी. किश्शियन	41
विनय शर्मा	43
अनन्त	43
बिन्दु डोडिया जोशी	44
प्रोफेसर प्रथांत दास 'साहिल'	45
श्रीमती प्रिया यश प्रसाद	46
	 51
नीलम वाढेर	56
मोनिका उमेश पटेल	57
प्रतीक पटेल	58
श्रीमती सविता शर्मा	59
नीलम वाढेर	60
 मृदुल जोशी	 61
हरीथा प्रेमी	64
चिंतन पटेल	65

राजभाषा कार्यान्वयन एवं विसंगतियाँ

डॉ. मुकेश शर्मा,
सहायक महाप्रबधक - हिंदी



केंद्र सरकार के कार्यालयों / उपक्रमों / बैंकों / बीमा कंपनियों / निगमों / बोर्डों आदि के दैनिक सरकारी कामकाज में हिंदी के उपयोग को सुनिश्चित करना और बढ़ावा देना ही राजभाषा कार्यान्वयन है। भारत सरकार के गृह मंत्रालय के अंतर्गत कार्यरत राजभाषा विभाग, राजभाषा कार्यान्वयन के इस अहम उत्तरदायित्व का निर्वहन विभिन्न राजभाषा अधिनियमों, नियमों एवं समय-समय पर जारी दिशा-निर्देशों के माध्यम से पूरी तन्मयता से निभा रहा है। इसके लिए विभिन्न समितियाँ गठित की गई हैं जो राजभाषा संबंधी सांबंधिक एवं कानूनी उपबंधों के माध्यम से सरकारी कामकाज में राजभाषा हिंदी का अधिकाधिक प्रयोग बढ़ाने का भरपूर प्रयास कर रही हैं। राजभाषा कार्यान्वयन को केंद्र सरकार के कार्यालयों / उपक्रमों / बैंकों / बीमा कंपनियों / निगमों / बोर्डों आदि में सुचारू रूप से क्रियान्वित कराने में संसदीय राजभाषा समिति की प्रमुख भूमिका रही है। संसदीय राजभाषा समिति का गठन राजभाषा अधिनियम, 1963 के अधीन वर्ष 1976 में किया गया था। यह उच्चाधिकार प्राप्त संसदीय समिति है। इसमें 30 संसद सदस्य हैं, 20 लोकसभा से और 10 राज्यसभा से। माननीय गृह मंत्री जी इस समिति के अध्यक्ष हैं। राजभाषा कार्यान्वयन की प्रगति के निरीक्षण कार्य को सुचारू रूप से चलाने के लिए इस समिति को तीन उप-समितियों में विभाजित किया गया है। समिति की ये तीनों उप-समितियाँ अब तक लगभग 20000 कार्यालयों का निरीक्षण कर चुकी हैं। इसी कार्य के आधार पर यह समिति अब तक अपने प्रतिवेदन के बाहर खण्ड राष्ट्रपति जी को प्रस्तुत कर चुकी है। नौ खण्डों में की गई सिफारिशों पर राष्ट्रपति जी के आदेश हो गए हैं। इस समिति का मुख्य उद्देश्य सरकार के कामकाज में राजभाषा हिंदी के प्रयोग की प्रगति की समीक्षा करना है।

केंद्र सरकार के सभी कार्यालयों में राजभाषा

कार्यान्वयन के सुचारू अनुपालन के लिए भारत सरकार के गृह मंत्रालय के अधीन कार्यरत राजभाषा विभाग हर वर्ष वार्षिक कार्यक्रम जारी करता है। इस कार्यक्रम का उद्देश्य राजभाषा अधिनियम, 1963 और राजभाषा नियम, 1976 के अनुपालन को सुनिश्चित करना और संघ की राजभाषा के प्रगामी प्रयोग को बढ़ावा देना है। राजभाषा विभाग द्वारा जारी वार्षिक कार्यक्रम भारत सरकार के सभी मंत्रालयों को भेजा जाता है और सभी मंत्रालय अपने अधीनस्थ कार्यालयों को यह वार्षिक कार्यक्रम भेजते हैं। अपने सभी अधीनस्थ कार्यालयों में राजभाषा कार्यान्वयन के अनुपालन का उत्तरदायित्व संबंधित मंत्रालय का रहता है। संबंधित मंत्रालय भी सभी अधीनस्थ कार्यालयों में समय-समय पर राजभाषाई निरीक्षणों के माध्यम से वार्षिक कार्यक्रम में जारी दिशा-निर्देशों का अनुपालन सुनिश्चित कराते हैं। यह कार्यक्रम विभिन्न लक्ष्यों और अपेक्षाओं को निर्धारित करता है जिन्हें सरकारी कार्यालयों को राजभाषा के उपयोग के संबंध में प्राप्त करना होता है। इसका उद्देश्य यह सुनिश्चित करना है कि सभी केंद्रीय सरकारी कार्यालयों में राजभाषा नीति और संबंधित नियमों का ठीक से पालन हो रहा है। इस कार्यक्रम के माध्यम से पूरे साल की प्रगति की समीक्षा की जाती है और अनुपालन में पाई गई कमियों को दूर करने के लिए सुधारात्मक कार्रवाई की जाती है। राजभाषा के उपयोग को प्रोत्साहित करने के लिए पुरस्कार योजनाओं सहित विभिन्न उपायों का उल्लेख किया जाता है। राजभाषा कार्यान्वयन के संदर्भ में भारत सरकार की हमेशा से यही नीति रही है कि प्रेरणा, प्रोत्साहन एवं पुरस्कार के माध्यम से राजभाषा हिंदी को पूरे देश में लागू किया जाए। भारत सरकार का राजभाषा विभाग, कार्यालय प्रमुखों और राजभाषा कार्यान्वयन समितियों के माध्यम से राजभाषा के कार्यान्वयन की नियमित निगरानी करता है।

प्रत्येक केंद्रीय सरकारी कार्यालय में कार्यालयाध्यक्ष

की अध्यक्षता में एक 'राजभाषा कार्यान्वयन समिति' का गठन किया जाता है। यह समिति तिमाही आधार पर हिंदी के प्रयोग की प्रगति की समीक्षा करती है और हिंदी के प्रयोग में सुधार के लिए यथासंभव सुझाव देती है। इस समिति की हर तीन महीने में बैठक आयोजित की जाती है तथा इसके कार्यवृत्त (minutes) भी जारी किए जाते हैं और अगली बैठक से पहले उन पर की गई कार्रवाई की समीक्षा की जाती है। नगर के स्तर पर भी प्रत्येक नगर में नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति का गठन किया गया है जो नगर के स्तर पर केंद्र सरकार के सभी कार्यालयों में राजभाषा कार्यान्वयन की समीक्षा करती है एवं विविध राजभाषा गतिविधियों का आयोजन करती है। नगर स्तर पर राजभाषा कार्यान्वयन में उत्कृष्ट कार्य करने वाले सरकारी कार्यालयों को इस समिति द्वारा प्रोत्साहन के लिए पुरस्कृत किया जाता है। भारत सरकार के राजभाषा विभाग द्वारा भी उत्कृष्ट राजभाषा कार्यान्वयन के लिए नगर राजभाषा कार्यान्वयन समितियों को भी पुरस्कृत किया जाता है।

सरकारी कामकाज में राजभाषा हिंदी का प्रयोग बढ़ाने के लिए सन् 1963 में राजभाषा अधिनियम बनाया गया और सन् 1976 में राजभाषा नियम 1976 बनाए गए। यह एक महत्वपूर्ण कदम था, इससे सरकारी कामकाज में हिंदी के प्रयोग को आगे बढ़ाने में काफी सहायता मिली है। इसके अलावा भारत सरकार का राजभाषा विभाग समय-समय पर विभिन्न कार्यालय ज्ञापनों के माध्यम से जरूरी राजभाषा नीति संबंधी आदेश जारी करता रहता है। केंद्र सरकार के सभी कार्यालयों को इन आदेशों का अनुपालन अनिवार्य रूप से करना होता है। राजभाषा नियम 1976 के नियम 12 के अनुसार केंद्र सरकार के प्रत्येक प्रशासनिक प्रधान का यह उत्तरदायित्व है कि वे यह सुनिश्चित करें कि अधिनियम और इन नियमों के उपबंधों तथा उपनियमों का समुचित अनुपालन हो रहा है, साथ ही इस प्रयोजन के लिए उपयुक्त एवं प्रभावकारी जाँच के लिए उपाय करें।

विसंगतियाँ : राजभाषा अधिनियम एवं राजभाषा नियमों के अनुपालन की जाँच के लिए कई स्तरों पर निगरानी होने के बावजूद भी सरकारी कार्यालयों में राजभाषा कार्यान्वयन की स्थिति अभी तक संतोषजनक नहीं है। राजभाषा कार्यान्वयन में मुख्य विसंगतियाँ और चुनौतियाँ कई स्तरों पर मौजूद हैं, जो संवैधानिक प्रावधानों और वास्तविक स्थिति के बीच

अंतर पैदा करती हैं। प्रमुख विसंगतियाँ निम्नलिखित हैं:

- भारत सरकार की ठोस नीतियों का अभाव:** सरकारी कार्यालयों में राजभाषा कार्यान्वयन की स्थिति संतोषजनक नहीं होने का मुख्य कारण भारत सरकार की ठोस नीतियों का अभाव है। भारत सरकार पिछले पचहत्तर वर्षों से भी अधिक समय में राजभाषा हिंदी की स्थिति में ज्यादा सुधार नहीं ला पाई है क्योंकि भारत सरकार की हमेशा से यही नीति रही है कि प्रेरणा, प्रोत्साहन एवं पुरस्कार के माध्यम से राजभाषा हिंदी को पूरे देश में लागू किया जाए। आजादी के बाद से हमने यह सब बहुत करके देख लिया है, इस डुल-मुल नीति से राजभाषा हिंदी का ज्यादा भला होने वाला नहीं है। अगर पूरी तरह से राजभाषा कार्यान्वयन को लागू करना है तो ठोस नीति बनानी होगी और पूरे देश में समान रूप से लागू करनी होगी। कुछ राजनेताओं ने तो हिंदी का विरोध करने का जैसे ठेका ही ले रखा है, इनकी राजनीति केवल हिंदी के विरोध के कारण ही चल रही है। भारत सरकार राजभाषा हिंदी को आगे बढ़ाने के लिए जैसे ही कोई आवश्यक कदम उठाती है, वैसे ही भाषा के नाम पर अपनी आजीविका चलाने वाले ये राजनेता भारी विरोध के साथ सड़कों पर उत्तर आते हैं और पूरे देश का माहौल खराब करने से भी नहीं चूकते। ऐसे स्वार्थी राजनेताओं के कारण सरकार को भी झुकाना पड़ता है और वह भी कठोर नीति बनाने से डरती है। भारत सरकार की राजभाषा नीति के कारण हिंदी का 'सरकारीकरण' हो गया है, जिससे राजभाषा हिंदी का यह रूप सभी कर्मचारियों के लिए स्वाभाविक नहीं रह गया है।

- मानसिक अवरोध और आत्मविश्वास की कमी:** सरकारी कर्मचारियों में हिंदी में काम करने की इच्छा होने के बावजूद भी उनमें हिंदी में प्रभावी ढंग से लिखने या आधिकारिक टिप्पणी करने का आत्मविश्वास नहीं होता है, जिससे वे अंग्रेजी का ही उपयोग जारी रखते हैं। सरकारी कार्यालयों में जिन अधिकारियों पर राजभाषा कार्यान्वयन का उत्तरदायित्व होता है वे ही हिंदी में काम करने से बचते हैं या फिर केवल खाना-पूर्ती के लिए अन्य कर्मचारियों पर अपने उत्तरदायित्व को डाल देते हैं। जब भी कोई भाषाई निरीक्षण आता

है तो वे बगलें झाँकने लगते हैं और भविष्य में सुधार करने की बात करते हुए फिर से उसी पुराने ढरे पर आ जाते हैं। ज्यादातर प्रशासनिक प्रमुखों को उनके उत्तरदायित्व की जानकारी ही नहीं है और अगर किसी-किसी को है भी तो वे अपने उत्तरदायित्व का निर्वहन गंभीरता से नहीं करते हैं। राजभाषा विभाग की नीति के अनुसार हर तीन महीने में हिंदी कार्यशालाओं का आयोजन किया जाता है और राजभाषा सम्मेलनों एवं संगोष्ठियों का आयोजन किया जाता है लेकिन प्रशासनिक प्रमुख इन्हें बिल्कुल भी गंभीरता से नहीं लेते हैं। वे अपनी तरफ से किसी अन्य अधिकारी को नामित करके अपनी जिम्मेदारी से पल्ला झाड़ लेते हैं। जब तक प्रशासनिक प्रमुख राजभाषा नियमों को गंभीरता से नहीं लेंगे राजभाषा हिंदी की यही स्थिति रहने वाली है।

3. **अंग्रेजी भाषा का प्रभुत्व:** हमारे देश में सूचना प्रौद्योगिकी और बहुराष्ट्रीय कंपनियों के बढ़ते प्रभाव के कारण अंग्रेजी का महत्व काफी बढ़ गया है, इसके कारण अंग्रेजी भाषा को ही अक्सर व्यावसायिक और तकनीकी शिक्षा का एकमात्र माध्यम माना जाने लगा है। सभी कोर्पोरेट हाउसों तथा उनसे जुड़े कार्यालयों एवं उच्च शैक्षणिक संस्थानों में अंग्रेजी भाषा का इतना अधिक प्रभाव है कि हिंदी बोलने वालों को हीन भावना का सामना करना पड़ता है। ऐसी जगहों पर किसी भी नौकरी के साक्षात्कार के समय केवल अंग्रेजी में ही बात की जाती है जैसे किसी को अंग्रेजी के अलावा कोई अन्य भाषा आती ही नहीं है। इन संस्थानों में अंग्रेजी का प्रभाव यहाँ तक बढ़ गया है कि हिंदी के पदों के लिए भी साक्षात्कार अंग्रेजी में ही लिए जा रहे हैं, अगर प्रार्थी अंग्रेजी ठीक से नहीं बोल पाता है तो उसे हिंदी के पद के योग्य नहीं माना जाता। ऐसे संस्थानों में शिक्षण कार्य भी केवल अंग्रेजी में ही हो रहा है। हालांकि राजभाषा नीति के दिशा-निर्देशों के अनुसार शिक्षण हिंदी में भी होना चाहिए लेकिन इन संस्थानों के शिक्षकों ने अपनी शिक्षा अंग्रेजी माध्यम से की है इसलिए उन्हें अंग्रेजी में पढ़ाने में ही सुविधा रहती है और वे राजभाषा नियमों के अनुपालन से कठराते हैं। ऐसे संस्थानों में केवल खानापूर्ती के लिए ही राजभाषा हिंदी का प्रयोग हो रहा है और किसी तरह

- से आँकड़े पूरे करके वे हिंदी के साथ छल कर रहे हैं।
4. **संसाधनों और प्रशिक्षण की कमी:** राजभाषा कार्यान्वयन के लिए आवश्यक संसाधनों, जैसे पर्याप्त प्रशिक्षित अनुवादक, हिंदी शिक्षण की पुरानी विधियाँ, और पर्याप्त प्रशिक्षण सुविधाओं की कमी है। भारत सरकार के राजभाषा विभाग के अंतर्गत कार्यरत केंद्रीय हिंदी प्रशिक्षण संस्थान, हिंदी प्रशिक्षण के क्षेत्र में अहम भूमिका निभा रहा है। हिंदी शिक्षण योजना के दिल्ली, मुंबई, कोलकाता, चेन्नै एवं गुवाहाटी में पाँच क्षेत्रीय कार्यालय हैं। प्रशिक्षण कार्यक्रम पूर्णकालिक केंद्रों के साथ-साथ अंशकालिक केंद्रों पर भी संचालित किए जा रहे हैं। हिंदी शिक्षण योजना के अंतर्गत हिंदी भाषा, हिंदी टंकण एवं हिंदी आशुलिपि का प्रशिक्षण दिया जा रहा है लेकिन ज्यादातर सरकारी कार्यालयों में प्रशिक्षण के नाम पर केवल खानापूर्ती ही की जा रही है क्योंकि प्रशिक्षण के लिए कर्मचारियों को नामित करने से ऑफिस का काम अवरोधित होता है। कर्मचारी भी केवल मानदेय लाभों एवं पुरस्कार प्राप्त करने के लिए ही प्रशिक्षण ले रहे हैं और प्रशिक्षण प्राप्त करने के बाद भी अपने पुराने तरीके से अंग्रेजी में ही काम करते हैं। सरकारी पत्राचार में केवल अनुवाद करवा कर लगा देने में ही अपने लक्ष्यों की पूर्ती समझ रहे हैं। जहाँ पर प्रशासनिक प्रमुख स्वयं राजभाषा कार्यान्वयन को अपनी जिम्मेदारी समझ कर अन्य कर्मचारियों को प्रोत्साहित कर रहे हैं वहाँ राजभाषा कार्यान्वयन की स्थिति काफी बेहतर है।
5. **जवाबदेही का अभाव:** जब तक हर सरकारी कर्मचारी राजभाषा हिंदी में काम करने की अपनी जवाबदेही को गंभीरता से नहीं लेगा, तब तक राजभाषा कार्यान्वयन का पूर्णतः अनुपालन असंभव-सा प्रतीत होता है। यद्यपि राजभाषा अधिनियम और नियम कार्यालय प्रमुखों को कार्यान्वयन सुनिश्चित करने के लिए जिम्मेदार बनाते हैं लेकिन प्रभावी जाँच बिंदुओं और निगरानी तंत्र की कमी के कारण अक्सर सभी प्रावधानों का समुचित पालन नहीं हो रहा है। सरकारी कर्मचारियों को केवल हिंदी में ही काम करने की जवाबदेही सुनिश्चित करने के लिए या तो उन्हें इस तरह से पुरस्कृत किया जाए की अन्य सरकारी कर्मचारी भी पुरस्कार राशि को देखकर केवल हिंदी

में ही काम करने के लिए मजबूर हो जाएँ या फिर ऐसी नीति बनाई जाए की हिंदी में काम करने के अलावा उनके पास दूसरा कोई विकल्प ही नहीं हो। राजभाषा कार्यान्वयन के प्रति जवाबदेही में विद्यमान लचीलेपन के कारण ही आज हिंदी पूरी तरह से आगे नहीं बढ़ पा रही है।

6. **भाषाई विविधता और मानकीकरण:** भारत की विशाल भाषाई विविधता के कारण, प्रत्येक भाषा का एक मानकीकृत संस्करण तैयार करना चुनौतीपूर्ण है, जिससे एक समान राजभाषा नीति लागू करने में कठिनाई हो रही है। हमारे देश के ज्यादातर राज्यों की अपनी अलग भाषा है इसलिए उस राज्य की भाषा का भी प्रभाव राजभाषा हिंदी में स्वयमेव आ जाता है। जैसे गुजरात राज्य के बारे में बात करें तो गुजरात सरकार में गुजराती भाषा का ही प्रयोग होता है और गुजरात के अंदर कार्यरत केंद्र सरकार के कार्यालयों में भी गुजराती भाषी कर्मचारियों की संख्या अन्य भाषा-भाषियों की तुलना में ज्यादा है। इसलिए उनकी हिंदी में भी कुछ ऐसे शब्दों का प्रयोग आमतौर पर मिल जाता है जो गुजराती के हैं और हिंदी में हैं ही नहीं या फिर हिंदी में उनका कुछ और ही अर्थ होता है। इसका एक शब्द बहुत अच्छा उदाहरण है “अक्समात”। गुजराती में अक्समात शब्द का प्रयोग Accident के लिए किया जाता है जबकि हिंदी में अक्समात शब्द का प्रयोग suddenly के लिए किया जाता है। इसलिए कुछ गुजराती भाषी हिंदी में भी अक्समात शब्द का प्रयोग Accident के लिए करते हैं तो उस वाक्य को पढ़कर हिंदी भाषी भ्रमित हो जाता है और इस तरह से अर्थ का अनर्थ हो जाता है। इस प्रकार की परेशानी हर भाषाभाषी को होती है जो केवल अभ्यास से ही दूर हो सकती है। इस तरह की परेशानियों को हिंदी कार्यशालाओं में विस्तार से समझाया जाता है लेकिन हिंदी कार्यशालाओं में ऐसी त्रुटि करने वाले कर्मचारियों की उपस्थिति नगण्य रहती है।

इन विसंगतियों को दूर करने के लिए हमें मानसिकता में बदलाव, प्रभावी प्रशिक्षण, संसाधनों का उचित आवंटन और सरल, स्वाभाविक हिंदी के प्रयोग पर बल देने की अन्यतंत्र आवश्यकता है। निष्कर्ष रूप में हमें यह कहने में संकोच नहीं होना चाहिए कि आज के इस वैश्वीकरण के युग में जब हम

राजभाषा हिंदी की वैश्विक भाषा के रूप में वकालत कर रहे हैं, तब हम सभी भारतीयों का यह दायित्व बन जाता है कि हम सब मिलकर राजभाषा हिंदी के रास्ते में आने वाली समस्त विसंगतियों को दूर करके राजभाषा हिंदी को वैश्विक भाषा बनाने में अपना अतुलनीय सहयोग प्रदान करें।

ये रंग

- नरेन्द्र कुमार शुक्ल,
सहायक महाप्रबंधक-डिजिटल रूपांतरण केंद्र



आँखों से सुनने वाली आवृत्ति हैं ये रंग,
कानों से दिखने वाली प्रकृति हैं ये रंग।

प्रकृति के हर रंग का श्रृंगार करते ये रंग,
जीवन की हर ऋतु में इठलाते रहते ये रंग।

मोहन की मुरली पे, राधा को भाते ये रंग,
वनवासी सिया की, रंगोली सजवाते ये रंग।

कहीं मांग भरते तो कहीं उजाड़ देते ये रंग,
रंग में भंग होता तो कहीं भंग में रंगते ये रंग।

कभी माँ के दुलार में छिपे पुचकारते ये रंग,
कभी पत्नी के त्याग की परिणीति बनते ये रंग।

भगिनी के रक्षा सूत्र संग मस्तक सजाते ये रंग,
संतान के वात्सल्य में घुल खिलखिलाते ये रंग।

कभी कबीरा की झीनी चदरिया, ‘रंगरेजवाते’ ये रंग,
कहीं मतवाले भगत आजाद का, चौला रंगवाते ये रंग।

कण-कण व्यापी अम्बर के विविध आभासी वर्ण ये रंग,
पूजते नारी शक्ति को जहाँ, बस वहीं रहते सब ये रंग।

वर्ण भेद रंग भेद से कहीं उपद्रव मचवाते ये रंग,
कंठ शिव के रमकर हमेशा संसार बचवाते ये रंग।

अनवरत इस संसार में विविध वर्ण के ये रंग,
एक रंगरेज के रंग में रमने को उकसाते ये रंग।

आभासी स्वप्न का यथार्थ से बोध कराते ये रंग,
सप्तवर्णी धरा पर हमको हमीं से मिलाते ये रंग।

क्षितिज की ओर उड़ान

प्रतिमा भारती
पूर्वछात्रा – पीजीपी-एफएबीएम
(2014-16)



बिहार के एक छोटे से गाँव 'राजौली' की कच्ची गलियों में डॉली का बचपन पला-बढ़ा। जहाँ शिक्षा को अक्सर लड़कियों के लिए "अनावश्यक खर्च" माना जाता था, वहीं डॉली के पिता, एक छोटे से व्यावसायी का नजरिया अलग था। उनकी नजर में, बेटी का भविष्य केवल शादी कर परिवार संभालने तक सीमित नहीं था, बल्कि वह ज्ञान के खुले आकाश में उड़ान भरने के लिए बनी थी, ऐसा उनका मानना था।

डॉली के जन्म पर उनके पिता की खुशी का ठिकाना नहीं था। उस दिन उन्होंने पूरे गाँव में जश्न मनाया, पूरे घर को बिजली से जगमगा दिया, हलवाई बुलाकर करीब 200 लोगों को खाना खिलाया, गाँव में पहली बार दो रंगीन टी.वी. (Color TV), दो वीसीआर (VCR) और दो जनरेटरों की व्यवस्था की गई, ताकि हर कोई इस खुशी में शारीक हो सके। यह उस समय की बात है जब गाँव में बिजली भी नहीं थी और लोग अपने घरों में लालटेन और ढिबरी जला के रात बिताते थे।

यह साधारण आयोजन नहीं था; यह संदेश था कि उनके लिए बेटी का जन्म किसी बेटे के जन्म से कम नहीं, बल्कि एक वरदान है।

डॉली भी बचपन से ही किताबों की दीवानी थी। गाँव के स्कूल में उसकी प्रतिभा जल्द ही शिक्षकों की नज़रों में आ गई। घर में बिजली अक्सर नहीं रहती थी, और लालटेन की टिमटिमाती रोशनी में पढ़ाई करना उसका रोज़ का संघर्ष था। पर यह संघर्ष ही उसके भीतर एक अटूट संकल्प बन गया था। जब वह कक्षा पाँच में थी, तो उसके पिता ने उसे जवाहर नवोदय विद्यालय प्रवेश परीक्षा के बारे में बताया—एक सरकारी आवासीय विद्यालय, जहाँ गुणवत्तापूर्ण शिक्षा मुफ्त

मिलती थी। डॉली के पिता ने अपनी छोटी-सी बचत से उसे एक पुरानी गाइड-बुक दिला दी। दिन-रात की मेहनत और लगन से, डॉली ने न केवल परीक्षा पास की, बल्कि जिले में सर्वोच्च स्थान प्राप्त किया।

जब डॉली ने नवोदय विद्यालय की चौखट पर अपना पहला कदम रखा, तो उसका सामना एक नई दुनिया से हुआ। गाँव की ओर अपने माता-पिता की दुनिया से निकलकर, वह अचानक ऐसे माहौल में आ गई जहाँ अंग्रेजी, कंप्यूटर और विज्ञान की नई अवधारणाएँ थीं। पहले कुछ महीने चुनौतियों से भरे थे। दूसरे बच्चों के साथ तालमेल बिठाना, मेस का खाना, घर से दूर रहने का अकेलापन और सबसे बड़ी बात सारा काम खुद करना, यह सब उसके लिए भारी था। क्योंकि आजतक वो मम्मी की लाडली जो थी। उसे पढ़ाई, खेलकूद, पैंटिंग, गाना-बजाना करने के अलावा और कुछ आता जो नहीं था।

पर डॉली ने हार नहीं मानी। उसने अपने आप को मजबूत बनाया। हॉस्टल का अनुशासन, शिक्षकों का मार्गदर्शन, तरह-तरह की गतिविधियाँ और लाइब्रेरी की किताबें उसके नए साथी बन गए। बोर्डिंग स्कूल ने उसे सिर्फ अकादमिक ज्ञान ही नहीं दिया, बल्कि उसे आत्मनिर्भरता (Self-reliance), समय प्रबंधन (Time Management) और विभिन्न संस्कृतियों के साथ मिलकर रहने का कौशल भी सिखाया। यहाँ उसने सीखा कि संसाधन कम होना बाधा नहीं, बल्कि प्रेरणा का स्रोत हो सकता है। क्योंकि डॉली के पिता बिजनेसमैन थे, इसलिए उसका भी झुकाव बिजनेस कि तरफ था। दशार्ही, बारहवीं और स्नातक में अव्वल आने के बाद उसने एमबीए (MBA) करने का सोचा। अब उसकी मंजिल थी भारत का शीर्ष शिक्षण संस्थान—अहमदाबाद का एक प्रतिष्ठित एमबीए कॉलेज आईआईएम अहमदाबाद,

जो देश के सबसे प्रतिष्ठित संस्थानों में से एक था। नवोदय में मिली मज़बूत नींव ने उसके हौसले को आसमान छूने के लिए तैयार कर दिया था।

स्नातक की पढ़ाई के साथ-साथ, डॉली ने देश की सबसे कठिन प्रवेश परीक्षाओं में से एक, कैट (CAT) की तैयारी शुरू की। उसके माता-पिता ने इस दौरान अपनी सारी दुआएँ और विश्वास उस पर न्यौछावर कर दिए और नागपुर के कोचिंग क्लास में दाखिला करवा दिया। और फिर वह दिन आया। कड़ी मेहनत रंग लाई, और डॉली को आईआईएम अहमदाबाद में प्रवेश मिला। यह सिर्फ डॉली की ही नहीं, उस छोटे से गाँव के पूरे इतिहास की सबसे बड़ी उपलब्धि थी। वह उस छोटे से गाँव की इकलौती धरोहर है जिसे भारत के सर्वश्रेष्ठ प्रबंधन संस्थान में पढ़ने का मौका मिला। उसके माता-पिता और बहन-भाई की खुशी की सीमा नहीं थी।

आईआईएम अहमदाबाद में उसका सामना एक नए प्रकार के दबाव से हुआ—दुनिया के सर्वश्रेष्ठ दिमागों के साथ प्रतिस्पर्धा। यहाँ का शैक्षणिक माहौल बेहद प्रतिस्पर्धी था। डॉली को अपनी ग्रामीण पृष्ठभूमि के कारण कई बार आत्मविश्वास की कमी महसूस हुई, उसने पहली बार लैपटॉप पर काम करना शुरू किया था जो कि उसके लिए सबसे बड़ी चुनौती था। उसे बाहरी दुनिया का कुछ पता ही नहीं था, क्योंकि उसने केवल हॉस्टल की दुनिया देखी थी, जिसमें कॉफी-कलम के अलावा उसे कुछ ज्ञान नहीं था। परंतु नवोदय के कठोर प्रशिक्षण ने उसे जुझारू बना दिया था। उसने देर रात कई दिनों तक कठिन परिश्रम किया, जटिल विषयों पर बहुत मेहनत की और जल्द ही वह कॉलेज में अपना एक स्थान बनाने में सफल रही। कॉलेज के आखिरी साल में एक आकर्षक नौकरी का प्रस्ताव (Job Offer) मिला, जो कि उसके लिए और उसके परिवार के लिए काफी बड़ी खुशी थी। डॉली आज गुरुग्राम (Gurugram) में किसी बड़ी मल्टीनैशनल कंपनी में एक सीनियर प्रोफेशनल के पद पर कार्यरत है।

एक छोटे-से गाँव की वह लड़की, आज आधुनिक तकनीक के सबसे उन्नत क्षेत्रों में काम कर रही है। उसने गाँव में अपने माता-पिता के लिए हर सुविधा का ध्यान रखा। उसने खुद से प्रॅमिस किया कि चाहे कुछ भी हो जाए वो अपने माता-पिता का साथ नहीं छोड़ेगी, दूर रहकर भी हमेशा उनके साथ रहेगी। उसके माता-पिता ने काफी परिश्रम एवं त्याग किया है उसे इस लायक बनाने में; अपनी सारी जमा

पूँजी लगा दी अपनी बेटी को बेटा बनाने में।

"सैटल्ड" (Settled) होने का अर्थ डॉली के लिए केवल एक अच्छी नौकरी और शहर में एक आरामदायक जीवन नहीं है। उसके लिए यह है—अपनी जड़ों को याद रखना और अपने अनुभवों से दूसरों को प्रेरित करना। आज भी, वह आए दिन अपने पुराने स्कूलस, कॉलेज से खुद को जुड़ा मानती है। वह कहती है, "शिक्षा सिर्फ दरवाजे नहीं खोलती, वह पूरी इमारत को बदल देती है। गाँव की मिट्टी ने मुझे विनम्रता दी, नवोदय ने मुझे पंख दिए, और आईआईएम अहमदाबाद ने मुझे उड़ान भरना सिखाया।"

डॉली की कहानी हमें सिखाती है कि प्रतिभा किसी गाँव या शहर की मोहताज नहीं होती। एक साधारण से गाँव में रहने वाले छोटे से बिजनेसमैन की बेटी, जिसने लालटेन की रोशनी में अपने सपने बुने, उसने सिद्ध कर दिया कि अगर संकल्प मज़बूत हो, तो हर बाधा पार की जा सकती है। उसका जीवन आज लाखों ग्रामीण बच्चों के लिए एक प्रेरणास्रोत है, जो कठिन परिस्थितियों में भी बड़े सपने देखने का साहस रखते हैं।

हिंदी हूँ मैं

अनन्त,
पीएच.डी. छात्र



मिट्टी भी हूँ मिट्टी की खुशबू भी हूँ मैं हिंदी हूँ मैं,
बच्चों के सर पर माँ के आँचल-सी हूँ मैं, हिंदी हूँ मैं।

जिस देश में मीरा हुई, तुलसी हुए, नानक हुए,
उस देश में सौभाग्यवश जन्मी हूँ मैं, हिंदी हूँ मैं।

पर्वत, नदी, जंगल, मरुस्थल से बना जो देह है,
उस देह के भीतर धड़कता जी हूँ मैं, हिंदी हूँ मैं।

श्रृंगार रस में प्रेमियों के बीच की गुफ्तार हूँ,
और वीर रस में क्रांति की जननी हूँ मैं, हिंदी हूँ मैं।

भाषा तलक सीमित नहीं, संस्कृति हूँ मैं, तहज़ीब हूँ,
इसकी या उसकी ही नहीं, सबकी हूँ मैं, हिंदी हूँ मैं।

गर्जन ने क्या कहा?

प्रोफेसर विशाल गुप्ता



बृहदारण्यक उपनिषद् में एक छोटी-सी कहानी आती है जो हमें उत्तम जीवन के मूल्यों की शिक्षा देती है। कहानी कुछ इस प्रकार है—

एक बार देव, मानव व दैत्य गुरु प्रजापति के आश्रम में रहकर साथ ज्ञान व संस्कारों की शिक्षा ले रहे थे। सालों की मेहनत व परिश्रम के बाद उनकी पढ़ाई पूर्ण हुई। आश्रम से जाने के पहले उन्होंने एक अंतिम बार गुरु से मिलने का निवेदन किया। एक-एक करके तीनों गुरु प्रजापति से मिलने पहुँचे।

सबसे पहले देव पहुँचे। उन्होंने गुरु से कहा—

“हमें अपनी अंतिम शिक्षा प्रदान करें। आज हम यहाँ से जा रहे हैं।”

गुरु प्रजापति ने कहा— ‘द’।

फिर उन्होंने पूछा— “क्या तुम समझे?”

देवों ने कहा— “हाँ। हम समझ गए। आपने कहा - ‘दम्यत’ (आत्म-संयम) — हमें अपने पर नियंत्रण रखना होगा।”

गुरु प्रजापति बोले—

“बहुत अच्छा! याद रहे कि जीवन में तुम्हें कई यश, सुख व वैभव मिलेंगे। उन सफलताओं में बहुत मुग्ध न हो जाना व हमेशा अपने पर संयम रखना।”

यह सुनकर वे देव गुरु के चरण स्पर्श कर आश्रम से चले गए।

देवों के बाद मानव गुरु प्रजापति के पास पहुँचे। मानव गुरु से बोले—

“आज हमारा आपके आश्रम में अंतिम दिन है। कृपा कर हमें अपना अंतिम उपदेश दें।”

गुरु ने कहा— ‘द’ और पूछा— “क्या तुम समझे?”

मानव ने कहा— “हाँ। हम समझ गए। आपने कहा— ‘दत्ता’ — देना सीखना।”

गुरु ने कहा — “उत्तम! हमेशा याद रखना कि जीवन में कई जन तुमसे दीन हालत में होंगे। दीन-दुःखियों की सहायता करना और जीवन में ‘देना’ याद रखना। दान देना और दूसरों के लिए उपयोगी बनना।”

इन शब्दों को सुनकर मानव ने गुरु के आश्रम से विदाली।

मानव के बाद दैत्य गुरु प्रजापति के पास पहुँचे और बोले—

“आज हमारा भी आपके आश्रम में अंतिम दिन है। कृपया हमें अपनी आखिरी शिक्षा प्रदान करें।”

गुरु ने कहा— ‘द’ और पूछा— “क्या तुम समझे?”

दैत्य बोले— “हाँ। हम समझ गए। आपने कहा है— ‘दयाध्वम्’ — आप हमें दूसरों के प्रति दया व सहानुभूति दिखाने की सीख देना चाहते हैं।”

गुरु ने आशीर्वाद दिया और बोले— “दूसरों पर दया करना। उन्हें कभी परेशान नहीं करना और जितना हो सके उनकी सहायता करना। अपने जीवन को दूसरों के लिए समर्पित करते हुए दया व करुणा दिखाना।”

यह सुनकर दैत्य भी गुरु के आश्रम से चले गए।

उसी समय आकाश में गर्जना हुई— ‘द-द-द’- ‘दम्यत — दत्ता — दयाध्वम्’।

बृहदारण्यक उपनिषद् भारतीय संस्कृति का एक महत्वपूर्ण ग्रंथ है। इस कहानी के माध्यम से उपनिषद् हमें शिक्षा देती है कि— सांसारिक सुख-सुविधाओं से परिपूर्ण

मनुष्यों को भोग-विलास से दूर रहना चाहिए, सुख-साधन जोड़ने के लिए संघर्षरत मनुष्यों को लोभ, लालच व धन-संचय से दूर रहना चाहिए, और अत्याचारी दानवों जैसी प्रवृत्ति वाले मनुष्यों को हिंसा और क्रूरता से दूर रहने की कोशिश करनी चाहिए।

आइए, हम इस कहानी से प्रेरणा लें और अपने जीवन को उपनिषद् के इन सिद्धांतों—**दम्यता, दान व दयाध्वम्**—के साथ जीते हुए उत्तम, सुखदायी व दूसरों के लिए उपयोगी बनायें।

कोई भी दुखी न चाहिए

हरीश वाघेला
कार्यकारी



मेहनत का तूने जितना दिया काफी है ज्यादा न चाहिए। अरज तुझसे इतनी कि जहाँ में कोई भी दुःखी न चाहिए॥

कोई नई मस्जिद या कोई नया मंदिर भले ही न बने। पर एक भी गाँव की स्कूल कभी बंद होनी न चाहिए॥

आज अमीरी शहर में धूमने निकली है और फरमान है। कि गरीबी छुपा दो, मुझे कहाँ भी दिखनी न चाहिए॥

शहीदों ने अपने लहू से सींचा है इस मातृभूमि को। वाहे जो भी हो, शहादत शहीदों की भूलनी न चाहिए॥

सुना है प्यार का अलग अंदाज है इस जहाँ में। पर आशिकी एक हद से आगे बढ़नी न चाहिए॥

भले ही सूरज अपना मध्य में चमकता क्यों न हो? दिल में मानवता की ज्योत कभी बुझनी न चाहिए॥

दुःखों का समंदर हो और राह भले ही कठिन हो। फिर भी इंसान को कभी हिम्मत हारनी न चाहिए॥

मोहम्मद, बुद्ध, ईसा और राम सभी ने सत्य सिखाया। असत्य के सामने हमारी हस्ती झुकनी न चाहिए॥

हमें पता भी न चला

- डॉ. के.ए.एस. मणि,
पिताजी, प्रोफेसर अक्षया विजयालक्ष्मी



देखते-देखते उमर बढ़ता जा रहा है -हमें पता भी न चला, चंद यारों ने जो साथ दिया दूरियों का सिलसिला

- हमें पता भी न चला।

देखते-देखते हम जन्मत के दरवाजे पे रुके हुए हैं, किस-किस को हम शुक्रिया अदा करें, उनका नाम

- हमें पता भी न चला।

छोटी-सी कश्ती हमारी नहर से जो चल पड़ी, आज समुंदर में आ मिली, रुख और रफ़तार इसका किसने संभाला

- हमें पता भी न चला।

दौलत और शोहरत का ख़बाब अब नहीं रहा, इंसानियत कब महंगी हुई

- हमें पता भी न चला।

झूठ को अब सच बनाने की भी ज़रूरत नहीं रही, सच की अहमियत कब बदली

- हमें पता भी न चला।

दिल आबाद है लम्हा-लम्हा नई उमंग से जीने को, कमबँधत इस दिल को जुनून की समझ कब आई

- हमें पता भी न चला।

अब सब कुछ रोशन-रोशन है, तारे अँधेरे में कब दिखने लगे

- हमें पता भी न चला।

जिंदगी रास्ता चलती जा रही है एक शून्य की ओर, हिसाब लगाने की आदत कब छूटी

- हमें पता भी न चला।

हमसे जो दूर थे अब सब क़रीब नज़र आने लगे, खुद को पाने का ये एहसास कब आया

- हमें पता भी न चला।

सिवाय हमारे, अगल-बगल में सब कोई दौड़ रहे हैं, देखते ही देखते इतना चैन कैसे आया

- हमें पता भी न चला।

इतिराज



नवनाथ पवार,
सहायक पुस्तकालयाध्यक्ष

घड़ी में सुबह के 5:30 बजे थे। सुमेध ने उदास चेहरे से कंबल धकेलकर दूर कर दिया। जैसे ही वह बिस्तर से उतरा और अपने पैर गलीचे पर रखे, घर की बत्तियाँ जल उठीं, कॉफी मशीन चालू हो गई। घर में लगी दीवार जितनी बड़ी स्क्रीन पर ट्रैफिक संबंधी अपडेट और पूरे दिन का कार्यक्रम दिखाई दिया। उसने हाथ से स्क्रॉल करते हुए जरुरी बातें नोट कीं। तभी उसका निजी रोबोट उसके पास आकर खड़ा हो गया। उसने टूथब्रश और नैपकिन सुमेध को दे दिया। जब तक सुमेध नहाकर आया, तब तक नाश्ता मेज पर तैयार था। बिस्तर ठीक कर दिया गया था।

नाश्ता करते हुए उसे प्रोफेसर मार्टिन की याद आई। आज किसी भी हालत में उनसे मिलना होगा और उन्हें मनाना होगा। खाना खाते समय, उसने अपने मोबाइल फोन पर कल के शारीरिक मीट्रिक्स देखे। जाना कि इस महीने के लिए कितना ऑक्सीजन कोटा बचा है। ऑक्सीजन की बची हुई मात्रा इस महीने के शेष दस दिनों के लिए पर्याप्त थी। अगली माह ही एक तारीख को सरकार द्वारा उनके खाते में पुनः निश्चित मात्रा में ऑक्सीजन जमा कर दी जाएगी। हर एक की नाक में लगी मशीनों से ऑक्सीजन का नाप लिया जाता था और सरकारी रिकॉर्ड में उसकी सारी जानकारी दर्ज की जाती थी।

वर्ष 2500 की शुरूआत में सरकार ने ऑक्सीजन वितरण प्रणाली को अपने नियंत्रण में ले लिया था, और दशकों से चल रहे मानवाधिकार विरोध प्रदर्शनों पर काबू कर लिया था। ऑक्सीजन के दुर्लभतम कमोडिटी बन जाने के कारण भ्रष्टाचार पर अंकुश लगाने के लिए नए कानून लागू किए गए। जिस तरह कुछ सदियों पहले राशन कार्ड पर अनाज मिलता था, वही अब ऑक्सीजन के साथ भी हो रहा था। वनों की अनियंत्रित कटाई और एक शताब्दी से चले

आ रहे सूखे के कारण पेड़ पौधे विलुप्त होने की कगार पर थे। शायद ही कभी किसी पंछी को आकाश में उड़ते देखा जाता था। और कभी कोई पंछी आकाश में दिखाई देता, बच्चे बूढ़े बड़े ही अचरज से उसे देखते। हवा में जहरीली गैसों के उच्च स्तर के कारण, हर कार्यालय और घर में एयर प्यूरीफायर लगाए गए थे। कड़े विरोध के बावजूद सरकार ने नागरिकों के लिए आयु साठ वर्ष निर्धारित कर दी थी।

नागरिक को साठ की आयु तक पहुँचने से छह महीने पहले सरकारी आदेश प्राप्त होता था। आदेश में कहा जाता कि एक निश्चित तिथि के बाद ऑक्सीजन उपलब्ध नहीं होगी और देहान करने कहाँ आ रहे हो। भागने का तो सवाल ही नहीं था। चाहे आप दुनिया में कहाँ भी जाएं, आपका जीपीएस स्थान सरकार के केंद्रीय डेटाबेस में दर्ज होता था। आप यह जान सकते हैं कि आप जीवन भर कहाँ रहे हैं, तथा किसी भी समय कहाँ रहे हैं। दर्ज किए गए डीएनए सीक्वेंस के कारण सरकारी आदेश पर छेड़छाड़ करना संभव नहीं था। जीवन के अंतिम दिन नागरिक के परिवार के सदस्य उसे विदाई देने आते थे। देहान की प्रक्रिया एक विशाल सरकारी इमारत में होती थी। जो दस फुटबॉल स्टेडियमों को भर सकती थी। सुमेध इसी इमारत में काम करता था। वह दिवंगत नागरिकों की स्मृतियों के संरक्षण विभाग में वरिष्ठ प्रबंधक के पद पर कार्यरत था।

सरकार को डर था कि मृत्यु से जुड़ी अनिश्चितता को खत्म करने के कानून बनाने से हर जगह असंतोष पैदा होगा और कानून-व्यवस्था बाधित होगी। मनुष्य इस धारणा के साथ हमेशा जीता आ रहा था कि वह बहुत लंबी आयु तक जीये और कभी न मरो। किसी प्रियजन का निधन कभी-कभी मृत्यु के शाश्वत सत्य को याद दिलाता। विश्वविद्यालयों में इस बात पर शोध किया जा रहा था कि जब किसी व्यक्ति

की मृत्यु की तिथि तय हो जाती है या की जाती है तो उसकी प्रतिक्रिया कैसी होगी। कई शोधपत्र प्रकाशित हुए। कई शिखर सम्मेलन आयोजित किए गए। विज्ञानियों का दावा था कि यदि प्रौद्योगिकियों से मानव स्मृतियों को संरक्षित कर सके, तो सरकार के इस बड़े निर्णय को कुछ समर्थन मिलेगा। फिर इसके लिए एक अलग विभाग शुरू किया गया। अत्याधुनिक कंप्यूटर प्रणाली के साथ, किसी व्यक्ति की आभासी छवि हमेशा के लिए उसके रिश्तेदारों के पास रहेगी, पूर्व-रिकॉर्ड किए गए हाव-भाव, वाक्य और विभिन्न परिधानों से छवि को जीवंत बना दिया गया। छवि पारदर्शी थी, लेकिन कंप्यूटर विशेषज्ञ इस बात पर संशोधन कर रहे थे कि छवि को और अधिक प्रभावी कैसे बनाया जाए।

सुमेध इसी कारण से प्रोफेसर मार्टिन से मिलना चाहता था। उन्हें इस प्रोजेक्ट के लिए चुना गया था। प्रोफेसर मार्टिन विश्वविद्यालय में इतिहास पढ़ाते थे। उनकी पीएच.डी. का विषय था '22वीं सदी के मूल्य'। उन्होंने एक विद्यार्थी-प्रेमी शिक्षक से लेकर एक जिम्मेदार पिता और फिर एक प्यारे दादा बनने तक का सफर तय किया था। कुछ ही महीनों में उनका साठवाँ जन्मदिन आ रहा था। स्मृति संरक्षण प्रोजेक्ट में, उनकी तस्वीरें, साक्षात्कार, चलने फिरने के तरीके, हाव-भाव आदि को कंप्यूटर द्वारा प्रोसेस करके उनकी एक आभासी छवि बनाई गई। एक क्षण के लिए, जब उन्होंने उसे देखा तो वे भी बहुत प्रभावित हुए। जब वे और छवि एक साथ खड़े हुए तो उनके लिए अपने आँसू रोकना मुश्किल हो गया। उनके परिवारजन को इस बारे में कोई जानकारी नहीं थी। जब उनसे यह पूछा गया कि इस प्रोटोटाइप को उनके परिवार के सदस्यों को दिखाया जाए और इसमें बदलाव के लिए सुझाव माँगे जाए तो उन्होंने साफ मना कर दिया।

वे अब अपनी अनुपस्थिति महसूस नहीं कराना चाहते थे, क्योंकि उनके जाने में अब कुछ ही महीने बचे थे। वे इस बात को लेकर चिंतित थे कि उनकी पत्नी, बच्चे और पोते-पोतियाँ कैसी प्रतिक्रिया देंगे। सुमेध ने उन्हें समझाने की बहुत कोशिश की। प्रोफेसर मार्टिन के जाने के बाद उनकी छवि में कोई बदलाव नहीं किया जा सकता। इसके विपरीत, सुमेध ने सहानुभूतिपूर्वक कहा कि उनके परिवारजनों की भावनाओं को जानने के बाद, इस छवि और डेटाबेस में जरूरी परिवर्तन किए जा सकते हैं। अंततः प्रोफेसर मार्टिन तैयार हो गये, लेकिन उनकी एक शर्त थी, ये सभी परीक्षण उनके घर पर ही किए जाएं, किसी प्रयोगशाला में नहीं, और

उनकी उपस्थिति के बिना भी। यह शर्त मान ली गई। इन सभी परीक्षणों को नियमों के अनुसार फिल्माया जाना था।

परीक्षण के दिन, सरकारी अधिकारी, तकनीशियन, प्रोफेसर मार्टिन के घर आये। पूर्व सूचना देने के कारण पूरा परिवार घर पर ही था। उन्होंने साथ में लाये काले ब्लॉक जैसे उपकरण को घरेलू नेटवर्क से जोड़ा और उसे चालू कर दिया।

प्रोफेसर मार्टिन की आभासी छवि घर में घूमने लगी। वे अपने दैनिक कार्यक्रम के अनुसार, मुस्कुराते हुए और चाय पीते हुए, खाने की मेज पर बैठे दिखाई दे रहे थे। सभी को सुप्रभात कहने तथा दोपहर में सोफे पर बैठकर किताब पढ़ने के उनके रिकॉर्ड किए गए दृश्य दिखाए जाने लगे। पूरा परिवार, जो शुरू में भावुक था, धीरे-धीरे इस सदमे से उबरने की कोशिश करने लगा। छोटी इकिरु अपने दादा की छवि देखकर खुश हुई। उसे जन्म या मृत्यु का कोई बोध नहीं था। उसके दादा ने उसका यह नाम रखा था। यह 20वीं सदी का जापानी शब्द था जिसका अर्थ है 'जीवित रहना'।

प्रोफेसर मार्टिन प्रयोगशाला से यह सब देख रहे थे। शाम को, वे इकिरु को हर रोज सोने से पहले कहानियाँ सुनाते थे। उन्होंने उसके लिए एक-दो साल में इतनी काफी कहानियाँ रिकॉर्ड कर ली थीं। इसके लिए उन्होंने पुस्तकालय से प्राचीन ग्रंथ जमा किए थे। आज उनकी छवि इकिरु को एक कहानी सुना रही थी। यह एक बहादुर राजा और उसके साहसिक कारनामों की कहानी थी, जिसका कथानक बहुत बड़ा दिलचस्प था। कहानी सुनते-सुनते इकिरु सो गयी।

हमेशा की आदत की तरह, प्रोफेसर मार्टिन की छवि को सोने से पहले किताब पढ़ते हुए दिखाया गया। उनके हाथ में उनकी पसंदीदा ज़ेन कहानियों की किताब थी। इसके एक पृष्ठ पर निम्नलिखित कहानी थी:

"A Japanese warrior was captured by his enemies and thrown into prison. That night, he was unable to sleep because he feared that the next day he would be interrogated, tortured, and executed. Then the words of his Zen master came to him, "Tomorrow is not real. It is an illusion. The only reality is now." Heeding these words, the warrior became peaceful and fell asleep."

भावार्थ - "एक जापानी योद्धा को उसके दुश्मनों ने पकड़कर जेल में डाल दिया। उस रात, वह सो नहीं पाया क्योंकि उसे डर था कि अगले दिन उससे पूछताछ की जाएगी, उसे टॉर्चर किया जाएगा और मार दिया जाएगा। तभी उसके ज्ञेन गुरु के शब्द उसके दिमाग में आए, "आने वाला कल कोई वास्तविकता नहीं है। यह एक भ्रम है। जो भी

वास्तविकता है वह इस समय और सिर्फ अभी है।" इन शब्दों को याद करके, योद्धा शांत हो गया और सो गया।"

प्रोफेसर मार्टिन ने प्रयोगशाला में सभी को शुभ रात्रि कहा और घर जाने लगे, उनके ऑक्सीजन मीटर ने दर्ज किया कि जाते समय उन्होंने एक गहरी सांस ली।

बूढ़े सवाल

- श्रीमती कुमुद वर्मा,
पत्नी, प्रोफेसर संजय वर्मा



आज गोपा बावन वर्ष की हो गई है। वह माता-पिता की प्रथम संतान है। पाँच भाई बहनों में सबसे बड़ी। जीवन भर एक आज्ञाकारी संतान के सारे कर्तव्य उसने चार साल पहले तक खूब निभाए। चार साल से ही वह सबके लिए बहुत बुरी हो गयी है। ऐसा क्या किया उसने?

इसी सब पर उसका मंथन चल ही रहा था कि कई बातें और घटनाएँ उसके दिमाग में घूम गईं। जिस घर औँगन में वो पली बड़ी थी वो औँगन ही भेदभाव लिए हुए था। लोगों के सामने सब बच्चे एक समान एक साथ पल बढ़ रहे थे परंतु आंतरिक भेदभाव को कोई भी पहचान नहीं सका। बालपन से आज तक गोपा यही सोचती रही कि उसने ही आँख बंद कर किसी तरह समय निकाल दिया तो किसी और को यह भेदभाव कैसे दिखता?

कुछ घटनाएँ और प्रश्न आज भी जीवंत हैं। पाँच साल के अबोध बालक का शहर के नामी स्कूल की चयन परीक्षा के लिए फ़ार्म भर देना और फिर सीधा उस परीक्षा में बिठा देना। स्वाभाविक था कि चयन नहीं होगा। घर आकर बड़े बूढ़ों को बताना कि इसका (गोपा का) चयन नहीं हुआ। यह तो गोपा परीक्षा वाले दिन तभी समझ गई थी जब उसके पिता से उनके मित्र ने पूछा की आपने क्या - क्या तैयारी करवाई है? पिता ने दो टूक जवाब दे दिया था कि हमने कोई तैयारी नहीं करवाई। ऐसा क्यों किया गया होगा उसके साथ?

घर के बच्चों की हर छोटी बड़ी ज़रूरत का ध्यान रखा जाता था और गोपा को घर के बुजुर्गों पर निर्भर रहना पड़ता था जो स्वयं अपना निर्वाह अपनी पेंशन से करते थे। धीरे - धीरे उसने हालात से समझौता करके खुश रहना सीख लिया। सवालों के जवाब कभी न मिलते। अचानक एक दिन उसकी आँखों के सामने तबाही का मंज़र बिखर गया। घर के दोनों बुजुर्ग दो महीने के अंतराल पर चल बसे।

गोपा को कपड़ों बिस्तर सहित औँगन के इस तरफ से उस तरफ भेज दिया गया। समय और अधिक कूर हो गया। रोज़ रात को आँसुओं से तकिया भीगने लगा। पढ़ाई खब्ब होते ही शादी। जीवन का एक अनजान पहलू शुरू हुआ जिसमें सामंजस्य बैठाकर जीवन काफी आगे निकल गया था कि तभी एक भूचाल आया।

उसके हाथ में (कुछ भी ना देने के इरादे से) घर के उन बुजुर्ग की वसीयत पकड़ा दी जो उसे जीवन में हरपल खुश देखना चाहते थे। साथ ही शुरू हुआ अंतहीन कोर्ट कचहरी का सिलसिला। अब तो बचपन के सवाल भी बूढ़े हो चले तो बाकी सबका महत्व कहाँ रहा?

सौंदर्य

प्रोफेसर प्रशांत दास 'साहिल'



सुकरात (और उनसे पहले पाइथागोरस) सुंदरता को नैतिकता की सहचरी मानते थे। उनके लिए जो वास्तव में नैतिक है, वही सचमुच सुंदर भी है। अर्थात्, सौंदर्य बाहरी रूप-रंग की चकाचौंध में नहीं, बल्कि अच्छाई की अंतर्धारा में बसता है।

इमैनुएल कांट इस पुरानी दार्शनिक धारा में एक नई, सूक्ष्म रोशनी जोड़ते हैं। वे सुंदरता के दो रूप बताते हैं: निर्भर सुंदरता और स्वतंत्र सुंदरता।

निर्भर सुंदरता वह है जो किसी बाहरी सुख-सुविधा से बँधी हो: एक महंगी पेंटिंग जो आपके स्वामित्व-गौरव को सहला दे; एक उम्दा वाइन, जिसका स्वाद पारिखियों की उपस्थिति में निखर उठे; किसी दूर देश से आया हुआ केक, जो अपने स्वाद से अधिक अपनी कथा के कारण मोहले; या आपका बढ़ता हुआ निवेश पोर्टफोलियो जिसकी सुंदरता, वास्तव में, उसके बढ़ने में छिपी है। ऐसी सुंदरता वस्तु में नहीं, उससे मिलने वाली तृप्ति में निवास करती है।

इसके विपरीत, स्वतंत्र सुंदरता किसी आसक्ति, उपयोगिता या प्रतिष्ठा की डोर से मुक्त होती है। वो बस होती है: स्वयंभु; स्वतःप्रभा, अपने आप में पूर्ण। शायद इसी स्वतंत्र सुंदरता की तलाश हमें गहरे और स्थायी आनंद की ओर ले जाती है।

सोचिए, मोने की वह पेंटिंग जिसे खरीदना आपके लिए असंभव है; या सोशल मीडिया पर दिखाई पड़ने वाली किसी अनजान व्यक्ति की क्षणिक करुणा—जिसका आपसे कोई संबंध नहीं। फिर भी दोनों ही पलों में हमारी आँखें एक ही शब्द कहती हैं: “सुंदर” यही इमैनुएल कांट की स्वतंत्र सुंदरता का संसार है। अध्ययन बताते हैं कि दया और प्रसन्नता का रिश्ता गहरा, लगभग आत्मीय है। शायद जब हम दया से दूर भटक जाते हैं, तभी भीतर की बेचैनी जन्म लेती है; क्योंकि हम उसकी सुंदरता देखना भूल जाते हैं।

इस प्रकार, कांट और सुकरात, दो युग, दो आवाजें,

आकर एक ही निष्कर्ष पर ठहरते हैं: अपने सर्वोच्च रूप में सौंदर्य और नैतिकता एक ही ज्योति की किरणें हैं। कविता और संगीत में भी यह स्वतंत्र सुंदरता सहज उपलब्ध है। कुछ कवि, कुछ संगीतकार सिर्फ अपनी कला से ही नहीं, बल्कि उस विस्मय से सुंदर लगते हैं जो वे हमारे भीतर जगाते हैं। जो भाव मन को ऊँचा उठाए, हृदय को हल्का कर दे, वही असली सुंदरता है। कांट हमें इसी विस्मय का आलिंगन करने की सीख देते हैं।

एल्विस प्रेस्ली का “इन द गेटो”, सुरेश वाडकर की कोमल गूँज “साँझ ढले”, या बाबा नागार्जुन का धधकता हुआ पद “बादल को घिरते देखा है” इन कलाकारों की सुंदरता उनकी आवाज, उनके सुर, उनकी पंक्तियों में ही नहीं, बल्कि उस कंपन में है जो वे हमारी आत्मा में छोड़ जाते हैं। यह सुंदरता धरोहर की तरह मन में घर कर जाती है।

हेराक्लिटस कहते थे, समय नदी की तरह बहता है; कुछ भी स्थाई नहीं है। हमारी सुंदरता की समझ भी इसी समय के साथ बदलती रहती है। पर बीते हुए सौंदर्य की प्रतिध्वनियाँ: कविता, गीत, कोई पुरानी धुन अक्सर हमें उन मुक्त, निर्मल क्षणों तक फिर पहुँचा देती हैं जहाँ सुंदरता सिर्फ सुंदरता होती थी।



“हिंदी पढ़ना और पढ़ाना हमारा कर्त्तव्य है।
उसे हम सबको अपनाना है।”

लाल बहादुर शास्त्री

तकनीकी शिक्षा में हिंदी की स्थिति

आयुष मिश्रा,
अकादमिक सहयोगी



भूमिका - भारत एक बहुभाषी राष्ट्र है, जहाँ हिंदी सबसे अधिक बोली जाने वाली भाषा है। यह न केवल करोड़ों लोगों की मातृभाषा है, बल्कि यह देश की राजभाषा के रूप में भी मान्यता प्राप्त है। वर्तमान समय में जब तकनीकी शिक्षा — जैसे इंजीनियरिंग, कंप्यूटर साइंस, सूचना प्रौद्योगिकी और आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस या कृत्रिम बुद्धिमत्ता — का महत्व दिन-प्रतिदिन बढ़ता जा रहा है, तब यह आवश्यक हो जाता है कि हम यह विचार करें कि हिंदी की भूमिका इस क्षेत्र में क्या है। पारंपरिक रूप से तकनीकी शिक्षा का माध्यम अंग्रेजी रहा है, जिससे हिंदी भाषी छात्रों को न केवल समझने में कठिनाई होती है, बल्कि आत्मविश्वास की भी कमी महसूस होती है। ऐसे में तकनीकी शिक्षा में हिंदी की उपस्थिति, स्थिति और प्रभाव का विश्लेषण करना अत्यंत आवश्यक है।

आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआई) भाषा के क्षेत्र में क्रांतिकारी बदलाव ला रहा है। आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस की मदद से न केवल जटिल तकनीकी सामग्री, बल्कि संस्कृत या वैदिक ग्रंथों में निहित वैज्ञानिक और गणितीय ज्ञान को भी आसानी से हिंदी में अनुवादित किया जा सकता है। इससे छात्रों को प्राचीन भारतीय तकनीकी धरोहर तक पहुँचने का अवसर मिलेगा और भाषा की दीवार टूट जाएगी। आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस -आधारित अनुवाद, वॉयस-टू-टेक्स्ट, और चैटबॉट जैसी तकनीकें यह सुनिश्चित कर सकती हैं कि कोई भी छात्र केवल अंग्रेजी न जानने के कारण तकनीकी शिक्षा से वंचित न रहे। इस प्रकार, हिंदी में तकनीकी शिक्षा न केवल सांस्कृतिक गौरव का प्रतीक होगी, बल्कि यह भारत के ज्ञान के क्षेत्र में आत्मनिर्भर बनाने की दिशा में भी एक महत्वपूर्ण कदम होगा।

वर्तमान स्थिति

तकनीकी शिक्षा में हिंदी की स्थिति धीरे-धीरे विकसित हो

रही है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के अंतर्गत मातृभाषा में शिक्षा पर ज़ोर दिया गया है। इसके तहत एआईसीटीई ने कुछ इंजीनियरिंग पाठ्यक्रमों को हिंदी में भी उपलब्ध कराया है, जिससे छात्रों को अपनी ही भाषा में तकनीकी विषयों को सीखने का अवसर मिल रहा है। इसके अतिरिक्त, कई ऑनलाइन प्लेटफॉर्म जैसे स्वयम और एनपीटीईएल पर भी अब हिंदी में तकनीकी विषयों की सामग्री उपलब्ध कराई जा रही है। हालांकि इन प्रयासों के बावजूद, तकनीकी शिक्षा में हिंदी की पहुँच अब भी सीमित है और इसे अधिक व्यापक बनाने के लिए निरंतर प्रयासों की आवश्यकता है।

इस दिशा में कुछ प्रमुख संस्थानों ने भी सराहनीय पहल की है। उदाहरण के लिए, भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान (आईटी) और राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान (एनआईटी) ने हिंदी में किताबों और व्याख्यानों को उपलब्ध कराने पर काम शुरू किया है, ताकि हिंदी भाषी छात्रों को बेहतर अवसर मिल सकें। साथ ही, सरकारी विभागों और आयोगों ने तकनीकी शब्दावली को हिंदी में मानकीकृत करने के लिए विशेष कोश और अनुवाद केंद्र स्थापित किए हैं। निजी तकनीकी कंपनियाँ भी अब हिंदी में अपने उत्पादों और सेवाओं का इंटरफेस उपलब्ध करा रही हैं, जैसे गूगल ट्रांसलेट, माइक्रोसॉफ्ट के हिंदी टूल्स, और अमेज़न का हिंदी प्लेटफॉर्म, जिससे तकनीकी शिक्षा और उद्योग के बीच का भाषाई अंतर धीरे-धीरे कम हो रहा है।

इन्हीं प्रयासों को और गति देने के लिए हाल के वर्षों में कई ठोस कदम उठाए गए हैं। एआईसीटीई-वीएएनआई 2025 योजना के अंतर्गत 22 क्षेत्रीय भाषाओं में तकनीकी सम्मेलनों, कार्यशालाओं और सेमिनारों के आयोजन के लिए ₹4 करोड़ तक की वित्तीय सहायता देने की घोषणा की गई है, जिसमें हिंदी को विशेष प्राथमिकता दी गई है।

इसी क्रम में, एनपीटीईएल ने 207 तकनीकी पाठ्यक्रमों और 199 ई-पुस्तकों को हिंदी में अनुवादित किया है और लगभग 1,200 घटे की ऑडियो रिकॉर्डिंग्स उपलब्ध कराई हैं, जिससे देशभर के हिंदी भाषी छात्रों को उच्च स्तरीय तकनीकी ज्ञान तक पहुँच आसान हुई है। इसके अतिरिक्त, इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय (इम्नू) ने अपने प्रबंधन एवं व्यवसायिक शिक्षा (एमबीए) प्रोग्राम्स को हिंदी और अन्य भारतीय भाषाओं में शुरू करके व्यावसायिक शिक्षा में भाषाई बाधाओं को कम करने की दिशा में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। ये सभी पहलें इस बात का स्पष्ट प्रमाण हैं कि मातृभाषा के माध्यम से तकनीकी शिक्षा को न केवल प्रोत्साहित किया जा रहा है, बल्कि इसे और अधिक सशक्त बनाने की दिशा में निरंतर ठोस कदम उठाए जा रहे हैं।

तकनीकी शिक्षा में हिंदी के फायदे

तकनीकी शिक्षा में हिंदी का प्रयोग शिक्षा को सुलभ और समावेशी बनाता है, विशेष रूप से उन छात्रों के लिए जो ग्रामीण या अर्ध-शहरी क्षेत्रों से आते हैं और जिन्हें अंग्रेजी में पढ़ने में कठिनाई होती है। अपनी भाषा में पढ़ाई करने से छात्रों की समझ और सोचने की क्षमता में वृद्धि होती है, जिससे वे अधिक आत्मविश्वास के साथ नवाचार की दिशा में कदम बढ़ाते हैं। हिंदी में तकनीकी शिक्षा प्राप्त करने वाले छात्र स्थानीय समस्याओं के लिए अधिक प्रासंगिक और व्यवहारिक समाधान भी विकसित कर सकते हैं, क्योंकि वे अपनी संस्कृति, भाषा और परिवेश को बेहतर समझते हैं। इसके साथ ही शिक्षण और संवाद का स्तर भी बेहतर होता है जब शिक्षक और छात्र एक ही भाषा में विचार साझा कर सकते हैं।

इसके साथ ही, हिंदी माध्यम रोजगार के अवसरों में भी सहायक सिद्ध होता है। हिंदी में तकनीकी शिक्षा प्राप्त छात्र क्षेत्रीय स्तर पर कार्यरत कंपनियों, सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यम और सरकारी क्षेत्रों में बेहतर योगदान कर सकते हैं। विशेष रूप से उन क्षेत्रों को इसका लाभ मिलेगा जहाँ सरकारी योजनाओं, नीतियों और तकनीकी पहल को स्थानीय भाषा में समझाना और लागू करना आवश्यक होता है। इससे स्थानीय लोगों की भागीदारी बढ़ेगी, वे तकनीकी प्रगति के साथ सीधे तौर पर जुड़ सकेंगे, और न केवल सरकारी क्षेत्रों बल्कि निजी संस्थानों में भी कार्य करना तथा रोजगार पाना उनके लिए आसान होगा। इसके अतिरिक्त, हिंदी को तकनीकी शिक्षा का माध्यम बनाने से भारत की

भाषाई अस्मिता मजबूत होती है और यह हमारी राष्ट्रीय पहचान को सशक्त बनाता है।

हाल ही में, कृत्रिम बुद्धिमत्ता (एआई) और मशीन लर्निंग टूल्स के क्षेत्र में भी हिंदी की उपस्थिति लगातार बढ़ रही है। गूगल और आईआईटी मद्रास मिलकर “भाषिणी प्रोजेक्ट” के अंतर्गत हिंदी सहित 22 भारतीय भाषाओं के लिए नेचुरल लैंग्वेज प्रोसेसिंग (एनएलपी) आधारित अनुवाद तथा स्पीच-टू-टेक्स्ट टूल विकसित कर रहे हैं। यह पहल तकनीकी शिक्षा और शोध को हिंदी भाषी छात्रों के लिए और अधिक सुलभ बनाएगी। इसके माध्यम से छात्र अपनी ही भाषा में जटिल तकनीकी अवधारणाओं को समझ पाएँगे, शोधपत्रों का अनुवाद कर सकेंगे और डिजिटल उपकरणों का प्रयोग सुगमता से कर पाएँगे। इस प्रकार, हिंदी माध्यम के छात्रों के लिए आधुनिक तकनीक तक पहुँच आसान होगी और वे वैश्विक स्तर पर प्रतिस्पर्धा में पीछे नहीं रहेंगे।

चुनौतियाँ

प्रमुख समस्या यह है कि हिंदी में कई तकनीकी शब्दों का उपयुक्त और सर्वमान्य अनुवाद उपलब्ध नहीं है, जिससे छात्रों में भ्रम की स्थिति बन जाती है। इसके अलावा, हिंदी में उच्च गुणवत्ता वाली तकनीकी पाठ्यपुस्तकों, कोडिंग गाइडों, और शोध लेखों की अभी भी भारी कमी है। शिक्षकों की उपलब्धता भी एक चुनौती है, क्योंकि अधिकांश तकनीकी शिक्षकों को हिंदी में विषयों को पढ़ाने का प्रशिक्षण नहीं मिला होता। वैश्विक प्रतिस्पर्धा की दृष्टि से भी यह चिंता बनी रहती है कि केवल हिंदी माध्यम से पढ़े छात्रों को अंतरराष्ट्रीय मंचों पर अंग्रेजी की अपेक्षा में कठिनाइयों का सामना करना पड़ सकता है।

वैश्विक प्रतिस्पर्धा की दृष्टि से यह चिंता बनी रहती है कि केवल हिंदी माध्यम से पढ़े छात्रों को अंतरराष्ट्रीय मंचों पर अंग्रेजी की तुलना में कठिनाइयों का सामना करना पड़ सकता है। चूँकि वैश्विक स्तर पर तकनीकी शोध और उद्योग जगत का प्रमुख माध्यम अंग्रेजी ही है, इसलिए हिंदी माध्यम से पढ़ने वाले छात्रों को भाषा की बाधाओं के कारण शोधपत्र प्रकाशित करने, अंतरराष्ट्रीय सम्मेलनों में भाग लेने और बहुराष्ट्रीय कंपनियों में नौकरी पाने के लिए अतिरिक्त परिश्रम करना पड़ता है।

इसके अतिरिक्त, डिजिटल युग में भी हिंदी में तकनीकी

सामग्री की उपलब्धता अंग्रेजी के मुकाबले अभी बहुत कम है। यूट्यूब या ओपन-सोर्स प्लेटफॉर्म्स पर जहाँ लाखों संसाधन अंग्रेजी में मुफ्त उपलब्ध हैं, वहीं हिंदी में उच्च स्तरीय और अद्यतन तकनीकी व्याख्यान तथा शोध सामग्री सीमित ही है। साथ ही, विभिन्न राज्यों की क्षेत्रीय भाषाओं और हिंदी के बीच संतुलन बनाए रखना भी एक चुनौती है, क्योंकि अनेक छात्र अपनी मातृभाषा जैसे तमिल, बंगाली, तेलुगु आदि को हिंदी से बेहतर समझते हैं।

इस प्रकार, यह स्पष्ट है कि हिंदी में तकनीकी शिक्षा को आगे बढ़ाने के लिए केवल अनुवाद और पाठ्यपुस्तकों की उपलब्धता ही पर्याप्त नहीं है। इसके साथ-साथ शिक्षक प्रशिक्षण, मानकीकृत तकनीकी शब्दावली का निर्माण, डिजिटल संसाधनों का विस्तार और अंग्रेजी के साथ संतुलन जैसी चुनौतियों का समाधान भी अत्यंत आवश्यक है।

समाधान एवं निष्कर्ष:

तकनीकी शिक्षा में हिंदी को मजबूत स्थान दिलाने के लिए हमें एक संतुलित और व्यवहारिक दृष्टिकोण अपनाना होगा। सबसे पहले, हिंदी और अंग्रेजी का द्विभाषिक मॉडल अपनाकर छात्रों को दोनों भाषाओं में दक्ष बनाया जा सकता है। तकनीकी शब्दावली का मानकीकरण, गुणवत्तापूर्ण हिंदी पाठ्य सामग्री का विकास और शिक्षकों को हिंदी माध्यम में प्रशिक्षित करना आवश्यक है। इसके साथ ही डिजिटल प्लेटफॉर्म्स पर हिंदी में तकनीकी शिक्षा को बढ़ावा देना समय की माँग है।

विश्व के कई देश इस दिशा में पहले से ही उदाहरण प्रस्तुत कर चुके हैं। जैसे चीन, जापान और कोरिया अपनी उच्च शिक्षा और तकनीकी अनुसंधान अपनी मातृभाषा में कराते हैं, और फिर भी वैश्विक स्तर पर अग्रणी हैं। इसी तरह, यदि भारत भी हिंदी को तकनीकी शिक्षा में मजबूत स्थान दे और आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस का उपयोग भाषा अनुवाद, सामग्री निर्माण और शिक्षण सहायता में करे, तो यह न केवल हमारी भाषाई आत्मनिर्भरता को मजबूत करेगा बल्कि ज्ञान को हर व्यक्ति तक पहुँचाने में सहायता होगी।

अंततः, हिंदी को तकनीकी शिक्षा का माध्यम बनाना केवल एक भाषाई सुधार नहीं, बल्कि शिक्षा में समान अवसर, सांस्कृतिक गौरव और तकनीकी आत्मनिर्भरता की दिशा में बड़ा कदम है। यदि सरकार, शैक्षणिक संस्थान,

तकनीकी विशेषज्ञ और आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस तकनीक मिलकर इस दिशा में काम करें, तो आने वाले वर्षों में हिंदी तकनीकी नवाचार, शोध और उच्च शिक्षा की प्रमुख भाषा बन सकती है।

अंततः: यह स्पष्ट है कि हिंदी तकनीकी शिक्षा को लोकतांत्रिक और समावेशी बना सकती है। यह केवल भाषा का सवाल नहीं, बल्कि शिक्षा में समान अवसर और सांस्कृतिक आत्मनिर्भरता का प्रतीक है। यदि नीति, प्रयास और संसाधनों को सही दिशा में संगठित किया जाए, तो हिंदी आने वाले वर्षों में तकनीकी नवाचार और ज्ञान का प्रभावशाली माध्यम बन सकती है।

कैंपस का कण-कण

- जगदीश रबारी,
एमटीएस कर्मचारी, गृह प्रबंधन कार्यालय



ये कैंपस मेरा, ये लक्ष्य मेरा,
हर क्लास में गूँजे आईआईएम है मेरा।
यहाँ का अनुशासन, यहाँ की लगन,
पूछे मुझ से, कहाँ है तेरा वतन?
मैं कहूँ, मेरा कण-कण, रोम-रोम है आईआईएम,
इसकी माटी का चंदन, इसका ज्ञान है शाश्वत।

कहाँ लाल ईंटों की शान, कहाँ हरियाली छाए,
मेहनत और लगन का, पाठ यहाँ सबको पढ़ाए।
लेक्चर हॉल की धारा, लाइब्रेरी का ऊँचा भाल,
हर सुबह-ओ-शाम यहाँ, बदले भविष्य की चाल।
कितने सपने, कितने प्रयास, कितने लक्ष्य न्यारे,
पर एक धड़कन, एक ही पहचान,
हम सब आईआईएम वाले प्यारे।

केस स्टडी की गाथाएँ, रातों की लिखी कहानियाँ,
आँखों में उनकी चमक, देती हमको जिंदगानियाँ।
जब भी आती कोई चुनौती, इस नाम की शान पर,
हर छात्र खड़ा मिलता, अपने सपनों को पूरा करने पर।

कोई भेद नहीं यहाँ, सब एक समान हैं,
यह संस्थान हमारा, हमारी आन-बान-शान है।
आओ मिलकर करें ये प्रण, निभाएँ अपना फर्ज,
आईआईएम का नाम रोशन कर, चुकाएँ हर अपना कर्ज।

महाभारतः आत्मबोध, साहस और सत्य का महाग्रंथ

प्रगति काढी,
अकादमिक सहयोगी



“धर्म की राह कठिन सही, पर जो मन अड़िग बनाए,
उसके कदमों के आगे फिर, विजय स्वयं सिर झुकाए।”

महाभारत भारतीय साहित्य का एक महान और विस्तृत महाकाव्य है, जिसमें मानव जीवन के सभी पक्ष समाहित हैं। इसमें केवल युद्ध का वर्णन नहीं है, बल्कि परिवार, नैतिकता, कर्तव्य, धर्म, सत्य, नेतृत्व, संबंधों और मानव-स्वभाव की जटिलताओं का गहन विश्लेषण है। महाभारत जीवन के हर मोड़ के लिए सीख प्रदान करता है, चाहे वह व्यक्तिगत संघर्ष हों, सामाजिक समस्याएँ हों अथवा आध्यात्मिक जिज्ञासाएँ।

यह महाकाव्य सिद्ध करता है कि सत्य और धर्म का मार्ग चाहे कितना कठिन क्यों न हो, अंततः विजय उसी की होती है। महाभारत की कथा समय, समाज और परिस्थिति के परिवर्तन के बाद भी आज उतनी ही प्रासंगिक है जितनी पहले थी।

महाभारत का सारः धर्म और अधर्म का संघर्ष

महाभारत का मूल संदेश धर्म और अधर्म के संघर्ष पर आधारित है। पांडव धर्म के प्रतीक हैं - धैर्य, सत्य, विनम्रता और न्याय का मार्ग अपनाते हुए, जबकि कौरव अहंकार, लालच, ईर्ष्या और अन्याय का प्रतीक हैं।

यह कथा केवल दो पक्षों के युद्ध की नहीं, बल्कि मनुष्य के भीतर चलने वाले संघर्षों की कहानी भी है। हर व्यक्ति के भीतर भी पांडव और कौरव दोनों मौजूद होते हैं, एक पक्ष हमें सही मार्ग चुनने के लिए प्रेरित करता है, जबकि दूसरा पक्ष अहंकार और मोह के कारण गलत निर्णयों की ओर धकेलता है।

सत्य और धर्म का महत्व

महाभारत की सबसे मुख्य शिक्षा है कि सत्य और धर्म का मार्ग कठिन हो सकता है, लेकिन उसका परिणाम सदैव श्रेष्ठ होता है। पांडवों ने अन्याय सहा, कष्ट झेले, वनवास में रहे, पर धर्म का साथ नहीं छोड़ा। दूसरी ओर दुर्योधन ने अपने अहंकार और ईर्ष्या के कारण अधर्म को अपना धर्म समझ लिया, जिसका परिणाम विनाश था। यह हमें सिखाता है कि “सत्य की राह धीमी हो सकती है, पर वह स्थायी विजय दिलाती है।” आधुनिक जीवन में भी यह शिक्षा उतनी ही महत्वपूर्ण है, जहाँ नैतिक मूल्य अक्सर दब जाते हैं। परंतु महाभारत में कहा गया है कि ईमानदारी ही दीर्घकालिक सफलता का आधार है।

अहंकार, लोभ और ईर्ष्या का परिणाम

महाभारत के कई पात्र यह दर्शाते हैं कि अहंकार और लालच कितने विनाशकारी होते हैं। दुर्योधन का अहंकार, शकुनी की चालाकी और कर्ण का अति-आत्मसम्मान - इन सबने मिलकर पूरे कौरव वंश को पतन की ओर धकेला। यह शिक्षा आज भी उतनी ही प्रासंगिक है, अहंकार बुद्धि को धुँधला कर देता है। लालच इंसान को अंधा बना देता है। ईर्ष्या व्यक्ति की अच्छाइयों को नष्ट कर देती है। इसलिए महाभारत समझाता है कि विनम्रता, संयम और संतोष ही जीवन को संतुलित करते हैं।

कर्तव्य और कर्मयोग की शिक्षा

अर्जुन का मोह और भ्रम युद्धभूमि में उन्हें विचलित कर देता है। तब श्रीकृष्ण उन्हें भगवद् गीता का संदेश देते हैं “अपने कर्तव्य का पालन करो, फल की चिंता मत करो।”

महाभारत की यह शिक्षा हर व्यक्ति के लिए अमूल्य है।

जीवन में कठिनाइयाँ आँएँगी, भावनाएँ बाधा बनेंगी, पर कर्तव्य वही है जिसे पूरा करना हमारा धर्म है।

कर्मयोग कहता है कि, कर्तव्य निष्ठा से करो, फल के मोह से मुक्त रहो, और अच्छे कर्मों से ही जीवन सही दिशा पाता है। आज के समय में जहाँ लोग परिणाम पर अधिक और कर्म पर कम ध्यान देते हैं, गीता का यह संदेश अत्यंत महत्वपूर्ण है।

रिश्तों में सम्मान, मर्यादा और संवाद का महत्व

महाभारत में रिश्तों का बहुत गहरा चित्रण है - माँ, पत्नी, पति, मित्र, पिता, भाई, गुरु, हर संबंध के अनेक आयाम दिखते हैं।

द्रौपदी का अपमान यह दिखाता है कि जब एक स्त्री का सम्मान टूटता है तो पूरा परिवार और समाज विनाश की ओर बढ़ जाता है। भीष्म का व्रत दर्शाता है कि परिवार और राज्य के प्रति समर्पण कितना गहरा होना चाहिए। कुंती का त्याग और धैर्य स्त्री-शक्ति का प्रतीक है। महाभारत यह संदेश देता है कि “जहाँ सम्मान और संवाद नहीं, वहाँ रिश्ते नहीं टिकते”। आज की भागदौड़ भरी दुनिया में यह सीख और भी महत्वपूर्ण हो गई है।

सही संगति और मार्गदर्शन का मूल्य

अर्जुन को श्रीकृष्ण जैसा मार्गदर्शक मिला - जो सारथी भी थे, गुरु भी, मित्र भी और दार्शनिक भी।

वहाँ दुर्योधन को शकुनी जैसी संगति मिली, जिसने उसकी बुद्धि को भ्रष्ट कर दिया। इससे यह सीख मिलती है कि - सही संगति व्यक्ति को ऊँचाई तक ले जाती है, गलत संगति इंसान के पतन का कारण बनती है।

आज के युवाओं के लिए यह शिक्षा अत्यंत महत्वपूर्ण है। आपकी संगति ही आपके विचार, निर्णय और जीवन की दिशा तय करती है।

धैर्य, संयम और क्षमा का महत्व

युधिष्ठिर का धैर्य, विदुर की शांति, भीष्म का संयम और गांधारी की सहनशीलता - ये सब दिखाते हैं कि कठिन समय में धैर्य ही सबसे बड़ा हथियार है। कौरवों का विनाश इसलिए

हुआ क्योंकि उन्होंने धैर्य खो दिया और क्रोध को अपना मार्गदर्शक बना लिया। महाभारत कहता है कि “क्रोध क्षण भर का होता है, पर उसका परिणाम आजीवन हो सकता है”। यह शिक्षा आज की मानसिक तनाव वाली दुनिया में बेहद उपयोगी है।

स्त्री-शक्ति का महत्व

महाभारत में स्त्रियाँ सिर्फ पात्र नहीं, बल्कि शक्ति और परिवर्तन का स्रोत हैं। कुंती धैर्य और त्याग का प्रतीक हैं। द्रौपदी साहस और न्याय की प्रतीक हैं। सुभद्रा प्रेम और संतुलन का रूप हैं। गांधारी निष्ठा और मातृत्व का स्वरूप हैं। यह महाकाव्य स्पष्ट संदेश देता है कि “जहाँ स्त्री का आदर नहीं, वहाँ समृद्धि और शांति संभव नहीं”।

कर्म-फल का सिद्धांत

महाभारत का सार्वभौमिक सिद्धांत है “कर्म का फल अवश्य मिलता है”। पांडवों ने धर्म का पालन किया, उन्हें विजय मिली। कौरवों ने अर्धम् का साथ दिया, उन्हें विनाश मिला। यह सिद्धांत आज भी पूरी तरह सत्य है। हर अच्छा कर्म अच्छा परिणाम लाता है और हर गलत कर्म भविष्य में कठिनाई खड़ी करता है।

नेतृत्व, संकल्प और रणनीति की शिक्षा

कृष्ण का नेतृत्व, अर्जुन की एकाग्रता, भीष्म की प्रतिज्ञा और युधिष्ठिर की सत्यनिष्ठा यह दर्शाती है कि, नेतृत्व केवल शक्ति से नहीं, बुद्धि और सत्य से होता है। संकल्प व्यक्ति को असंभव लक्ष्य पूरा करने की प्रेरणा देता है। सही रणनीति हर कठिन परिस्थिति को जीत में बदल सकती है। महाभारत बताता है कि, अच्छा नेता वही है जो स्वयं के लिए नहीं, बल्कि सबके कल्याण के लिए कार्य करे।

आधुनिक जीवन में महाभारत की प्रासंगिकता

आज के समय में आधुनिक तकनीक, भागदौड़, तनाव, प्रतिस्पर्धा और रिश्तों की जटिलता, सब मिलकर जीवन को कठिन बना देते हैं। पर महाभारत की शिक्षाएँ आज भी उतनी ही उचित और उपयोगी हैं: सही और गलत पहचानना, अपने कर्तव्य पर ध्यान देना, सम्मान और संवाद बनाए रखना, सही मार्गदर्शन चुनना, अहंकार से दूर रहना, सत्य का साथ नहीं छोड़ना।

उपसंहार

महाभारत केवल युद्ध का वर्णन नहीं है, बल्कि मानव जीवन का गहन अध्ययन है। यह हमें सिखाता है कि, धर्म ही जीवन का आधार है, सत्य ही सबसे बड़ा बल है, विनम्रता ही असली सौंदर्य है, और कर्तव्य ही सबसे बड़ा धर्म है। महाभारत का संदेश स्पष्ट है “असली युद्ध बाहरी नहीं, बल्कि भीतर का है”।

अहंकार, मोह, क्रोध और ईर्ष्या पर विजय पा लेना ही सच्ची जीत है। जीवन में यदि हम धर्म, सत्य, धैर्य और कर्तव्य के मार्ग पर चलें, तो चाहे रास्ता कितना ही कठिन क्यों ना हो, परिणाम अवश्य ही सुंदर होगा।

“अंत में वही जीतता है, जो भीतर के अँधेरों को हराए, सत्य की ज्योति जगा ले जो, वही महाभारत का संदेश निभाए।”

मन की उलझन

- प्रतीक पटेल,
एमटीएस, आईजीपीसी



अजीब से रिश्तों का मेला है,
कहीं अपनापन तो कहीं अकेलापन का झमेला है।

कोई दौड़ रहा है मंज़िल की तलाश में,
तो कोई खो गया है खुद के ही अवसाद में।

हँसी के पीछे छुपे हैं कितने गम,
और चुप्पियों ने दबा दी हैं अनकही बातें तमाम।

इमारतें ऊँची हो गई, सपने बड़े,
पर दिलों के आँगन क्यों सूने पड़े?

मुट्ठी में वक्त थामने की चाह है,
पर रेत-सी फिसलती हर इक राह है।

चलो ज़रा ठहरें, साँसें गिनें,
भीड़ में अपनेपन को फिर से चुनें।

क्योंकि सच्ची दौलत न धन है, न शोहरत,
सच्ची दौलत तो है – दिलों का सुकून और मोहब्बत।

अजनबी से अपनापन

प्रतिमा भारती
पूर्वछात्रा – पीजीपी-एफएबीएम
(2014-16)



न जाने कैसे मुंबई के उस मोड़ पर, एक अजनबी से टकरा गए।
एक दूजे की राह के, जैसे सहयात्री बन कर आ गए।
न थी कोई पहचान, न कोई वादों की डोर थी।
बस दो अजनबी दिल थे, और खींचते पतंग की डोर थी।

धीरे-धीरे बातों ने ली गहरी मुस्कान,
अजनबी के मुख पर पाया अपना छोटा जहान।
मन की खामोशी भी, अब कुछ कहने लगी थी,
प्रेम की मीठी धुन, हर पल बजने लगी थी।

थी अनजानी राह, न कोई परिचय का साया,
पर बातों ने धीरे से एक दूसरे को करीब बुलाया।
अजनबी से बन गए तुम दिल की ज़रूरत,
मेरे खाली दिल को दे दिए तुमने, इन्द्रधनुष-सी सूरत।
फिर आया वो पल, जब सात फेरे लेने का वादा किया,
शादी के प्रेमसूत्र में बंध जाना जाया किया।

फिर आया वो दौर, शादी की तैयारियों का,
दिल्ली के बाज़ारों में, खुशियों की खुमारियों का।
चाँदनी चौक की भीड़, कनॉट प्लेस की शाम,
साथ में शॉपिंग का वो, अनोखा-सा काम।

हर लहंगा, हर शेरवानी, हर साड़ी हमने चुनकर लिया था।
उस अजनबी ने जैसे, मेरे जीवन में रंग भर दिया था।
बन गए वो हमसफ़र, जीवन की इस नाव के।
गुज़रा समय यूँ ही, प्यार की मीठी छाँव में।

फिर आई खुशियाँ घर, दो नहीं जानों के रूप।
छोटी-छोटी, प्यारी-प्यारी, दो बेटियों का सुख।
दो बेटियाँ हैं प्यारी, घर पर गूँजती किलकारी,
उनके चेहरों में दिखती, हमें जगत भर की खुशियाँ सारी।

छोटी-छोटी आवाजें, दो गुडियों का शोर,
भर दिया जीवन में, सेह चारों ओर।
वही अजनबी अब, पूरे परिवार का सार है,
दो बच्चों के साथ दुनिया, और अटूट उनका प्यार है।
पहला मिलन था जो, एक साधारण-सी बात,
आज वही है जीवन की, सबसे प्यारी सौगात।

एआई गवर्नेंस : भारत के सुरक्षित, नैतिक और समावेशी भविष्य की दिशा

श्रीमती मीना टेकवानी,
माताजी, डॉ. कृतिका टेकवानी



21वीं सदी सूचना एवं तकनीकी नवाचारों का युग है। डिजिटल परिवर्तन के इस दौर में कृत्रिम बुद्धिमत्ता (आर्टिफिशल इंटेलिजेंस-एआई) समाज, अर्थव्यवस्था और प्रशासन के हर क्षेत्र में क्रांतिकारी बदलाव ला रही है। एआई स्वास्थ्य सेवाओं में निदान को सटीक बना रही है, शिक्षा में वैयक्तिकृत सीखने के नए आयाम जोड़ रही है, कृषि उत्पादन को डेटा आधारित बना रही है और औद्योगिक प्रक्रियाओं को अधिक कुशल बनाकर नए रोजगार अवसर पैदा कर रही है।

लेकिन दूसरी तरफ, एआई के साथ कई चुनौतियाँ भी जुड़ी हैं—नैतिकता, गोपनीयता, पक्षपात (bias), गलत सूचना, साइबर जोखिम, निगरानी का दुरुपयोग और नौकरी के स्वचालन से उपजने वाले सामाजिक-आर्थिक संकट। इन सभी प्रसंगों के बीच, “एआई गवर्नेंस” एक ऐसी अवधारणा के रूप में उभरती है जो एआई के सुरक्षित, जिम्मेदार, पारदर्शी और मानव-केंद्रित उपयोग को सुनिश्चित करती है।

भारत, जो दुनिया की दूसरी सबसे बड़ी डिजिटल आबादी और एक तेजी से बढ़ती अर्थव्यवस्था वाला देश है, के लिए एआई गवर्नेंस सिर्फ एक नीति नहीं बल्कि भविष्य की दिशा निर्धारित करने वाली आधारशिला है।

1. एआई गवर्नेंस का अर्थ व महत्व

1.1 अर्थ - एआई गवर्नेंस उन सभी नीतियों, नियमों, ढाँचों और प्रक्रियाओं को दर्शाता है जो एआई के विकास, परीक्षण, उपयोग और निगरानी के लिए निर्धारित किए जाते हैं। इसका उद्देश्य है—

- एआई को सुरक्षित और विश्वसनीय बनाना
- मानवाधिकारों और गोपनीयता की रक्षा करना

- एआई आधारित गलत कार्यों को रोकना
- तकनीकी नवाचार और सामाजिक कल्याण के बीच संतुलन बनाए रखना

1.2 महत्व - भारत में एआई गवर्नेंस की आवश्यकता इसलिए और भी अधिक है क्योंकि—

- यहाँ 1.4 अरब की विशाल आबादी का डेटा उपलब्ध है
- डिजिटल इंडिया और यूपीआई जैसे नवाचारों ने डिजिटल इंफ्रास्ट्रक्चर तैयार किया है
- एआई के दुरुपयोग (फेक न्यूज, साइबर धोखाधड़ी, डीपफेक) तेजी से बढ़ रहे हैं
- स्वचालन से रोजगार व आय असमानता पर प्रभाव पड़ सकता है
- ग्रामीण व शहरी क्षेत्रों के बीच डिजिटल विभाजन मौजूद है
- स्वास्थ्य, कृषि, शिक्षा जैसे क्षेत्रों में एआई का तेजी से विस्तार हो रहा है

इसलिए भारत को ऐसे मजबूत एआई गवर्नेंस ढाँचे की आवश्यकता है जो नवाचार और सुरक्षा दोनों को संतुलित कर सके।

2. भारत में एआई का बढ़ता प्रभाव

2.1 आर्थिक क्षेत्र में

- एआई भारत की जीडीपी में आने वाले वर्षों में 500–600 बिलियन डॉलर तक का योगदान दे सकती है।
- बैंकिंग और वित्तीय क्षेत्र में जोखिम नियंत्रण,

धोखाधड़ी पहचान और ग्राहक सेवा में एआई का उपयोग तेजी से बढ़ रहा है।

- स्टार्टअप इकोसिस्टम में एआई की हिस्सेदारी अत्यधिक बढ़ रही है — स्वास्थ्य, फिनटेक, एडटेक और एग्रीटेक इसके बड़े केंद्र हैं।

2.2 सामाजिक क्षेत्र में

- ई-गवर्नेंस सेवाओं में चैटबॉट, वॉयस असिस्टेंट और डेटा आधारित निर्णयों का उपयोग बढ़ा है।
- शिक्षा में एआई आधारित वैयक्तिकृत सीखने की प्रणालियाँ छात्रों की सीखने की शैली के अनुसार सामग्री प्रदान कर रही हैं।
- ग्रामीण क्षेत्रों में एआई आधारित कृषि सलाह सेवाएँ किसानों की उत्पादकता बढ़ा रही हैं।

2.3 सुरक्षा और प्रशासन में

- अपराध रोकथाम में भविष्यसूचक पोलिसिंग तकनीक का उपयोग हो रहा है।
- आपदा प्रबंधन में एआई आधारित भविष्यवाणी मॉडल जीवन और संपत्ति की रक्षा में सहायक हैं।

3. एआई से जुड़ी प्रमुख चुनौतियाँ

3.1 नैतिक चुनौतियाँ - एआई का विकास जितनी तेजी से हो रहा है, उससे जुड़े नैतिक प्रश्न भी उतनी ही तेजी से उभर रहे हैं। ये चुनौतियाँ मानव हित, समानता और न्याय पर गंभीर प्रभाव डाल सकती हैं।

(1) एल्गोरिदम में पक्षपात

एआई सिस्टम वही निर्णय लेते हैं जो डाटा से सीखते हैं। यदि प्रशिक्षण डेटा पक्षपातपूर्ण हों तो एआई के निर्णय भी भेदभावपूर्ण हो जाते हैं। उदाहरण:

- भर्ती में केवल पुरुष उम्मीदवारों को प्राथमिकता मिलना
- चेहरे की पहचान तकनीक का कुछ जातीय समूहों को गलत पहचानना
- ऋण वितरण में गरीब या किसी विशेष समुदाय के खिलाफ भेदभाव

यह समस्या सामाजिक असमानता को तकनीक के

माध्यम से और मजबूती से बढ़ा सकती है।

(2) भेदभावपूर्ण निर्णय

भर्ती, ऋण, बीमा, पहचान सत्यापन, और मेडिकल निर्णय जैसे महत्वपूर्ण क्षेत्रों में एआई आधारित निर्णय सीधे व्यक्ति के भविष्य को प्रभावित करते हैं। यदि इन निर्णयों में पारदर्शिता न हो, तो व्यक्ति को यह भी पता नहीं चलता कि उसके साथ क्यों भेदभाव हुआ।

(3) सैन्य या दमनकारी उपयोग

एआई का उपयोग —

- स्वचालित हथियार
- चेहरे की पहचान द्वारा सामूहिक निगरानी
- नागरिकों की गतिविधियाँ ट्रैक करने जैसे खतरनाक उद्देश्यों के लिए किया जा सकता है। यह मानवाधिकारों के लिए गंभीर खतरा है।

3.2 गोपनीयता और डेटा सुरक्षा

(1) बड़े पैमाने पर डेटा संग्रह

एआई को काम करने के लिए विशाल मात्रा में व्यक्तिगत डेटा चाहिए —

- मोबाइल लोकेशन
- चेहरे की पहचान
- बैंकिंग डेटा
- सोशल मीडिया गतिविधियाँ यह नागरिकों की व्यक्तिगत स्वतंत्रता और गोपनीयता के लिए खतरा बन सकता है।

(2) डेटा लीक और साइबर हमले

यदि एआई सिस्टम या डेटाबेस हैक हो जाएँ, तो लाखों लोगों की संवेदनशील जानकारी अपराधियों के हाथ में पहुँच सकती है।

(3) सरकारी या निजी निगरानी में वृद्धि

बिना नियमों के निगरानी से लोकतंत्र और नागरिक स्वतंत्रता प्रभावित होती है।

3.3 गलत सूचना और डीपफेक

डीपफेक तकनीक इतनी उन्नत हो चुकी है कि असली और नकली वीडियो में अंतर करना बेहद चुनौतीपूर्ण हो गया है। यह —

- चुनावों को प्रभावित कर सकता है
- हिंसा फैला सकता है
- किसी व्यक्ति की छवि खराब कर सकता है
- सोशल मीडिया पर सामूहिक भ्रम फैला सकता है

इसका नियंत्रण न होने पर समाज और लोकतंत्र दोनों जोखिम में पड़ सकते हैं।

3.4 रोजगार पर प्रभाव

(1) स्वचालन और नौकरी का खतरा

रोबोट और एआई सिस्टम कई पारंपरिक नौकरियाँ खत्म कर सकते हैं, विशेषकर:

- बैंकिंग क्लर्क
- कस्टमर केयर
- ड्राइविंग
- अकाउंटिंग
- मैन्युफैक्चरिंग

इससे निम्न-कौशल और मध्य-कौशल वाले कर्मचारियों पर खतरा बढ़ता है।

(2) कौशल अंतर

भविष्य की नौकरियाँ —

- डेटा साइंस
- एआई इंजीनियरिंग
- साइबर सुरक्षा जैसे उन्नत कौशल की माँग करती हैं। जो लोग इन कौशलों को नहीं सीख पाते, वे रोजगार से बाहर हो सकते हैं।

3.5 कानूनी और प्रशासनिक अस्पष्टता

मुख्य प्रश्न: यदि एआई कोई गलत निर्णय लेता है तो जिम्मेदार कौन?

- डेवलपर? जिसने प्रणाली बनाई
- उपयोगकर्ता? जिसने इसका उपयोग किया
- कंपनी? जिसने इसे तैनात किया

आज यह स्पष्ट नहीं है। इस अस्पष्टता के कारण —

- एआई दुरुपयोग
- गलत निर्णय

- धोखाधड़ी
- डेटा उल्लंघन की स्थिति में कार्रवाई मुश्किल हो जाती है।

4. भारत का वर्तमान एआई गवर्नेंस ढाँचा — विस्तृत विवरण

4.1 राष्ट्रीय एआई रणनीति — (2018)

भारत ने "एआई फ़ॉर ऑल" दृष्टिकोण अपनाया, जिसका उद्देश्य है —

- नवाचार को बढ़ावा
- समावेशी विकास
- सामाजिक चुनौतियों का समाधान

मुख्य फोकस क्षेत्र:

1. कृषि — मिट्टी डेटा, उपज पूर्वानुमान, बीज गुणवत्ता
2. स्वास्थ्य — निदान, टेलीमेडिसिन, रोग पूर्वानुमान
3. शिक्षा — वैयक्तिकृत सीखना, ऑनलाइन आकलन
4. स्मार्ट सिटी — ट्रैफिक प्रबंधन, आपदा चेतावनी
5. परिवहन — स्मार्ट लॉजिस्टिक्स, स्वचालित वाहन

4.2 डिजिटल पर्सनल डेटा प्रोटेक्शन एक्ट (डीपीडीपी), 2023

यह भारत का प्रमुख डेटा गोपनीयता कानून है। मुख्य प्रावधान:

- व्यक्तिगत डेटा की सुरक्षा
- डेटा उपयोग की पारदर्शिता
- नागरिक को अपने डेटा पर अधिकार
- डेटा संग्रह के लिए सहमति अनिवार्य
- डेटा उल्लंघन पर दंड

4.3 राष्ट्रीय कार्यक्रम — एआई

सरकार का उद्देश्य है:

- एआई अनुसंधान को मजबूत करना
- स्टार्टअप को फंडिंग
- नई एआई तकनीक विकसित करना
- स्किल्ड वर्कफोर्स तैयार करना

4.4 इंडियाएआई पोर्टल

भारत का आधिकारिक एआई ज्ञान प्लेटफॉर्म। यह प्रदान करता है —

- शोध आलेख
- डेटा सेट
- नीति दस्तावेज
- एआई स्टार्टअप और इनोवेशन की जानकारी

यह भारत के एआई इकोसिस्टम के लिए एक केंद्रीकृत मंच है।

5. एआई गवर्नेंस के मुख्य स्तंभ — विस्तृत विश्लेषण

5.1 सुरक्षा (सेफ्टी)

- एआई मॉडल के जोखिम पहचाना
 - उच्च-जोखिम एआई का निरंतर परीक्षण
 - साइबर सुरक्षा प्रोटोकॉल
 - गलत आउटपुट को रोकने की व्यवस्था
- उद्देश्य है कि एआई सुरक्षित, विश्वसनीय और मानव-हितैषी हो।

5.2 नैतिकता

- मानवाधिकारों की रक्षा
- एआई निर्णयों में निष्पक्षता
- एल्गोरिदम की पारदर्शिता
- किसी समूह के खिलाफ भेदभाव न होना

5.3 जवाबदेही

- एआई की विफलता की स्थिति में जिम्मेदार पक्ष की स्पष्ट पहचान
- उपयोगकर्ता को शिकायत दर्ज करने और मुआवजा पाने का अधिकार

5.4 पारदर्शिता

- एआई कैसे निर्णय देता है यह बताना
- ब्लैक-बॉक्स मॉडल को कम करना
- सार्वजनिक डोमेन में रिपोर्ट जारी करना

5.5 समावेशन

- ग्रामीण भारत और वंचित वर्गों तक एआई की पहुँच
- स्थानीय भाषाओं में एआई विकसित करना

- दिव्यांगजनों के लिए सहायक एआई समाधान

6. भारत के सुरक्षित भविष्य के लिए आवश्यक कदम

6.1 मजबूत नियम और मानक

भारत को यूरोप के एआई ऐक्ट की तरह—

- जोखिम श्रेणियों में एआई को वर्गीकृत करना
- उच्च-जोखिम एआई के लिए सख्त नियम
- दुरुपयोग रोकने के लिए दंड प्रणाली बनानी चाहिए।

6.2 एआई साक्षरता

- स्कूल और कॉलेज में एआई पाठ्यक्रम
- डिजिटल इंडिया मिशन में एआई जागरूकता
- जनता को डीपफेक और फेक न्यूज पहचानने का प्रशिक्षण

यह समाज को सुरक्षित और सक्षम बनाता है।

6.3 सुरक्षित नवाचार

- स्टार्टअप के सरल नियम
- सरकारी फंडिंग
- ओपन-सोर्स एआई और नैतिक एआई को बढ़ावा
- शोध संस्थानों में प्रयोगशालाएँ और प्रशिक्षण

6.4 सामाजिक सुरक्षा और रोजगार संरक्षण

- कर्मचारियों के लिए कौशल उन्नयन कार्यक्रम
- भविष्य की नौकरियों की तैयारी
- एआई से प्रभावित क्षेत्रों के लिए विशेष राहत योजनाएँ

6.5 अंतरराष्ट्रीय सहयोग

भारत को—

- जी-20
- क्वाड
- इन्डो-पैसिफिक स्ट्रेटेजिक अलान्सिस में वैश्विक एआई नीतियाँ बनाने में नेतृत्व करना चाहिए ताकि सुरक्षित, पारदर्शी और मानव-

केंद्रित एआई विश्व स्तर पर प्रोत्साहित हो।

7. नैतिक एवं मानव-केंद्रित एआई की दिशा

7.1 मानव हित सर्वोपरि - एआई कभी भी मानव गरिमा, स्वतंत्रता या अधिकारों के विरुद्ध नहीं होना चाहिए। सभी तकनीकी निर्णय मानव मूल्यों के अनुरूप होने चाहिए।

7.2 जिम्मेदार डेवलपमेंट

- उच्च गुणवत्ता वाला प्रशिक्षण डेटा
- एल्गोरिद्मिक भेदभाव का परीक्षण
- पारदर्शिता और निगरानी तंत्र
- स्वतंत्र ऑडिट

7.3 गोपनीयता-प्रथम प्रणाली

“प्राइवेसी बाई डिज़ाइन” का मतलब है—

- शुरुआत से ही गोपनीयता को प्राथमिकता देना
- न्यूनतम डेटा संग्रह
- डेटा एन्क्रिप्शन
- उपयोगकर्ता की सहमति अनिवार्य करना

7.4 डीपफेक नियंत्रण

- डीपफेक पहचानने वाली तकनीकें
- कानूनों में सख्त प्रावधान
- सोशल मीडिया कंपनियों को जवाबदेह बनाना
- जनता में जागरूकता अभियान

8. भारत का समावेशी भविष्य: एआई के साथ संतुलित विकास

एआई भारत को विश्व की अग्रणी डिजिटल अर्थव्यवस्थाओं में स्थान दिला सकता है, परंतु इसका लाभ तभी सभी तक पहुँच पाएगा जब —

- ग्रामीण भारत डिजिटल-सक्षम होगा
- महिलाएँ और युवाएँ एआई कौशल प्राप्त करेंगे
- छोटे उद्योग और किसानों को एआई समाधान उपलब्ध होंगे
- बहुभाषी एआई मॉडल भारतीय विविधता का प्रतिनिधित्व करेंगे

एआई तभी वास्तविक अर्थों में विकास का साधन बनेगा जब वह सभी के लिए समान अवसर सुनिश्चित करेंगे।

उपसंहार - एआई गवर्नेंस केवल तकनीकी नियमों का संग्रह नहीं है, बल्कि यह भारत के भविष्य का मार्गदर्शक सिद्धांत है। भारत जिस तेजी से डिजिटल रूपांतरण की ओर बढ़ रहा है, वहाँ एआई की भूमिका और भी महत्वपूर्ण हो जाती है। सुरक्षित, पारदर्शी, नैतिक और समावेशी एआई ढाँचा ही सुनिश्चित करेगा कि—

- नवाचार जारी रहे
- नागरिकों के अधिकार सुरक्षित रहें
- सामाजिक न्याय और समानता बनी रहे
- और भारत वैश्विक मंच पर एआई नेतृत्वकर्ता के रूप में उभरे

एआई मानव सभ्यता का भविष्य निर्धारित करेगा—यह बात अब स्पष्ट है। भारत जैसे विशाल, विविध और जनसंख्या-प्रधान देश के लिए एआई गवर्नेंस केवल तकनीकी ढाँचा नहीं, बल्कि सामाजिक, नैतिक, आर्थिक और राजनीतिक स्थिरता की बुनियाद है। यदि भारत एआई गवर्नेंस मॉडल 2040 जैसी उन्नत नीति अपनाता है, तो 2047 तक विकसित भारत का सपना केवल संभव ही नहीं, बल्कि दुनिया के लिए भारतीय एआई मॉडल एक आदर्श बन सकता है। इस प्रकार, एआई गवर्नेंस भारत को एक सुरक्षित, नैतिक और समावेशी भविष्य की दिशा में आगे बढ़ाने वाली अनिवार्य आधारशिला है।



“भाषा की सरलता, सहजता और शालीनता अभिव्यक्ति को सार्थकता प्रदान करती है। हिंदी ने इन पहलुओं को खूबसूरती से समाहित किया है।”

नरेन्द्र मोदी
(प्रधान मंत्री)

खोहकृपाम्

राखिता प्रदोष थीया,
पत्नी, प्रदोष थीया, पूर्तजात्र कार्यालय



आज सुबह उठकर चाय के साथ अखबार पढ़ने बैठी तो मन भारी हो गया। सुर्खियों में लिखा था कि मात्र 14 वर्ष की एक छात्रा ने विद्यालय की इमारत से छलाँग लगाकर अपनी जान दे दी। दो दिन पहले ही टी.वी. पर खबर आई थी कि 15 वर्ष का एक लड़का दिल्ली मेट्रो के सामने कूद गया। हाल ही में एक शिक्षक ने काम के दबाव और असंतोष के कारण आत्महत्या कर ली, और एक पढ़ी-लिखी डॉक्टर ने अमेरिका का वीज़ा न मिलने की निराशा में अपनी जीवन-लीला समाप्त कर ली। इन लगातार आती दुखद घटनाओं ने यह सोचने पर मजबूर कर दिया है कि आज का समाज किस प्रकार के मानसिक बोझ तले दबता जा रहा है — और हम कहाँ चूक रहे हैं कि इतनी छोटी-छोटी असफलताएँ भी जीवन से हार मानने की वजह बन जाती हैं?”

“ऐसे समाचार पढ़कर बार-बार यही महसूस होता है कि आज की युवा पीढ़ी को सही मार्गदर्शन और भावनात्मक सहारे की अत्यंत आवश्यकता है। अनेक युवा स्वयं को इतना असहाय और अकेला महसूस करते हैं कि निराशा के उस एक पल में वे अपने माता-पिता, परिवार और भविष्य—किसी के बारे में नहीं सोच पाते। यह स्थिति केवल व्यक्तिगत कमजोरी नहीं, बल्कि हमारे समाज, शिक्षा-प्रणाली और पारिवारिक संवाद में बढ़ती दरारों का संकेत है। आज के युवाओं को सुनने, समझने और सहारा देने वाले सुरक्षित वातावरण की पहले से कहीं अधिक जरूरत है।”

“इन समाचारों को पढ़कर मुझे एक छोटे बच्चे की याद आ गई, जो अत्यंत गरीब परिवार से था। उसके माता-पिता की आय का एकमात्र सहारा चर्च में की जाने वाली प्रार्थनाएँ थीं। एक बार किसी कारणवश वह परिवार हमारे घर ठहरा। सुविधाएँ सीमित होने के कारण हम सब छत पर सो रहे थे। उस बच्चे की जिज्ञासा का कोई अंत नहीं था—जब भी वह

आकाश में विमान देखता, मुझसे पूछता, ‘दीदी, इस विमान के अंदर कैसा होता होगा? यह उड़ता कैसे होगा?’

वह पढ़ाई में अत्यंत कुशल था और उसके सपने आकाश से भी ऊँचे। किंतु घर की आर्थिक स्थिति बेहद कमजोर होने के कारण उसने बहुत कठिनाई से अपनी पढ़ाई पूरी की। संघर्ष यहीं खत्म नहीं हुआ—पढ़ाई पूरी होने के बाद भी उसे अपनी इच्छा के अनुरूप काम नहीं मिल पा रहा था। कई बार प्रयास करता, टूट जाता, लेकिन उसने कभी हार नहीं मानी।

फिर एक दिन उसकी किस्मत ने करवट ली। उसे एक बेहतरीन कंपनी में नौकरी मिली। उसकी सारी जिज्ञासाएँ, जो बचपन में विमानों को देखकर उठती थीं, अब सच होने लगीं—वह दुनिया भर में विमान से यात्रा करता, नए अनुभव जुटाता और अपने सपनों को पंख देता गया। मेहनत और दृढ़ संकल्प के बल पर आज उसका नाम फोबर्स अंडर 30 की सूची में शामिल है। नाम मैं साझा नहीं कर सकती, लेकिन यह कहानी स्वयं में एक प्रेरणा है।

“यह बच्चा कभी यह नहीं भूला कि उसके प्रियजन उसके लिए कितने महत्वपूर्ण हैं। उसे हमेशा यह एहसास रहा कि माता-पिता का ऋण इतना गहरा होता है कि उसे सात जन्म लेकर भी पूरी तरह चुकाया नहीं जा सकता। जीवन के कठिनतम चरणों में भी उसने अपने परिवार को अपनी ताकत और प्रेरणा का स्रोत माना। ऐसे बच्चे आज की युवा पीढ़ी के लिए प्रेरणास्रोत हैं—वे यह सिखाते हैं कि परिस्थितियाँ चाहे कितनी भी विपरीत हों, माता-पिता का आशिर्वाद, दृढ़ इच्छाशक्ति और निरंतर प्रयास किसी भी सपने को सच कर सकते हैं।”

जब मैं आज ये दुखद समाचार देखती हूँ—जहाँ लोग

तमाम सुविधाओं के बावजूद जीवन से हार मान लेते हैं—तो मुझे वह बच्चा याद आता है। वह इस बात की मिसाल है कि गिरो, संभलो, पर कभी हार मत मानो। संघर्ष जीवन का हिस्सा है, लेकिन साहस और निरंतरता हमें असंभव को भी संभव बनाने की शक्ति देती है।”

जब आप तनाव में हों, तो अपने मन को शांति की ओर मोड़ें और कुछ समय के लिए ध्यान लगाएँ। आप खुद अंधकार की छाया से निकलने का रास्ता पाएँगे। आपका अपने माता-पिता और प्रियजनों के प्रति प्रेम का ऋण है। उन्हें शर्मिदा न करें।

नन्ही परी

उमेश मेहता,
कार्यकारी



मेरे घर आई इक नन्ही परी, जो भी पूरी परों से घिरी, मेरे घर आई इक नन्ही परी...
आई वो जनवरी के माह में, खुशहाली छाई घर के बागान में। झूमता फिरा में पूरे माह, कैम्पस के मैदान में ॥1॥
सबकी जो प्यारी है, जैसे कन्या कुमारी है। करती घोड़ों की असवारी है,
आखिर बिटिया होती ही सबको प्यारी है ॥2॥

मेरी जो लुगाई (घरवाली) है, लड़ती रोज मुझसे लड़ाई है। अब आई उसके सर पर बैठने वाली,
अब उँटनी पहाड़ के नीचे आई है ॥3॥

मेरे घर आई इक नन्ही परी, जो भी पूरी परों से घिरी, मेरे घर आई इक नन्ही परी...
कल दिन सात की थी, आज महीने सात की है। कल होगी सात साल की, फिर कहीं डोली बाजा बारात की है। ॥4॥
वैसे मेरी बीवी मेरा सर खाती थी, अब ये बीवी का सर खाती है।
वो ज्यादा नहीं कुछ हम तीन बेर खाते हैं, और ये 3 बेर-सा खाती है ॥5॥

चेहरा देख कर शाम ढले, और चेहरा देख कर होती रात है।
सुला कर उसको सोते हैं हम, क्योंकि यही हमारे दिन और रात है ॥6॥

मेरे घर आई इक नन्ही परी, जो भी पूरी परों से घिरी, मेरे घर आई इक नन्ही परी...
हाथ उसके जैसे मखमल, होंठ उसके गुलाब से कोमल। देख मन तो करता है मेरा कि,
चलता रहूँ जीवन भर पैदल-पैदल ॥7॥

बीवी बोले कि टाइम पास हमारा, माता-पिता बोले बुढ़ापे का सहारा।
वैसे सच में बेटियाँ होती ही हैं, जीवन पूरा हमारा ॥8॥

सर के बाल ऐसे कि हाथ आते नहीं, बस अब जीवन में और कुछ भाता नहीं।
मौसमी बादल तो आते हैं बहुत, पर.. पर जाने क्यों बरसते नहीं। ॥9॥

मेरे घर आई इक नन्ही परी, जो भी पूरी परों से घिरी, मेरे घर आई इक नन्ही परी... आने से उसके आई बहार,
मेरे ऑफिस वाले लाए उसके उपहार, घर वाले दिखाते खिलौने बार-बार, पड़ौसी ने करी फूलों की बौछार ॥10॥

बोलना नहीं आता पर बुलाती है, हँसना नहीं आता पर हँसाती है।
चलना नहीं आता छोटी मैडम को, पर जाने कैसे दौड़ जाती है ॥11॥

मेरे घर आई इक नन्ही परी, जो भी पूरी परों से घिरी, मेरे घर आई इक नन्ही परी...

प्राथमिक शिक्षा में मातृभाषा का महत्व

रवि पारेख,
अकादमिक सहयोगी



शिक्षा वह दीपक है जो व्यक्ति, समाज और राष्ट्र को प्रगति के मार्ग पर अग्रसर करता है। इस यात्रा की नींव प्राथमिक शिक्षा से रखी जाती है, जहाँ बच्चे सबसे पहले दुनिया को समझना और व्याख्यायित करना शुरू करते हैं। यही वह समय होता है जब भाषा बच्चे के सीखने और अभिव्यक्ति का केंद्रीय माध्यम बनती है।

विश्व भर के शिक्षाविदों और मनोवैज्ञानिकों का एकमत विचार है कि प्राथमिक शिक्षा यदि मातृभाषा में दी जाए, तो यह केवल एक पद्धति नहीं बल्कि बच्चों की स्वाभाविक सीखने की प्रक्रिया और उनके मौलिक अधिकार का सम्मान है। बहुभाषी और सांस्कृतिक रूप से विविध समाजों में मातृभाषा आधारित शिक्षा बच्चों के संज्ञानात्मक, सामाजिक और भावनात्मक विकास को नए आयाम देती है।

मातृभाषा और संज्ञानात्मक विकास

जब बच्चा उस भाषा में सीखता है जिससे वह भावनात्मक रूप से जुड़ा है और जिसे वह सहजता से समझता है, तो उसका ध्यान भाषा के संघर्ष में नहीं फँसता — बल्कि विचारों, अवधारणाओं और सीखने की प्रक्रिया पर केंद्रित रहता है। परिणामस्वरूप सीखना स्वाभाविक और आनंददायक बन जाता है।

प्रसिद्ध शिक्षाविद डॉ. जिम कर्मिस के भाषाई अंतरनिर्भरता सिद्धांत के अनुसार, एक भाषा में विकसित कौशल दूसरी भाषा सीखने में बाधा नहीं बल्कि सहायक होते हैं — यानि, जितनी मजबूत अपनी भाषा, उतनी सुगम अन्य भाषाओं की राह। यही कारण है कि मातृभाषा में मजबूत आधार रखने वाले बच्चे तार्किक सोच, स्वचालन और समस्या समाधान जैसी उच्च-स्तरीय क्षमताओं में अधिक उत्कृष्टता दिखाते हैं।

शैक्षणिक प्रदर्शन

शोधों से यह तथ्य अब निर्विवाद है कि मातृभाषा में प्रारंभिक शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थी लंबे समय में बेहतर अकादमिक प्रदर्शन करते हैं। थॉमस और कोलिअर के अध्ययन में पाया गया कि जिन छात्रों को छह वर्षों तक मातृभाषा में शैक्षणिक समर्थन मिला, उन्होंने आगे चलकर अंग्रेजी सहित अन्य विषयों में उन छात्रों से अधिक सफलता हासिल की जिन्हें शुरू से ही केवल विदेशी भाषा में पढ़ाया गया था।

यूनेस्को भी यह मानता है कि मातृभाषा आधारित बहुभाषी शिक्षा न केवल डॉपआउट दर कम करती है, बल्कि लड़कियों और भाषाई अल्पसंख्यक बच्चों के लिए शिक्षा की पहुँच को उल्लेखनीय रूप से बढ़ाती है। कक्षा में अपनी भाषा में संवाद करने की सहजता से बच्चों का आत्मविश्वास बढ़ता है, प्रश्न पूछने में संकोच कम होता है और सीखना एक सामूहिक और सुखद अनुभव बन जाता है।

भावनात्मक जुड़ाव और सांस्कृतिक पहचान

शिक्षा केवल विषयों का ज्ञान भरना नहीं है — यह बच्चे को भावनात्मक रूप से सुरक्षित, सामाजिक रूप से जागरूक और सांस्कृतिक रूप से जुड़ा बनाना भी है। मातृभाषा वह माध्यम है जिसमें बच्चा न केवल सीखता है, बल्कि स्वयं को महसूस करता है। यही भाषा उसे अपनी जड़ों, लोककथाओं, परंपराओं और मूल्यों से जोड़ती है। जब विद्यालय बच्चे की भाषा और पहचान को सम्मान देता है, तो बच्चा भी विद्यालय, सीखने और स्वयं पर विश्वास करना सीखता है।

वैश्विक संदर्भ: विकसित राष्ट्र मातृभाषा को क्यों अपनाते हैं? दुनिया के कई विकसित राष्ट्र इस बात को भली-भांति समझते हैं कि बच्चों का सर्वश्रेष्ठ विकास तभी होता है

जब सीखने की शुरुआत मातृभाषा से की जाए। इसलिए प्रतिस्पर्धा में अग्रणी देशों ने शिक्षा प्रणाली में मातृभाषा को केंद्र में रखा है:

इजराइल — प्राथमिक शिक्षा पूरी तरह हिन्दू भाषा में भाषा को राष्ट्रीय पहचान और एकता का स्तंभ माना जाता है। बच्चों को पहले अपनी भाषा में मजबूत नींव, फिर अन्य भाषाएँ जापान — प्राथमिक शिक्षा का माध्यम जापानी (निहोंगो)। पढ़ाई, गतिविधियाँ और नैतिक शिक्षा — सब अपनी भाषा में। परिणामस्वरूप बच्चे गणितीय तर्क और विश्लेषण में विश्व स्तरीय दक्ष। चीन — शुरुआती शिक्षा लगभग पूर्णतः मंदारिन में। मातृभाषा के माध्यम से संज्ञानात्मक और तार्किक कौशल मजबूत, बाद में अंग्रेजी और अन्य वैश्विक भाषाएँ — अत्यधिक प्रगति।

इन तीनों देशों की सफलता एक ही बात की ओर संकेत करती है —

मजबूत मातृभाषा = मजबूत बौद्धिक नींव = वैश्विक दक्षता।

भारतीय परिप्रेक्ष्य — मातृभाषा और राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एनईपी) 2020

भारत का भाषाई परिदृश्य विविध और अद्वितीय है। इसीलिए राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 (एनईपी 2020) ने स्पष्ट रूप से उल्लेख किया है कि —

प्राथमिक कक्षाओं (कम से कम कक्षा 5 तक और जहाँ संभव हो कक्षा 8 तक) में शिक्षण का माध्यम मातृभाषा / स्थानीय भाषा / क्षेत्रीय भाषा होना चाहिए।

इसके साथ तीन-भाषा सूत्र बच्चों को मातृभाषा के साथ हिन्दी/अन्य भारतीय भाषा और अंग्रेजी में दक्ष बनाता है — यानी स्थानीय जड़ें + वैश्विक पंख।

यह मॉडल वही है जिसे विकसित देशों में सफलता के मूल सूत्र के रूप में अपनाया गया है। मातृभाषा आधारित शिक्षा के लाभ स्पष्ट होने के बावजूद इसे व्यवहार में लागू करने में कुछ चुनौतियाँ सामने आती हैं, जैसे स्थानीय भाषा में दक्ष प्रशिक्षित शिक्षकों की कमी, बहुभाषी शिक्षण सामग्री की सीमित उपलब्धता, अंग्रेजी के प्रति सामाजिक प्रतिष्ठा की भावना और नीतिगत अस्थिरता। इन चुनौतियों के समाधान भी उतने ही स्पष्ट हैं — स्थानीय भाषा में पारंगत

शिक्षकों की तैयारी और भर्ती, डिजिटल तकनीक की मदद से बहुभाषी शिक्षण सामग्री का विकास, माता-पिता और समुदाय को मातृभाषा के शैक्षणिक लाभों के प्रति जागरूक करना, और सबसे महत्वपूर्ण, शिक्षा नीति में मातृभाषा को स्थायी प्राथमिकता देना। यदि इन दिशाओं में गंभीरतापूर्वक और सतत प्रयास किया जाए, तो मातृभाषा आधारित शिक्षा को प्रभावी और व्यापक रूप से लागू करना पूरी तरह संभव और व्यवहारिक है।

निष्कर्ष: एक सशक्त पीढ़ी का आधार

प्राथमिक शिक्षा में मातृभाषा का उपयोग केवल एक शैक्षणिक व्यवस्था नहीं — समानता, समावेशन और उत्कृष्टता की दिशा में उठाया गया कदम है। जब बच्चे अपनी सोच, सपनों और भावनाओं की भाषा में सीखते हैं, तो उनका सीखना गहरा, स्थायी और आनंदपूर्ण बनता है।

ऐसी शिक्षा ही आगे चलकर उन नागरिकों को जन्म देती है जो आत्मविश्वासी, जिज्ञासु, रचनात्मक, संवेदनशील और बौद्धिक रूप से सक्षम होते हैं — और यही किसी भी राष्ट्र की वास्तविक शक्ति है। ‘जब बच्चों को मातृभाषा में सीखने का अवसर मिलता है, तब वे केवल अक्षर नहीं पढ़ते — वे सोचने, अभिव्यक्त करने और दुनिया को नई दृष्टि से देखने का साहस पढ़ते हैं।’

संघर्ष

- जानवी पटेल,
अनुसंधान सहयोगी



पैदा करने के लिए माँ ने किया वो?
या तुमने चलने में किया वो?
लड़की ने दुनिया में आने के लिए किया वो?
या लड़के ने जीने के लिए किया वो?
बाप ने घर चलाने में किया वो?
या तुमने नाम रोशन करने में किया वो?
गरीब ने पेट भरने के लिए किया वो?
या अमीर ने पेट कम करने के लिए किया वो?
ऐसे प्रत्येक प्रश्नों के उत्तर को, कहते तो हम संघर्ष हैं।
पर सुना है, खुद के लिए उत्तर संघर्ष है, किन्तु, अन्यों के लिए नसीब।

ज़िंदगी का सोपान

श्री दामजीभाई सोलंकी,
पिताजी, सुश्री नीलम वाढेर



एक शायर ने अच्छी शायरी लिखी है –

**सीढ़ी समझकर चढ़ता था इस ज़िंदगी को
थक गया, बैठ गया, लेट गया तो अरथी बन गई।**

हर किसी की सोच ऐसी ही है। जोश-जोश में अंधी दौड़ लगाकर सीढ़ी चढ़ना चाहता है, बाद में थक कर बैठ जाता है, कुछ हासिल कर नहीं पाता और हार जाता है। ज़िंदगी में ऊँचाई तक पहुँचने के लिए सीढ़ी के हर एक सौपान को नापना जरूरी है। यह कोई अद्यतन बिल्डिंग की सीढ़ी नहीं है कि हम उसे एक ही लय में चढ़ सकें। ज़िंदगी की सीढ़ी के सोपान अलग-अलग ढंग से बने हुए होते हैं। किसी सोपान की ऊँचाई ज्यादा या कहीं सोपान इतना छोटा होता है जहाँ हमारा पाँव भी ठहर नहीं सकता। तो हर सोपान को देखकर हमें अपना पाँव उठाना पड़ता है। जो भी इसी सोच एवं तैयारी के साथ कदम उठाता है वे अपनी मंजिल तक पहुँच जाते हैं।

यहाँ सीढ़ी को माध्यम बनाकर जीने की राह बताई है। जीवन मे आया हर एक सोपान चाहे मुश्किल हो, चाहे सरल हो, हर एक का मापदंड लगाकर जीयोगे तो अपना जीवन सरल बना सकते हैं। ज़िंदगी जीने के लिए हर चीज की ज़रूरत पड़ती है, लेकिन अपनी ज़रूरत से ज्यादा नहीं। बहुत ज्यादा पैसा हो, मिलकर्ते हो, मोटर-गाड़ी, बंगला हो, जीने के लिए इन सबकी ज़रूरत पड़ती है। हमारे पास ये सब कुछ हो लेकिन यह सोचना पड़ेगा कि हमने कौन-से सोपान (अपनी मुराद) पर पाँव रखकर ये सब हासिल किया है। ये सब कुछ जो हमें प्राप्त हैं वे तन की सुखाकारी के लिए हैं। ये सब भौतिक सुख की लालसा है। मन की सुखाकारी के लिए हमें आध्यात्मिकता से हमारा हर एक कदम उठाना पड़ेगा। जहाँ हमें कठिनाइयाँ आती हैं, कहीं पर हमें खुशी मिलती है, कई बार हमें अति आनंद की अनुभूति होती है। इन सारी

परिस्थितियों को एकरूप करके झेलेंगे तो हमें अच्छी ज़िंदगी जीने का एहसास होगा। हर किसी की तकदीर अपने चुने हुए सोपान पर आधारित है। तो क्यों न हम हमारी इस ज़िंदगी या अगली ज़िंदगी की नई तकदीर न बनाएं?

**"जीना जीना है, मरना मरना है,
हमारी तकदीर है कि दोनों के बीच रहना है,
और सही सोपान को चुनना है।**

जल, जीवन, आत्मा

श्रीमती कुमुद वर्मा,
पत्नी, प्रोफेसर संजय वर्मा



हे जल किसके अधीन हो तुम?
समेटे हो स्वयं मैं बहुत कुछ।
गंगा के रूप में बहते हो तो संजीवनी लेकर,
मुक्त नहीं कर पाते स्वयं को आत्मा की तरह।
वह जकड़ी है - एक शरीर में।
लेती है रूप स्त्री, पुरुष व बच्चे का
तुम क्या करते हो?

क्षार युक्त हो जाते हो सागर बनकर,
कभी-कभी बहते हो गंदा लेकर,
नाले के रूप में परन्तु आत्मा के साथ जब
शरीर लिप्त हो व्यस्तों में तब क्या कहा जाए उसे?

पवित्र आत्माएँ अभिभूत होती हैं,
संत, ऋषि, मुनि, तपस्वी की तरह,
व्यसनी पापी को क्या कहा जाए?
शायद यही नाम रूप होता है आत्मा का।
क्या बेनाम भी होती है? शुद्ध जल की तरह।

ऑपरेशन सिंदूर

प्रीति नांगल,
अकादमिक सहयोगी



जब कुछ लोग बस छुट्टियाँ मनाने कश्मीर जाते हैं और उनमें से कुछ लोग आतंकियों के हाथों अपनी जान गवाँ देते हैं। पर्यटकों की जानें उस दिन हमेशा के लिए बुझ गईं, उनसे उनका जीवन छीन लिया गया ऐसे आतंकी कृत्य से पूरा देश गुस्से में था। उसी समय भारतीय सेना ने इस बदले की कार्रवाई का नाम ऑपरेशन सिंदूर रखा। इस ऑपरेशन का नाम पीएम मोदी ने खुद दिया। बता दें कि पहलगाम हमले के बाद पीएम मोदी ने तीनों सेनाओं के चीफ के साथ कई बैठकें की थीं। इन गुप्त बैठकों में पीएम मोदी ने साफ संदेश दिया था कि पहलगाम हमले में आतंकियों ने हमारी कई महिलाओं को विधवा किया और पुरुषों को मारकर सिंदूर मिटाया है। हमें इसका जवाब देते हुए बड़ी कार्रवाई करनी है।

ऑपरेशन सिंदूर के लिए नागरिकों को तैयार करने के लिए कई क्षेत्रों में मॉक ड्रिल कराई गई। यूँ कहें तो, इन ड्रिलों की वजह से लोगों को एहसास हुआ कि मानों हम दो कदम ही दूर हों आतंक का सफाया करने में। सब आपस में एक दूसरे को सतर्क करते रहते थे कि एक हफ्ते का खाने का सामान व टॉर्च आदि अपने पास संजोकर रखना, कभी भी काम पड़ सकता है। ड्रिल होती थी तब रातों को ब्लैक आउट कर दिया जाता था, रोशनी बिलकुल बंद। सबको लगा था कि हमें केवल अभ्यास कराया जा रहा है। परंतु ऐसी ही एक मॉक ड्रिल के दौरान सर्जिकल

स्ट्राइक कर दी गई और खबरें मिलीं कि पाकिस्तान के कई स्थान ध्वस्त कर दिए गए हैं। जैसे-जैसे खबर फैलती गई सारे लोग चिंतित होने लगे थे। फिर यूएसए के राष्ट्रपति डॉनाल्ड ट्रम्प ने श्रेय लेने के लिए कहा कि स्ट्राइक रोक दी गई है और दोनों देश सुलह करने को तैयार हैं ऐसे बयान सोशल मीडिया पर जारी कर दिए।

दो देशों के बीच मनमुटाव या युद्ध में भले ही किसी तीसरे ने बीच में आकर श्रेय लेना चाहा, पर घड़ी भर के लिए लोगों ने चैन की साँस ली। ऑपरेशन सिंदूर को लेकर भारत सरकार ने प्रयास किए कि आम नागरिकों को इस ऑपरेशन के बारे में जितनी जानकारी हो दी जाए। फिर भी, स्ट्राइक को लेकर और पाकिस्तान की जवाबी कार्रवाई को लेकर एआई के जमाने में झूठी खबरों का भी भरपूर इस्तेमाल किया गया।

यह ऑपरेशन भारतीय सशस्त्र बलों द्वारा की गई एक सटीक और गैर-उत्तेजक सैन्य कार्रवाई है, जिसका उद्देश्य पाकिस्तान और पाकिस्तान-अधिकृत कश्मीर (पीओके) में

मौजूद आतंकवादी ढाँचे को निशाना बनाना था। पहलगाम आतंकी हमले के जवाब में शुरू किया गया यह अभियान, पाकिस्तानी सैन्य संपत्तियों के साथ किसी भी प्रकार के संपर्क से बचते हुए, अपराधियों को जवाबदेह ठहराने की भारत की प्रतिबद्धता को रेखांकित करता है। ऑपरेशन सिंदूर भारत के आतंकवाद से लड़ने के दृढ़ संकल्प को दर्शाता है, जिसमें केवल आतंकवादी ढाँचे को



सटीकता और संयम के साथ निशाना बनाया गया है, ताकि स्थिति को बढ़ने से रोका जा सके। यह एक स्पष्ट संदेश देता है कि भारतीय नागरिकों पर हमले बर्दाशत नहीं किए जाएंगे और इसके जिम्मेदार व्यक्तियों को केंद्रित और जिम्मेदार सैन्य कार्रवाई के माध्यम से जवाबदेह ठहराया जाएगा।

बता दें कि भारत ने मुजफ्फराबाद, कोटली और बहावलपुर में आतंकी ठिकानों पर बड़ा मिसाइल हमला किया। इस हमले में सभी आतंकवादी अड्डों को ताकतवर बमों से पूरी तरह नष्ट कर दिया गया। इस हमले में लगभग 250 आतंकी और उनके परिजनों के मारे जाने की सूचना है। जानकारी के मुताबिक भारत ने हमला 7 मई की रात 1:45 बजे के करीब किया। यह ऑपरेशन पूरी तरह गोपनीय रखा गया और अचानक हमला कर आतंकियों के कई अड्डों को नष्ट किया गया। भारत ने यह हमला अपनी सीमा के अंदर रहकर किया, यानी किसी अंतरराष्ट्रीय नियम का उल्लंघन नहीं हुआ। भारतीय वायुसेना ने जिन आतंकवादी अड्डों को निशाना बनाया, उनमें बहावलपुर, मुरीदके और सियालकोट और कोटली व मुजफ्फराबाद जैसे इलाके शामिल हैं। इन इलाकों में जैश-ए-मोहम्मद और लश्कर-ए-तैयबा जैसे आतंकी संगठनों के ट्रेनिंग केंप और अड्डे मौजूद थे। सेना के मुताबिक, यह एक सटीक, संतुलित और सीमित दायरे का ऑपरेशन था। इसका मकसद सिर्फ आतंकवादियों के ठिकानों को निशाना बनाना था, न कि पाकिस्तान की सेना को। हमले में किसी भी पाकिस्तानी सैन्य ठिकाने को नुकसान नहीं पहुँचाया गया।

ऑपरेशन सिंदूर विषम युद्ध (सैन्य कर्मियों के साथ-साथ निहत्थे नागरिकों को निशाना बनाना) के उभरते स्वरूप के लिए एक संतुलित सैन्य प्रतिक्रिया के रूप में सामने आया है। अप्रैल 2025 में पहलगाम में पर्यटकों पर आतंकवादी हमला इसी स्वरूप की याद दिलाता है। इसके बाद भारत की प्रतिक्रिया सतर्क, सटीक और रणनीतिक थी। नियंत्रण रेखा या अंतर्राष्ट्रीय सीमा को पार किए बिना, भारतीय सेना ने आतंकवादी ढांचे पर हमला कर कई खतरों को खत्म कर दिया। हालांकि सामरिक प्रतिभा से परे इसमें सबसे खास बात स्वदेशी हाई-टेक प्रणालियों का राष्ट्रीय रक्षा में निर्बाध एकीकरण थी। चाहे ड्रोन युद्ध हो, बहुस्तरीय हवाई सुरक्षा हो या इलेक्ट्रॉनिक युद्ध, ऑपरेशन सिंदूर सैन्य अभियानों में तकनीकी आत्मनिर्भरता की दिशा में भारत की यात्रा में एक महत्वपूर्ण उपलब्धि है।

बिखरा हुआ संसार और सबको समेटती वो

- प्रगति काढी,
अकादमिक सहयोगी



बिखरा हुआ संसार, बिखरे हैं सपने, टूटे हैं रिश्ते, सहमे हैं अपने। संघर्ष की आँधियाँ रोज़ चलती हैं, आशाओं की किरण भी धुँधली-सी लगती है।

पर वो आती है धैर्य की सूरत, ममता की गूँज, प्रेम की मूरत। टूटे हुए दिलों को जोड़ती चली, बुझते दीपों को रोशन करती चली।

कभी माँ की ममता, कभी बहन का साथ, कभी बेटी की मुस्कान, कभी संगिनी का विश्वास। हर रूप में सम्बल, हर रूप में प्रकाश, नारी के बिना अधूरा हर इतिहास।

अपने आँसुओं से सींचा है जीवन, हर ठोकर पर सीखा है चलना। संघर्ष की आग में खुद को तपाया, हर कोने-कोने में खुद एक नया रास्ता बनाया।

वो खुद भी लड़ी, हर ज़ंजीर तोड़ी, अपने ही घावों पर मुस्कान ओढ़ी। संघर्ष से सोना बनी बार-बार, हर रूप में सृजन, हर रूप में आधार।

बिखरे संसार को वो सँवारती रही, संवेदना के दीपक जलाती रही। नारी है वो, शक्ति है, सृष्टि का सार, हर युग में बदलती इतिहास की धार।

किताबें हमारी सबसे अच्छी दोस्त हैं

नवनाथ पवार,
सहायक पुस्तकालयाध्यक्ष



मानव सभ्यता के इतिहास को अगर हम गंभीरता से देखें तो किताबों की खोज आज तक की सबसे बड़ी खोज है। किताबों ने न सिर्फ यादों, अनुभवों को शब्दों के रूप में संभाल कर रखा, उन्होंने मानव इतिहास को अपने अंदर संरक्षित किया। अगर आप 18वीं सदी की किताब पढ़ते हैं, तो उस सदी के दरवाजे आपके लिए खुल जाते हैं। अभी शेक्सपीयर जैसे महान नाटककार को मिलने का सौभाग्य उनकी किताबों में ही मिलता है। हेमलेट की विवेचना आज भी वैश्विक है।

किताबें हमारी सबसे अच्छी दोस्त हैं। क्योंकि अच्छे दोस्त की तरह वे सुख-दुख में आपके साथ रहती हैं। वे आपसे किसी लाभ की अपेक्षा नहीं करतीं। हर मोड़ पर वे आपके लिए योग्य सलाह देती हैं। उपन्यासों, कविताओं के माध्यम से आप नए-नए अनुभव प्राप्त कर सकते हो, कई जिंदगियाँ जी सकते हो, जो कि एक जन्म में जी पाना मुश्किल है। कोलंबस के प्रवास वर्णनों से, या किसी मुसाफिर के यात्रा-वृत्तांत से आप दुनिया के दूसरी छोर का सफर कर सकते हो। जब कोई लेखक किसी शहर का, किसी देश की तत्कालीन परिस्थितियों का लेखा-जोखा किताब में दर्ज करता है, अगली पीढ़ियों के लिए, सीखने के लिए, इतिहास को न दोहराने के लिए, वह दस्तावेज होता है। महात्मा गांधीजी की जीवनी पढ़कर उनका बचपन, उनका संघर्ष, उस समय के हालात हमें प्रतिकूल परिस्थितियों से लड़ने का हौसला देते हैं।

किताबें अच्छी दोस्त की तरह आपकी पसंद के लिए आपको अच्छा-बुरा नहीं ठहराती। आपको सुरेंद्र मोहन पाठक के जासूसी उपन्यास पसंद हैं, या फिलॉसफी के जटिल प्रश्नों की किताब इससे आपके दोस्त को फर्क नहीं पड़ता, आप कोई भी किताब बिना किसी रोक-टोक के पढ़ सकते हो।

अच्छे दोस्त की तरह किताबें आपसे संवाद करती हैं, हालांकि यह संवाद आत्मसंवाद के रूप में आपको खुद के विचारों को तराशने में मदद करता है। आप किसी विडंबना से ग्रस्त हों, कोई समस्या हो, उसका हल किताबों में मिल सकता है। संभव है आपकी समस्या कोई नई न हो, शताब्दी के किसी लेखक ने उसका हल ढूँढ़ रखा हो, आपको बस सही किताब खोजनी है।

सच्चा दोस्त आपका हौसला बढ़ाता है, स्वयं-विकास की किताबें आपको उचित मार्ग दिखाती हैं। इतिहास के गौरवशाली चरित्रों से आपका साहस बढ़ाती है, जो चुनौतियाँ सामने हैं, उनसे लड़ने का सामर्थ्य प्रदान करती हैं। अगर आँखों की रोशनी न होते हुए भी, हेलन केलर पढ़ना सीख सकती हैं, तो आप भी इस ब्रेल किताब से पढ़ सकते हो। यह किताब दृष्टिहीन युवकों को हौसला देती है।

एक सच्चा दोस्त आपके सामने नए-नए अनुभव साझा करता है। आपको भावनात्मक रूप से समृद्ध करता है। आप भावनाओं से ओतप्रोत किसी कविता को पढ़ते ही हर्ष से वाह कहते हैं। प्रेमचंद की कहानियाँ, जैसे 'कफन', 'ईदगाह', आपको भावनात्मक रूप से अंदर से हिला देती हैं। ये अनुभव समय, देश से परे आपको किताबों से ही मिलते हैं। हर एक देश को दोस्त बनाना मुश्किल है, लेकिन आप हर एक देश के बेहतरीन लेखक की किताब पढ़कर उनसे दोस्ती कर सकते हैं। इसी प्रकार मैंने टॉलस्टॉय, डिकेन्स और मुराकामी की किताबों से रूस, अमेरिका और जापान के दोस्त बनाए हैं। किताबें आपको हर संस्कृति, रहन-सहन की जानकारी, परंपराओं से रूबरू होने का अवसर देती हैं।

किताबें आपकी सोच को बदलती हैं। कभी-कभी किसी किताब को पढ़कर आपके जीवन की राह पूर्णतः बदल जाती

है। महात्मा गांधीजी ने दक्षिण अफ्रीका में ‘अन्तू द लास्ट’ किताब पढ़ी और उन्होंने समाज सेवा के लिए खुद का जीवन समर्पित कर दिया। थॉमस एडिसन ने बचपन में रेल के डिब्बे में विज्ञान की किताबें पढ़कर विज्ञान के क्षेत्र का रास्ता चुना। बाबासाहेब आंबेडकर लंदन के विश्वविद्यालय में भूखे पेट घंटों किताबें पढ़ते रहते थे। उन्होंने मुंबई का अपना घर किताबों के लिए ‘राजघर’ बनाया। भारतीय संविधान के निर्माता बने।

पुस्तकालय की इमारत में किताबें स्थल-काल के बंधन तोड़कर आप से बातें करने के लिए तैयार होती हैं। किताबें पढ़ना यानी उस लेखक से बातचीत करना। कभी-कभी आपके दोस्त के पास संयम न हो, आपसे नाराज हो जाए, लेकिन किताबों के पास बहुत संयम है, वे आपसे नाराज नहीं होंगी। जब तक आप चाहें वही बात दोहरा सकते हैं, वही पन्ना दुबारा पढ़ सकते हैं। हर बार कुछ-न-कुछ नया हासिल होगा।

आपके मानवीय दोस्त के पास हर विषय का ज्ञान न हो, किताबें जैसे कि विश्वकोश आपको हर भाँति के ज्ञान से परिचित करा देगा। किताबों में विज्ञान की बातें होती हैं, वैश्विक जलवायु परिवर्तन की बातें होती हैं, कला, संगीत की होती हैं और हमारे आम जीवन की भी। अच्छी किताब पढ़कर जब उसे आप पुस्तकालय में लौटाते हैं, तो एक प्रिय दोस्त से बिछुड़ने का अहसास होता है। जिस किताब को आप दुबारा पढ़ना चाहते हैं तो इससे किसी पुराने दोस्त से मिलने की तरह आनंद प्राप्त होता है। सफदर हाशमी ने कहा है—

“किताबें कुछ कहना चाहती हैं,
क्या आप सुनना चाहेंगे?”



“मैं उन लोगों में से हूँ, जो चाहते हैं और
जिनका विचार है कि हिंदी ही भारत की
राष्ट्र भाषा हो सकती है।”

बाल गंगाधर तिलक

नन्हा पवंश

- डॉ कृतिका टेकवानी,
अकादमिक सहयोगी



पवंश, मेरे नन्हे तारे, मेरे दिल के सबसे प्यारे, तेरी हर मुस्कान में चमकता है आसमान, जैसे खुद भगवान ने छू लिया मेरी जान।

तू आया तो घर में खुशियाँ ही खुशियाँ छा गईं, तेरी छोटी-छोटी हरकतों से दुनिया महका गई। तेरे कोमल कदमों की आहट में है संगीत, जैसे हवा की मीठी सरसराहट हो प्रीत।

तेरी आँखों में दुनिया की मासूमियत बसती है, उनमें चमकती किरणें जैसे चाँदनी हँसती हैं। जब तू अपनी आँखे मींचकर मुस्कुराता है, तो मानो पूरा ब्रह्मांड हम पर मुस्कुराता है।

पवंश, तू अभी नन्हा है, पर तेरी बातें गहरी, तेरी किलकारियाँ जैसे फूलों पर गिरती है लहरी। तेरे हाथों की पकड़ में है हमारा सारा संसार, तेरी हर हलचल बन जाती है हमारे दिल का त्योहार।

तू बढ़ता रहे, खिलता रहे, हर दिन नया सीखता रहे, तेरी हँसी से मिट जाए दुनिया की हर थकान, तू बनकर रहे हमेशा हमारा अभिमान।

हमारी दुआओं की छाया तुझ पर हर पल रहे, तू जहाँ भी जाए, खुशियों के फूल तेरे संग चले। तेरी राहें हों उजली, तेरे सपने हों बड़े, और तू हमेशा प्यार से, स्नेह से बढ़ता रहे।

पवंश, मेरे लाल, तू लाडला, तू हमारी जान, तेरे साथ ही पूरा होता है हमारे जीवन का अरमान। तेरे बिना ये घर अधूरा, तेरे बिना हर पल खाली, तू है हमारा सूरज, हमारी सुबह, हमारी मधुराली।

ईश्वर करे तू फूले-फले, जग में अपनी पहचान बनाए, अपनी मुस्कानों से हर दिल में प्रेम की छाप सजाए। दुनिया में तू बने वो किरण जो अँधेरों को हराए, और अपने कर्मों से सबके जीवन में उजाला फैलाए।

पवंश, मेरे नन्हे, मेरे चाँद, मेरे छोटे से राजकुमार... तू है हमारा गर्व, हमारी जिंदगी, हमारा प्यार अपार।

अंतर्राष्ट्रीय टैरिफ और आर्थिक लेखा जोखा

चंद्रशेखर सोलंकी
प्रबंधक, गृहप्रबंध



नीति और राजनीति के क्षेत्र में अंग्रेजी कहावत सुप्रसिद्ध है – राजनीति के क्षेत्र में ना तो कोई स्थायी मित्र है और न ही कोई शत्रु। (In the field of politics, there is no permanent friend and no permanent enemy)

इस कहावत को यदि हम कुछ समय से चल रहे भारत-अमेरिका के टैरिफ युद्ध पर अमल करना चाहें तो कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी। इस टैरिफ युद्ध को अंतर्राष्ट्रीय टैरिफ के इतिहास में सबसे अनोखे युद्ध के रूप में समझना होगा। इससे पहले अंतर्राष्ट्रीय व्यापार और आर्थिक लाभ व हानि की अवधारणा को बारीकी से समझना आवश्यक है।

विश्व स्तर पर जब दो देश एक-दूसरे से उत्पाद, सामग्री और सेवाओं का आयात-निर्यात करते हैं तो आयात करने वाला देश कई बार उन उत्पादों पर छूट प्रदान करता है, जिससे उस देश के नागरिक अपनी न्यूनतम आवश्यकताओं की सामग्री बिना परेशानी एवं कम दामों पर खरीद सकें। वहीं कई बार कुछ उत्पाद जिनका उत्पादन उनके स्वयं के देश में हो रहा है लेकिन उत्पादन में कमी के कारण किसी दूसरे देश से भी उस उत्पाद का आयात करता है। इस स्थिति में एक समय ऐसा आता है जब आयात करने वाला देश अपने उद्योगों को प्रोत्साहन एवं बढ़ावा देने के लिए आयात शुल्क बढ़ा देता है, जिसे उत्पादन का संरक्षण (Protectionism) कहा जाता है। इससे कुछ हद तक स्थानीय सामग्री पर आयात करने वाला देश कस्टमड ड्यूटी (customs duty) आदि लगाता है।

आर्थिक लाभ व हानि के दृष्टिकोण से टैरिफ बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। जरूरत के सारे उत्पादों पर नियंत्रण रखने तथा घरेलू उद्योगों को संरक्षण देने के लिए नियम एवं नीति के अनुसार टैरिफ लगाए जाते हैं। टैरिफ

लगाने की स्थिति में निर्यात करने वाले देश की अर्थव्यवस्था बुरी तरह से चरमरा जाती है। क्योंकि अभी तक जो देश का घरेलू उत्पादन निर्यात के तौर पर दूसरे देशों को भेजा जाता था, अब टैरिफ लगाने के बाद वो अचानक उपयोग के लिए नया बाजार कहाँ से ढूँढ़े। देश के आंतरिक या यूँ कहें घरेलू उपयोग के लिए जितने रास्ते खोले जाएँ, तब उस स्थिति में अर्थव्यवस्था संभाली जा सकती है। वरना देश के फौरन रिजर्व समाप्त हो जाते हैं तथा आर्थिक विकास की प्रक्रिया धीमी हो जाती है।

अब इसको हम भारत-अमेरिका के टैरिफ युद्ध द्वारा समझ सकते हैं। भारत-अमेरिका जो कई वर्षों से ऐतिहासिक तौर पर बहुत अच्छे आर्थिक और कूटनीतिक सम्बन्ध बनाए हुए हैं, पिछले कुछ वर्षों के बीच में उत्तर-चढ़ाव देखने को मिला है। भारत कच्चे तेल (crude oil) की जरूरत के लिए बहुत समय से रूस पर निर्भर रहा है और देश की ऊर्जा सुरक्षा के लिए सस्ते दर पर तेल का आयात करता रहा है। यह जगजाहिर है कि पिछले 2-3 वर्षों से रूस और यूक्रेन लगातार युद्ध में संलग्न रहे हैं। इस स्थिति में भारत को अपनी घरेलू जरूरतों के लिए सस्ते दर पर तेल खरीदना अत्यंत आवश्यक है। अमेरिका का मानना है कि इस तरीके से भारत सस्ते दर से तेल खरीदकर रूस-यूक्रेन युद्ध में रूस का समर्थन कर रहा है और रूस की अर्थव्यवस्था को मजबूत कर रहा है। भारत-अमेरिका व्यापार संबंधों में 50% टैरिफ के कारण तनाव है और बातचीत के बावजूद समझौता नहीं हो पाया है। मुख्य विवाद कृषि और दुग्ध क्षेत्र को खोलने को लेकर है, जिसे भारत किसानों और खाद्य सुरक्षा के हित में स्वीकार नहीं कर सकता। रूस से तेल आयात पर दबाव के बावजूद भारत अपनी ऊर्जा नीति पर कायम है।

इन घटनाक्रम में आगे बढ़ते हुए 22 अप्रैल 2025 को

जब आतंकियों ने पहलगाम में आतंक फैलाते हुए 26 निर्दोष हिन्दू सैलानियों की नृशंस हत्या की। इस आतंकी कार्रवाई के लिए भारत ने सख्त कदम उठाते हुए पाकिस्तान के खिलाफ कड़ा रुख अपनाया और विभिन्न कूटनीतिक व सैन्य कदम उठाए। पाकिस्तान द्वारा समर्थित कई आतंकवादी ठिकानों को ध्वस्त किया। लगातार कई दिन तक चले ऑपरेशन के बाद जब भारत-पाकिस्तान युद्ध विराम (Ceasefire) की घोषणा की तब अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प ने यह ऐलान किया कि भारत-पाकिस्तान के बीच युद्धविराम होने में उनकी निर्णायक भूमिका एवं मध्यस्था रही थी जिसे भारत ने पूरी तरह से नकार दिया। अमेरिकी सरकार द्वारा सभी भारतीय उत्पादों पर 50 प्रतिशत टैरिफ लागू किया गया जिसने पूरे विश्व को चौंका दिया, किंतु भारत अब इनके बारे में सजग हो रहा है।

कुछ समय पहले प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी द्वारा जीएसटी उत्सव के दौरान देश में वस्तुओं की कीमतों पर जीएसटी दरों में भारी कमी की है। जिससे मध्यम वर्ग एवं निम्न वर्ग के परिवार घरेलू उपयोग के सामान की खरीद आसानी से कर सकें। उन्होंने लघु, सूक्ष्म एवं मध्यम उद्योगों को भी प्रोत्साहित किया है जिससे वे उत्साह के साथ उत्पादन में जुटे रहें। मुश्किल समय में यह जरूरी है कि पूरा देश साथ खड़ा होकर इस समस्या का डटकर मुकाबला करे। चाहे कोई भी शक्ति कितनी भी कोशिश करे लेकिन हमारा देश भारत हमेशा आगे की ओर ही बढ़ेगा और नए आयामों को छूएगा। हमें हमेशा यह याद रखना चाहिए—

“यूनान, मिस्र, रोमन सब मिट गए जहाँ से,
कुछ बात है कि हस्ती मिट्टी नहीं हमारी,
सदियों रहा है दुश्मन दौरे जमाँ हमारा।



“ हिंदी हमारे देश और भाषा
की प्रभावशाली विरासत है। ”
माखनलाल चतुर्वेदी

अपना था, मेरा है

-अभिषेक वर्मा,
अकादमिक सहयोगी



घर था, खिड़कियाँ थीं, परदे थे, पड़ोसी थे,
परस्पर संवाद था।

अँगन था, छोटे-बड़े सभी आते थे,
बैठते थे, सुनते थे, सुनाते थे। अहाता था, गमले थे,
बच्चे खेल-कूद में ही बहुत कुछ सीख लिया करते थे।
आम का पेड़ था—अमिया, अचार, चटनी, पापड़, पत्ते,
अमूमन सब कुछ साझा होता था।

पीपल का चबूतरा था, बरगद पर चिड़ियों का बसेरा था,
बाग-बगीचों में, हर्ष-शोक, तीज-त्योहार, उत्सव-उल्लास,
खुली हवा, नीला आकाश था।

अब शहर में एक कमरा है, काँच लगी खिड़कियाँ हैं,
परदे अब जालीदार हैं,
पर पता नहीं—हमारा पड़ोसी कौन है?

यहाँ एक बालकनी है, बादलों से बातें करने को,
कुछ पौधे लगाने को, कपड़े सुखाने को।
जिसे आज सुकून से बैठना कहते हैं,
यही थोड़ी-सी जगह बची है बताने को।
कमरे के बाहर सड़क है,
सड़क पर वाहन ही वाहन हैं,
जो धीरे चलते हैं, उन्हें भी हम तेज़ भगाते हैं।

हमने गाड़ियाँ बड़ी कर ली हैं, बैठता है उसमें मेरा परिवार,
जो बची है थोड़ी-सी जगह बाहर कहीं,
निशान लगाकर कर देते हैं गाड़ियाँ खड़ी वहीं।

चलने में अब डर लगता है, शाम हो या सुबह।
देख सड़क पसीना आता है।
घर छूटा, परिवार बिखरा नजर आता है। अपना भुलाया,
मैंने क्या पाया - समझ नहीं आता है।

अंतर्राष्ट्रीय पुरुष दिवस

विनय शर्मा,
नरिंगा अधिकारी



महिला दिवस की तर्ज पर ही पूरे विश्व में अंतर्राष्ट्रीय पुरुष दिवस भी मनाया जाने लगा है। पहला अंतर्राष्ट्रीय पुरुष दिवस 1999 में 19 नवम्बर को डॉ. जेरोम तिलक सिंह ने त्रिनिदाद और टोबैगो में मनाया था। दुनिया के 30 से अधिक देशों में यह दिवस मनाया जा रहा है। यह केवल पुरुषों का उत्सव नहीं बल्कि बदलते सामाजिक परिदृश्य में उनकी स्थिति, संघर्षों और मनोभावों को समझने का मौका है। जैसे स्नियाँ वर्षों से असमानता, उपेक्षा और अन्याय के बोझ से जूझती रही हैं, वैसे ही आज पुरुष भी कई स्तरों पर अपने शोषण एवं उत्पीड़ित होने की बात उठा रहे हैं। महिलाओं की ही भाँति अब पुरुषों पर भी उपेक्षा, उत्पीड़न एवं अन्याय की घटनाएँ पनपने की बात की जा रही है। वे भी दबाव, अवसाद और सामाजिक पूर्वाग्रहों का सामना कर रहे हैं। दुर्भाग्य यह है कि पुरुषों की पीड़ा, उनके संघर्ष और उनकी संवेदनाएँ उतनी चर्चा का विषय नहीं बनते, जितना कि वे बनने चाहिए। यह दिवस हमें स्मरण कराता है कि समाज केवल स्त्रियों से ही नहीं, पुरुषों से भी बनता है और किसी एक की उपेक्षा पूरे संतुलन को बिगाढ़ देती है। 2025 के लिए इस दिवस की थीम “पुरुषों और लड़कों का उत्सव” है।

आज का पुरुष बदलते समय के साथ एक दोहरी चुनौती से जूझ रहा है। एक ओर उससे पारंपरिक भूमिकाओं को निभाने की अपेक्षा की जाती है, दूसरी ओर नये सामाजिक ढाँचों में भावनात्मक रूप से अधिक संवेदनशील, सहयोगी और सहृदय होने का दबाव है। संघर्ष यह है कि इस परिवर्तन में उसकी पीड़ा, द्वंद्व और टूटन को गंभीरता से नहीं सुना जाता। उसे मजबूत, कठोर और समस्याहरित मान लेने का भ्रम उसकी वास्तविक जरूरतों को छिपा देता है। यही कारण है कि आधुनिक पुरुष स्वयं को कई बार दोयम दर्जे की स्थिति में पाता है। एक ऐसे व्यक्ति के रूप में जिसे समाज जिम्मेदारी तो देता है, पर अधिकार और संवेदना नहीं। पुरुषों

पर हो रहे अत्याचारों की अनदेखी भी चिंताजनक है। घरेलू हिंसा, झूठे मुकदमे, अभिभावकत्व के अधिकार से वंचित होना, मानसिक उत्पीड़न, कार्यस्थलों पर उत्पीड़न – ये सभी वास्तविक समस्याएँ हैं जिन्हें अक्सर मज़ाक या अतिशयोक्ति कहकर टाल दिया जाता है। पुरुष के दर्द को “मर्द को दर्द नहीं होता” जैसी रुढ़ि निगल जाती है। जबकि सच यह है कि भारतीय समाज में पुरुष भी आत्महत्या, अवसाद और मानसिक दबाव के शिकार बन रहे हैं। कई रिपोर्टों में यह तथ्य सामने आया है कि अवसाद और आत्महत्या के मामलों में पुरुषों की संख्या महिलाओं की तुलना में अधिक है, पर इस पर चर्चा समाज की प्राथमिकता नहीं बनती। यह उपेक्षा न केवल अमानवीय है, बल्कि समाज के संतुलन को खतरे में डालने वाली भी है। कुछ वर्ष पूर्व भारत में सक्रिय अखिल भारतीय पुरुष संगठन ने भारत सरकार से यह सवाल उठाया कि महिला विकास मंत्रालय की तर्ज पर पुरुष विकास मंत्रालय का भी गठन किया जाए। इसी तरह उत्तर प्रदेश में भारतीय जनता पार्टी के कुछ सांसदों ने यह मांग उठाई थी कि राष्ट्रीय महिला आयोग की तर्ज पर राष्ट्रीय पुरुष आयोग जैसी भी एक संवैधानिक संस्था बननी चाहिए। इन सांसदों ने इस बारे में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को पत्र भी लिखा था। पत्र लिखने वाले एक सांसद हरिनारायण राजभर ने उस बक्त यह तक दावा किया था कि पत्नी प्रताड़ित कई पुरुष जेलों में बंद हैं, लेकिन कानून के एकतरफा रुख और समाज में हँसी के डर से वे स्वयं के ऊपर होने वाले घरेलू अत्याचार के खिलाफ आवाज नहीं उठा पा रहे हैं।

प्रश्न यह है कि आखिर पुरुष इस तरह की अपेक्षाएँ क्यों महसूस कर रहे हैं? इसका कारण है कि पुरुष अब अपने ऊपर लगे आरोपों एवं उपेक्षाओं से जूझता हुआ अपने अस्तित्व और अस्मिता को ढूँढ रहा है। जबकि आज बदलते वक्त के साथ पुरुष अब अधिक जिम्मेदार और संवेदनशील हो चुका

है। कई युवा पुरुष समाज-निर्माण की बड़ी जिम्मेदारियाँ उठा रहे हैं और अपनी काबिलियत व जुनून से यह साबित भी कर रहे हैं।

समाज हमेशा पुरुष से अपेक्षा करता है कि वह परिवार की रीढ़ बने, आर्थिक व भावनात्मक उत्तरदायित्व निभाए, कठिनाई में ढाल की तरह खड़ा रहे। लेकिन जब वही पुरुष कमजोर पड़ता है, टूटता है, या न्याय चाहता है, तो वह उपेक्षित कर दिया जाता है। पुरुष को यह अधिकार मिलना ही चाहिए कि वह अपनी पीड़ा कह सके, अपने अधिकारों की रक्षा कर सके और झूठे आरोपों से मुक्त हो सके। जिस तरह महिलाओं के लिए सुरक्षा और न्याय के तंत्र बनाए गए हैं, वैसे ही पुरुषों के लिए भी कुछ संवेदनशील और न्यायपूर्ण व्यवस्थाएँ विकसित करने की आवश्यकता है। यह समझना आवश्यक है कि पुरुष समाज के निर्माण का अभिन्न हिस्सा है। वह पिता है, पति है, पुत्र है, भाई है, मित्र है। उसकी उपस्थिति के बिना किसी भी परिवार या समाज की कल्पना अधूरी है। वह जिम्मेदारियों से घिरा व्यक्ति है, लेकिन इसी बजह से वह सबसे अधिक दबाव और अपेक्षाओं का भार उठाता है। यह भी सच है कि पुरुष ही समाज के विकास, विज्ञान, कला, परिश्रम और संरचना के बड़े हिस्से का वाहक रहा है। लेकिन इस योगदान के बावजूद आज पुरुषों की समस्याओं के प्रति संवेदना बढ़ाने की आवश्यकता है।

अंतरराष्ट्रीय पुरुष दिवस का संदेश यही है कि महिलाओं के सम्मान के साथ-साथ पुरुषों के भी गरिमा, सुरक्षा, सम्मान और संवेदनाओं की रक्षा की जानी चाहिए। लैंगिक समानता का अर्थ केवल महिलाओं को सशक्त बनाना नहीं, बल्कि पुरुषों पर बने अनुचित पूर्वाग्रहों को भी तोड़ना है। एक स्वस्थ, संतुलित समाज वही है जिसमें दोनों लिंगों की समस्याओं को समान रूप से सुना और समझा जाए। पुरुषों को कठोरता की बेड़ियों से मुक्त कर, उनके मानवीय अस्तित्व को स्वीकार करना समय की माँग है। पुरुष दिवस हमें जागरूक करता है कि सह-अस्तित्व, सहयोग, संवाद और करुणा ही पुरुष-स्त्री संबंधों का वास्तविक आधार है। आज पुरुष और स्त्री एक-दूसरे के विरोधी नहीं, पूरक हैं। इसलिए उनकी समस्याओं, अधिकारों और जिम्मेदारियों को भी पूरक दृष्टि से ही देखा जाना चाहिए। जब समाज पुरुष की पीड़ा को भी उतनी ही गंभीरता से सुनेगा, जितनी वह स्त्री पीड़ा की चीख पर देता है, तभी हम सच्चे अर्थों में संतुलित और मानवीय समाज का निर्माण कर पाएँगे। महिलाओं के साथ होने वाली घरेलू

हिंसा को रोकने के लिए कठोर कानून भी बने हैं, लेकिन पुरुष भी घरेलू हिंसा का शिकार होते हैं। भारत में अभी तक ऐसा कोई सरकारी अध्ययन या सर्वेक्षण नहीं हुआ है जिससे इस बात का पता लग सके कि घरेलू हिंसा में शिकार पुरुषों की तादाद कितनी है। लेकिन कुछ गैर-सरकारी संस्थान इस दिशा में ज़रूर काम कर रहे हैं।

‘सेव इंडियन फैमिली फाउंडेशन’ और ‘माई नेशन’ नाम की गैर-सरकारी संस्थाओं के एक अध्ययन में यह बात सामने आई है कि भारत में 90 प्रतिशत से ज्यादा पति तीन साल की रिश्तेदारी में कम से कम एक बार घरेलू हिंसा का सामना कर चुके होते हैं। वे भी अपने अस्तित्व की सुरक्षा एवं सम्मान के लिए आवाज उठाना चाहते हैं। यह एक गंभीर विषय है इस पर भारत सरकार के समाज कल्याण मंत्रालय को गंभीरता से विचार करने की आवश्यकता है।

कौन हो तुम

कृपेश पारेख,
पति, वैशाली पारेख, कार्यकारी



कौन हो तुम, क्यों आये हो, जानकर भी क्यों सताते हो,
क्या है जो मिला नहीं, जल, जीवन, वाणी, नियम,
हाथ, पैर और मस्तिष्क, अच्छा बुरा, सही गलत,
समझने की बुद्धि विशिष्ट, फिर भी है ये चित्त विचलित,
जीवन मृत्यु है निश्चित, फिर भी न समझे जीवन की रीत,
कि जीवन है कर्मों का खेल, मोह और माया का मेल,
समय समय पे समझाएगा, जो आया है वो जायेगा,
रहा अगर हिसाब कुछ बाकी, घूम के वापसी यहीं आएगा,
क्यों की जीवन है कर्मों का खेल, मोह और माया का मेल,
कौन अपना कौन पराया, सोच कर है क्यों पछताना,
न ढूँढ़ खुद को तू तितर-बितर,
छुपा है तू खुद के ही अंदर...

मेरी कर्मभूमि: आईआईएम अहमदाबाद

प्रवीण जी. क्रिश्यन
सेवानिवृत्त अधिकारी



मेरे शुरुआती वर्ष

वास्तव में, मैं बचपन से ही आईआईएमए संस्थान से परिचित था क्योंकि मेरे पिताजी ने भी लंबे समय तक यहाँ सेवाएँ प्रदान की थी। वे संस्थान की स्थापना के समय ही संस्थान से जुड़ गए थे। मेरा जन्म और इस संस्थान का जन्म एक ही वर्ष में हुआ। मेरे पिता मुझे कई मौकों पर कैंपस ले आते थे, इसलिए बचपन से ही मैं यहाँ की इमारतों और इसके माहौल से बहुत प्रभावित था। मुझे आज भी अपने पिताजी के साथ संस्थान की वह यात्रा याद है जब मैंने वर्ष 1968 में दीक्षांत समारोह की शोभायात्रा में भारत की तत्कालीन प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरा गांधी को मुख्य अतिथि के रूप में देखा था। एक और याद एक हिंदी फिल्म "परिणय" की शूटिंग की है, जिसमें अभिनेत्री शबाना आजमी और रोमेश शर्मा कलाकार थे; उस समय अभिनेत्री की वैनिटी वैन 'हार्वर्ड स्टेप्स' के प्रवेश द्वार के पास खड़ी थी।

संस्थान से जुड़ना

चूंकि हम एक मध्यमवर्गीय परिवार से थे, इसलिए स्कूली शिक्षा के तुरंत बाद मेरा झुकाव काम करने और परिवार की मदद करने की ओर था। नौकरी पाने का सबसे आसान तरीका टाइपिंग कौशल था, जिसमें मैंने महारत हासिल की और वर्ष 1980 के दौरान मैं इस संस्थान में शामिल हो गया,

जिसे मैंने सफलता का पहला कदम माना। बाद में, मैंने अपनी पढ़ाई जारी रखी और कानून की डिग्री के साथ वाणिज्य में स्नातकोत्तर (एम.कॉम.) पूरा किया।

शुरुआती समय में संस्थान

शुरुआती दौर में, संस्थान का बुनियादी ढांचा मुख्य परिसर, छात्रों के लिए छात्रावास (डोर्मिटोरिस) और कर्मचारी आवास तक ही सीमित था। हालांकि, सन्तर के दशक में केएलएमडीसी का नया परिसर उभरा और कई नए अल्पकालिक कार्यक्रम शुरू हुए।

जब मैं संस्थान में शामिल हुआ, तो मैंने प्लेसमेंट कार्यालय में अपना काम शुरू किया। अपनी टाइपिंग और अंग्रेजी बोलने के कौशल के कारण मैं इस कार्यालय के कई महत्वपूर्ण कार्यों को संभाल सका। मुझे आज भी प्लेसमेंट प्रक्रिया के लिए संस्थान आने वाले कई सीईओ को हवाई अड्डे और रेलवे स्टेशन पर रिसीव करना याद है। मुझे आज भी टाटा प्रशासनिक सेवाएँ के मानव संसाधन प्रमुख मिस्टर मालेगामवाला जी याद हैं, जो प्लेसमेंट प्रक्रिया के पहले दिन आया करते थे। वे हमारे अतिथि भवन में रुकते थे, जो हमारे निदेशक के आवास के बगल वाला बंगला था। मैं प्लेसमेंट साक्षात्कार के लिए सभी व्यवस्थाएँ देखता था, यहाँ तक कि कंपनियों से छात्रों के लिए नियुक्ति आदेश (अपॉइंटमेंट



ऑर्डर) भी एकत्र करता था। मुझे याद है, उस समय छात्रों का औसत वेतन लगभग 2000 से 3000 रुपये प्रति माह होता था। उस समय पीजीपी में छात्रों की संख्या सौ से कम थी और संस्थान में कोई अन्य लंबी अवधि का कार्यक्रम नहीं था। भारत के किसी भी अन्य प्रबंधन कॉलेज की तुलना में यहाँ के छात्रों के पास बेहतर सुविधाएँ थीं।

वह यादगार कैपस

मुख्य परिसर के कार्यालय मुख्य रूप से 'हैंगिंग फाइल कैबिनेट', टाइपराइटर और पुराने गोल डायल वाले काले फोन से सुसज्जित थे। टेलीफोन कॉल मुख्य कार्यालय कॉरिडोर के अंत में स्थित टेलीफोन एक्सचेंज में ऑपरेटरों द्वारा प्रबंधित किए जाते थे। किसी भी लंबी दूरी की कॉल के लिए हमें एक्सचेंज के माध्यम से जाना पड़ता था। संचार की अन्य सुविधाएँ हमारे खानगी अनुभाग के माध्यम से टेलीग्राम और विंग 12 के अंत में स्थित टेलेक्स सेवाएँ थीं। निदेशक और डीन के कार्यालय विंग 5 में स्थित थे। उस समय का 'केओस' (सांस्कृतिक उत्सव) अलग था और मुझे याद है कि छात्र अपने वार्षिक सांस्कृतिक कार्यक्रमों में अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन करते थे। मुझे हॉस्टल के ब्लैकबोर्ड पर क्लासवर्क पर चर्चा करते छात्र और कक्षाओं में साड़ी पहनी छात्राएँ भी याद हैं। यह बहुत ही सुखद एहसास है। सुश्री एम.एस. सुब्बुलक्ष्मी, पंडित हरिप्रसाद चौरसिया, पंडित अमजद अली खान और कई अन्य कलाकारों और संगीतकारों के प्रदर्शन को देखना एक शानदार अवसर था। खेल गतिविधियाँ अपने चरम पर होती थीं जब 'महिंद्रा ट्रॉफी' के नाम से आईआईएम फुटबॉल ट्रॉफी का हर साल बेसब्री से इंतजार किया जाता था, जिसे तत्कालीन अध्यक्ष श्री केशुब महिंद्रा द्वारा प्रायोजित किया गया था। सुबह और शाम की चाय के दौरान एलकेपी कर्मचारी, छात्रों और शिक्षकों के लिए सबसे पसंदीदा जगह थी क्योंकि कैटीन एलकेपी के बिल्कुल करीब थी।

अपने कार्यकाल के दौरान संस्थान के सभी निदेशकों से मिलना मेरे लिए एक बड़ा अवसर था, जिसमें प्रोफेसर रवि जे. मथाई (जो शाम को अपने पालतू पोमेरियन कुत्ते के साथ एलकेपी में टहलते थे), डॉ. विजय व्यास, डॉ. आई.जी. पटेल (पूर्व गवर्नर आरबीआई), डॉ. बकुल त्रिपाठी, प्रो. आशीष नंदा और अन्य सभी शामिल हैं। प्रतिष्ठित हार्वर्ड स्टेप्स जिसे मैंगो ट्री प्लेस भी कहा जाता है उसने इन वर्षों में कई महान हस्तियों को देखा है। लुई कान प्लाजा (एलकेपी) में दीक्षांत समारोह हमेशा भव्य रहा है। मुझे श्री जे.आर.डी.

टाटा, श्री वर्गीज कुरियन, तत्कालीन प्रधानमंत्री श्री पी.वी. नरसिंहा राव और डॉ. मनमोहन सिंह, डॉ अब्दुल कलाम जैसे कई संस्थान के मेहमानों को और वक्ताओं को देखने और सुनने का सौभाग्य मिला है। और वह दुःखद हादसे भी याद हैं जब हमारे संस्थान ने दो प्रतिष्ठित संकाय प्रोफेसर लब्धि भंडारी और प्रोफेसर तीरथ गुप्ता को अलग अलग विमान हादसों में खोया था। संस्थान में अपने चार दशकों के करियर के दौरान सीधे छात्रों के साथ काम करने का विशेष विशेषाधिकार मिला, क्योंकि मैंने अपने करियर का अधिकांश समय प्लेसमेंट कार्यालय, छात्र गतिविधि कार्यालय और एफएबीएम पाठ्यक्रम कार्यालय में काम करते हुए बिताया। उनमें से कई आज राष्ट्रीय और बहुराष्ट्रीय कंपनियों के शीर्ष पदों पर हैं। इनमें बंगा बंधु, के.वी. कामथ, रघुराम राजन, हर्ष भोगले और कई अन्य शामिल हैं। मैंने इन वर्षों में देखा है कि आईआईएमए एक बहु-सांस्कृतिक संस्थान रहा है जहाँ हम सभी त्योहार शांति और एकता के साथ मनाते आए हैं।

मेरी सेवा से निवृति

मैं इस महान संस्थान में 40 से अधिक वर्षों की सेवा के बाद वर्ष 2021 में सेवानिवृत्त हुआ। मैंने विभिन्न विभागों में काम किया और अपने प्रत्येक कार्य का आनंद लिया और हमेशा आईआईएमए समदाय को एक परिवार के रूप में महसूस किया। इस हरे-भरे कैपस में सौहार्दपूर्ण वातावरण में काम करना वास्तव में खुशी की बात थी। मैं अपने उन सभी सहयोगियों और संकाय सदस्यों का बहुत आभारी हूँ जिनसे मैंने बहुत कुछ सीखा। साल-दर-साल परिसर में कई बदलाव हुए। 132 फीट रिंग रोड को पार करते हुए नए कैपस में नया निर्माण हुआ। सत्तर के दशक के टाइपराइटरों से लेकर पीडीपी-11/70 कंप्यूटर तक और अंत में एआई (एआई) युग के हाईटेक आईटी वातावरण ने कैपस में जगह ली। अब आईआईएमए में कई अल्पकालिक, दीर्घकालिक और ऑनलाइन शैक्षणिक कार्यक्रम चल रहे हैं और साथ ही छात्रों की संख्या भी बढ़ी है। आईआईएमए का अब दुर्बई में भी कैपस है। आईआईएमए आज दुनिया के अग्रणी प्रबंधन संस्थानों में से एक है।

पूरे कैपस समुदाय की निरंतर समृद्धि और सामूहिक कल्याण के लिए मेरी ओर से हार्दिक शुभकामनाएँ। मैं इस परिसर में उपस्थित सभी लोगों के लिए इस 'ग्रीन हेवन' (हरे-भरे स्वर्ग) में अच्छे स्वास्थ्य और सकारात्मक ऊर्जा से भरे एक शानदार अनुभव की कामना करता हूँ।

पुरुषोत्तम

विनय शर्मा,
नर्सिंग अधिकारी



राहुल ने जब नर्सिंग को अपने करियर के रूप में चुना, तो उन्हें कई लोगों के ताने सुनने पड़े। “यह तो लड़कियों का काम है”, “तुम्हें डॉक्टर बनना चाहिए था”, जैसी टिप्पणियाँ आम थीं। लेकिन राहुल अपने फैसले पर अदिग रहे। उनके लिए देखभाल और सेवा का कोई लिंग (gender) नहीं था। उनकी तैनाती एक बड़े शहर के सरकारी अस्पताल के पीडियाट्रिक ऑन्कोलॉजी (Pediatric Oncology) – बाल कैंसर विज्ञान वार्ड में हुई। यह एक ऐसी जगह थी जहाँ हर दिन छोटे बच्चे जीवन और मृत्यु के बीच संघर्ष कर रहे होते थे। यहाँ का माहौल बहुत भारी होता था।

वार्ड में दाखिल होते ही, राहुल को महसूस होता कि यहाँ सिर्फ दवाइयाँ और इंजेक्शन ही काफी नहीं हैं। यहाँ जरूरत थी ढेर सारे धैर्य, प्यार और हँसी की। यहाँ आकर बच्चे अक्सर अपने इलाज के दर्द और अकेलेपन से डर जाते थे। एक दिन, 8 साल का एक लड़का, आरव, कीमोथेरेपी से बहुत परेशान था। वह ना तो किसी से बात करता था और ना ही कुछ खाता-पीता था। उसके माता-पिता हताश हो चुके थे। राहुल ने एक अनोखा तरीका अपनाया। अपनी शिफ्ट के दौरान, जब भी उसे समय मिलता, वह आरव के पास आकर बैठ जाता था। वह एक नर्स के तौर पर नहीं, बल्कि एक दोस्त के तौर पर उससे बात करता। वह अपनी पॉकेट से छोटी-छोटी खिलौने वाली करें निकालता, जो वह अक्सर बच्चों को खुश करने के लिए रखते थे। राहुल ने आरव को कहानियाँ सुनाईं, उसके साथ चित्र बनाए, और उसे हँसाने के लिए जोकर की तरह मजेदार चेहरे भी बनाए। वार्ड की बाकी नर्सें और डॉक्टर हैरान थे। राहुल ने सिर्फ दवाइयाँ नहीं दीं, उन्होंने आरव को जीने की एक नई उम्मीद दी।

राहुल के इस प्रयास ने रंग दिखाया। आरव धीरे-धीरे ठीक होने लगा। उसके चेहरे पर मुस्कान वापस आ गई। वह

राहुल की शिफ्ट का इंतजार करता था। एक शाम, आरव ने राहुल का हाथ पकड़कर कहा, “भैया, आप तो पुरुषोत्तम हैं। आप डॉक्टर से भी अच्छे हैं।” ये शब्द राहुल के लिए किसी भी बड़े अवॉर्ड से ज्यादा कीमती थे। राहुल ने साबित कर दिया कि नर्सिंग सिर्फ शारीरिक देखभाल का नाम नहीं है, यह एक “मानवीय स्पर्श” है। उसका पुरुष होना उसकी सेवा में बाधा नहीं बना, बल्कि उनके पुरुषोत्तम स्वभाव ने कई बच्चों के जीवन में एक अनोखी रोशनी बिखर दी।

राहुल के इस विशेष व्यवहार ने अस्पताल के माहौल को ही बदल दिया, और कई अन्य पुरुष नर्सों को इस क्षेत्र में गरिमा के साथ काम करने के लिए प्रेरित किया। राहुल ने अपने जीवन से यह संदेश दिया कि सेवा का जज्बा ही सबसे बड़ा धर्म है, और करुणा किसी भी लिंग की मोहताज नहीं होती।

प्रश्न कर

- अनन्त,
पीएच.डी. छात्र



कुछ नहीं है जो होता है तय, प्रश्न कर,
तुष्टि जब तक न पाये हृदय, प्रश्न कर।
घोर अँधेरे का है ये समय, प्रश्न कर,
होगा कब सूर्य का फिर उदय, प्रश्न कर।
इक दीये से जलेंगे हज़ारों दीये,
तू दीया है तुझे किसका भय, प्रश्न कर।
इसकी उसकी करायेगा जय ये जगत,
यूँही मत कर किसी की भी जय, प्रश्न कर।
लाभ हैं सैकड़ों मानता हूँ मगर,
मौन जितना भी हो मोहमय, प्रश्न कर।
और अलग से कोई अंत होना है क्या?
ये नहीं हैं तो क्या है प्रलय? प्रश्न कर।

क्या तकनीक हमें अधिक बुद्धिमान बना रही है या आलसी?

बिन्दु डोडिया जोशी,
सहायक प्रबंधक-हिंदी



21वीं सदी को यदि किसी एक शब्द में परिभाषित किया जाए, तो वह शब्द निस्संदेह “तकनीक” होगा। आज हमारे जीवन का शायद ही कोई ऐसा क्षेत्र हो जहाँ तकनीक की उपस्थिति न हो—शिक्षा, स्वास्थ्य, व्यापार, मनोरंजन, संचार, प्रशासन, यहाँ तक कि हमारे सोचने और निर्णय लेने के तरीके भी तकनीक से प्रभावित हो चुके हैं। स्मार्टफोन, इंटरनेट, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस, सोशल मीडिया और ऑटोमेशन ने जीवन को पहले से कहीं अधिक तेज़, सुविधाजनक और जुड़ा हुआ बना दिया है।

लेकिन इसी के साथ एक गंभीर प्रश्न भी उभरता है—क्या तकनीक हमें वास्तव में अधिक बुद्धिमान बना रही है, या यह हमें मानसिक और शारीरिक रूप से आलसी बना रही है? यह प्रश्न सरल प्रतीत होता है, पर इसका उत्तर उतना ही जटिल है। इस आलेख में हम तकनीक के सकारात्मक और नकारात्मक दोनों पहलुओं पर विचार करेंगे और यह समझने का प्रयास करेंगे कि तकनीक का प्रभाव हमारे मस्तिष्क, व्यवहार और जीवनशैली पर किस प्रकार पड़ रहा है।

तकनीक और बुद्धिमत्ता: एक नया आयाम

तकनीक ने ज्ञान और सूचना तक हमारी पहुँच को अभूतपूर्व रूप से आसान बना दिया है। पहले जहाँ किसी विषय की जानकारी के लिए पुस्तकालयों के चक्कर लगाने पड़ते थे, वहीं आज कुछ ही सेकंड में इंटरनेट पर लाखों स्रोत उपलब्ध हैं। यह सुविधा निश्चित रूप से हमारी ज्ञान-क्षमता को बढ़ाती है।

1. शिक्षा में तकनीक की भूमिका

ऑनलाइन शिक्षा, ई-लर्निंग प्लेटफॉर्म, डिजिटल क्लासरूम और शैक्षणिक ऐप्स ने सीखने के तरीकों में क्रांति ला दी है। छात्र अब अपनी गति और रुचि के अनुसार सीख सकते हैं। वीडियो लेक्चर, एनिमेशन और सिमुलेशन जटिल विषयों

को सरल बना देते हैं। इससे न केवल समझ बढ़ती है, बल्कि विश्लेषणात्मक और तार्किक सोच को भी बढ़ावा मिलता है।

2. समस्या-समाधान और नवाचार

तकनीक ने हमें नए उपकरण दिए हैं, जिनसे हम जटिल समस्याओं को हल कर सकते हैं। डेटा एनालिटिक्स, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस और मशीन लर्निंग जैसे क्षेत्र मानव मस्तिष्क की क्षमताओं को बढ़ाने का कार्य कर रहे हैं। वैज्ञानिक, डॉक्टर और इंजीनियर तकनीक की मदद से ऐसे समाधान खोज पा रहे हैं, जो पहले असंभव लगते थे।

3. वैश्विक जुड़ाव और विचारों का आदान-प्रदान

सोशल मीडिया और डिजिटल प्लेटफॉर्म ने दुनिया को एक “वैश्विक गाँव” बना दिया है। अलग-अलग संस्कृतियों, विचारधाराओं और दृष्टिकोणों से परिचित होना हमारी सोच को व्यापक बनाता है। यह बौद्धिक विकास का एक महत्वपूर्ण पहलू है।

तकनीक और आलस्य: एक चिंताजनक सच्चाई

जहाँ एक ओर तकनीक हमें अधिक सक्षम बनाती है, वहीं दूसरी ओर यह हमारे भीतर आलस्य को भी जन्म देती है। सुविधाओं की अधिकता ने हमें मेहनत से दूर और आराम की ओर आकर्षित किया है।

➤ मानसिक आलस्य

आज लोग छोटी-छोटी बातों के लिए भी सोचने के बजाय सीधे गूगल या एआई पर निर्भर हो जाते हैं। गणितीय गणनाएँ, याद रखने की क्षमता, दिशा-ज्ञान—ये सभी क्षमताएँ धीरे-धीरे कमजोर होती जा रही हैं। जब हर प्रश्न का उत्तर एक क्लिक पर उपलब्ध हो, तो स्वयं सोचने की आदत कम हो जाती है।

➤ शारीरिक निष्क्रियता

तकनीक ने हमारे शारीरिक श्रम को बहुत कम कर दिया है। ऑनलाइन शॉपिंग, फूड डिलीवरी ऐप्स और वर्क फ्रॉम होम ने हमें कुर्सी से बाँध दिया है। इसका परिणाम है—मोटापा, तनाव, आँखों की समस्या और अन्य स्वास्थ्य समस्याएँ। यह शारीरिक आलस्य अंततः मानसिक सुस्ती को भी जन्म देता है।

➤ ध्यान की कमी और त्वरित संतुष्टि

सोशल मीडिया और शॉर्ट वीडियो प्लेटफॉर्म ने हमारी एकाग्रता क्षमता को प्रभावित किया है। हम लंबे समय तक किसी एक काम पर ध्यान केंद्रित करने में कठिनाई महसूस करते हैं। त्वरित मनोरंजन की आदत ने गहरे चिंतन और धैर्य को कमजोर किया है।

तकनीक: दोषी या साधन?

यह कहना उचित नहीं होगा कि तकनीक स्वयं ही हमें आलसी बना रही है। वास्तव में, तकनीक एक साधन है—उसका प्रभाव इस बात पर निर्भर करता है कि हम उसका उपयोग कैसे करते हैं।

यदि तकनीक का उपयोग केवल मनोरंजन और सुविधा के लिए किया जाए, तो यह निश्चित रूप से आलस्य को बढ़ावा देगी। लेकिन यदि इसका उपयोग सीखने, रचनात्मकता और समस्या-समाधान के लिए किया जाए, तो यह हमें अधिक बुद्धिमान बना सकती है।

संतुलन की आवश्यकता

तकनीक और मानव बुद्धि के बीच संतुलन बनाना आज की सबसे बड़ी आवश्यकता है। इसके लिए कुछ महत्वपूर्ण कदम उठाए जा सकते हैं:

- सोचने की आदत बनाए रखना** – हर प्रश्न का उत्तर तुरंत खोजने के बजाय स्वयं सोचने का प्रयास करना चाहिए।
- शारीरिक गतिविधि को प्राथमिकता देना** – तकनीक के साथ-साथ व्यायाम और खेल को जीवन का हिस्सा बनाना आवश्यक है।
- डिजिटल अनुशासन** – स्क्रीन टाइम को सीमित करना और सोशल मीडिया का संतुलित उपयोग करना चाहिए।
- रचनात्मक उपयोग** – तकनीक का उपयोग लेखन, शोध, नवाचार और सीखने के लिए किया जाना चाहिए।

भविष्य की पीढ़ी और तकनीक

आज की युवा पीढ़ी “डिजिटल नेटिव” है। उनके लिए तकनीक जीवन का अभिन्न अंग है। यह हमारी जिम्मेदारी है कि हम उन्हें तकनीक के सकारात्मक और जिम्मेदार उपयोग की शिक्षा दें। यदि सही मार्गदर्शन मिले, तो यही तकनीक भविष्य में एक अधिक बुद्धिमान, संवेदनशील और सक्षम समाज का निर्माण कर सकती है।

निष्कर्ष

अंततः, इस प्रश्न का उत्तर कि “क्या तकनीक हमें अधिक बुद्धिमान बना रही है या आलसी?” एकतरफा नहीं है। तकनीक में दोनों संभावनाएँ निहित हैं। यह हमें अधिक बुद्धिमान भी बना सकती है और आलसी भी—सब कुछ हमारे उपयोग पर निर्भर करता है। यदि हम तकनीक को अपने मस्तिष्क का विकल्प बना लें, तो यह हमें आलसी बना देगी। लेकिन यदि हम तकनीक को अपने मस्तिष्क का सहयोगी बनाएं, तो यह हमारी बुद्धिमत्ता को नई ऊँचाइयों तक ले जा सकती है। इसलिए, आवश्यकता है विवेक, संतुलन और आत्म-नियंत्रण की। तभी तकनीक मानवता के विकास का सशक्त माध्यम बन सकेगी, न कि उसके पतन का कारण।

आप गर हम हो जाते

– प्रोफेसर प्रशांत दास 'साहिल'



काश ऐसा होता साहब, आप गर हम हो जाते,
गलतफ़हमी मिट्टी जाती, और गम कम हो जाते।
आपकी ऊँची है इमारत, यहाँ संकरी-सी गली,
पुल बनता तो नज़दीक, आप औं हम हो जाते।
दिल-ए-ग़रीब के दर पर, आपकी दस्तक होती,
नरम हो जाता रेगिस्तान, शोर सरगम हो जाते।
हमें शिकायत थी मंज़ूर, और शिकवे भी सारे,
मुस्कुराते गर कहते सब, मेरे मरहम हो जाते।
आपके नज़र की चिंगारी, बुझा देते जो साहब,
कसम से चुभने वाले तीर सभी शबनम हो जाते।
दीवारों की वो तसवीरें, कोई बचा सकता गर,
बचाने वाले सब के सब, सबके सनम हो जाते।
पुराने क़स्बे जले जहाँ, कोई कुछ फूल चढ़ाता,
टूटे हुए मकां 'साहिल', दैर-औं-हरम हो जाते।

दक्षिण कोरिया का प्रवास, यात्रा संस्मरण

श्रीमती प्रिया यश प्रसाद,
माताजी, पूर्वछात्र, आर्यन प्रसाद



2020 में जब दुनिया पर कोरोना महामारी ने कहर ढाया और लॉकडाउन के कारण लोग घरों में बंद हो गए, तब मेरा खाली समय किताबें पढ़ने में या गूगल और यूट्यूब पर विभिन्न विषयों पर खोज करने में व्यतीत हुआ। यूट्यूब पर अपने देश के साथ अन्य देशों के ऐतिहासिक, भौगोलिक, राजनैतिक और सांस्कृतिक विशेषताओं की जानकारी हासिल की। दो साल तक अनेक देशों की खोज यात्रा के दौरान मैंने दक्षिण कोरिया को एक विकसित, आधुनिक शहरी परिवृत्त्य, समृद्ध इतिहास और तकनीकी संपन्न देश के रूप में जाना! इस देश ने मुझे इतना प्रभावित किया कि दक्षिण कोरिया को करीब से जानने के लिए नवंबर 2025 में मैं अपने परिवार सहित बीस दिनों की यात्रा के लिए दक्षिण कोरिया की धरती पर पहुंच गई।

अपनी यात्रा शुरू करने से पहले इस देश की संक्षिप्त जानकारी देना चाहूँगी। छठी सदी के अंत तक पूरा कोरिया

प्रायद्वीप तीन राज्यों में विभाजित था जिसे सातवीं सदी में एकीकृत किया गया। यहाँ 1392 तक 'गोरियो' राजवंश का शासन रहा जिन्होंने इस देश को 'कोरिया' नाम दिया। उनके बाद 1910 तक 'जोसोन' राजवंश ने लगभग पाँच सौ वर्षों तक शासन किया और कोरिया को 'शांत सुबह की भूमि' नाम दिया। 1910 में जापान ने इस पर पूर्ण कब्जा कर लिया। यह समय कोरिया के इतिहास का काला अध्याय माना जाता है। 1948 में द्वितीय विश्व युद्ध के बाद जापान की हार के साथ कोरिया उनकी गुलामी से आजाद होकर स्वतंत्र देश तो बना, लेकिन देश दो टुकड़ों में बँट गया—एक उत्तर कोरिया और दूसरा दक्षिण कोरिया।

आजादी के बाद उत्तर कोरिया ने दुनिया से कटे हुए एक तानाशाह देश के रूप में पहचान बनाई परन्तु दक्षिण कोरिया ने कड़ा संघर्ष किया और यह गरीबी तथा सत्तावादी शासन से उभरा और तीस वर्षों के अंदर ही एक बेहद उन्नत,



विकसित, औद्योगिक और लोकतांत्रिक राष्ट्र बन गया, जिसे 'एशिया के चार बाधों' में से एक माना जाता है। वर्तमान समय में इसका आधिकारिक नाम 'कोरिया गणराज्य' है। दक्षिण कोरिया मुख्य रूप से प्रशांत महासागर और साथ में पीला सागर, पूर्वी सागर यानि तीन तरफ से समुद्र पानी से घिरा हुआ है—पश्चिम में पीला सागर, पूर्व में जापान सागर और दक्षिण में कोरियाई जलडमरुमध्य। इसकी राजधानी सियोल है, जो देश का सबसे बड़ा महानगर है। इसके अलावा बुसान, डेंगू, डेजॉ, ग्वांगज, इंचियोन, उलसान और सेजोंग जैसे प्रमुख शहर हैं।

दक्षिण कोरिया में लगभग तीन हजार द्वीप हैं, जिनमें जेजू, जियोजेडो और जिनडो जैसे द्वीप अपनी प्राकृतिक सुंदरता के लिए प्रसिद्ध हैं। इस देश की कई नामी कंपनियाँ जैसे सैमसंग, एलजी, ह्युंडई, किया, एसके इलेक्ट्रॉनिक्स आदि द्वारा बनाए मोबाइल फोन, कार, इलेक्ट्रोनिक सामान आदि ने दुनिया भर में पहचान बनाई है। दुनिया की सबसे ऊँची मीनार 'बुर्ज खलीफा' जो दुबई में है उसका निर्माण जिन कंपनियों ने किया उनमें से एक सैमसंग कंपनी भी है। दुनिया की सबसे तेज इंटरनेट गति यहाँ उपलब्ध है, और इसके विकास में इन कंपनियों का बड़ा योगदान है। तकनीक के साथ-साथ इस देश की संस्कृति, खान-पान, सौंदर्य प्रसाधन, संगीत (के-पॉप), के-ड्रामा (धारावाहिक) आदि भी आज विश्व भर में बेहद लोकप्रिय हैं। इसी कारण पिछले कई वर्षों से इस देश में पर्यटकों की संख्या लगातार बढ़ती जा रही है।

तो आइए! आप भी मेरे साथ इस देश के कुछ प्रसिद्ध शहरों की यात्रा मेरे शब्दों द्वारा कीजिए।

हमारी यात्रा दिल्ली के 'इंदिरा गांधी अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डे' से शुरू हुई। सात घंटे की उड़ान के बाद हम इंचियोन अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डे पर उतरे। इंचियोन एशिया के सबसे बड़े और आधुनिक हवाई अड्डों में से एक है। यहाँ इमिग्रेशन (अप्रवासी) प्रक्रिया पार करके हमने राहत की साँस ली और आधी थकान उसी समय खत्म हो गई। करीब एक घंटा हम एयरपोर्ट पर रहे। इस दौरान विश्राम करने के साथ-साथ हमने उस देश की करेंसी (मुद्रा) और 'टी-मनी' कार्ड लिए। इस कार्ड द्वारा रेल, मेट्रो, बस का सफर किया जा सकता है। साथ ही, नाश्ता किया और कॉफी पी जिससे बाकी की थकान भी चली गई और आगे की यात्रा के लिए जोश भर गया। एयरपोर्ट से ही एक्सप्रेस रेल चलती है जिसके

द्वारा हम सियोल स्टेशन पहुँचे। यहाँ से हमें बुसान शहर के लिए केटीएक्स (ट्रेन) में बैठना था। आप सोच रहे होंगे कि सियोल से बुसान क्यों? सियोल क्यों नहीं रुके? वह इसलिए कि हमने अपनी यात्रा के लिए तीन शहर चुने थे—सियोल, बुसान और जेजू द्वीप! पहले बुसान फिर जेजू और आखिरी के दिन सियोल क्योंकि सियोल सबसे बड़ा महानगर और देश की राजधानी भी है इसलिए हमने वहाँ के लिए बारह दिन निर्धारित किए और बाकी दोनों शहरों के लिए तीन-चार दिन। साथ ही, सियोल से वापसी की उड़ान भी थी इसलिए आखिरी पड़ाव सियोल को रखा।

एक्सप्रेस ट्रेन से एक घंटे में हम सियोल स्टेशन पहुँचे। स्टेशन बहुत बड़ा और खूबसूरत था, पर स्टेशन पर बेतहाशा भीड़ थी। कुछ देर इंतजार के बाद हमारी ट्रेन (केटीएक्स) आ गई। केटीएक्स कोरिया की वही ट्रेन है, जिसे कोरियाई फ़िल्म ट्रेन टू बुसान में दिखाया गया है। ट्रेन में बैठने के बाद फ़िल्म के जीवंत दृश्य वास्तविक जीवन में साकार होते महसूस हुए। ट्रेन से बाहर के नजारे बहुत सुंदर थे। बुसान दक्षिण कोरिया के दक्षिणी हिस्से में है, जो समुद्र के किनारे बसा है। हम करीब तीन बजे बुसान स्टेशन पहुँचे। स्टेशन से बाहर आकर हमने होटल की ओर टैक्सी पकड़ी। टैक्सी से बुसान शहर की खूबसूरती देखते ही बनती थी। हर तरफ बहुमंजिला इमारतें, हरियाली, पहाड़ और समुद्र! करीब पाँच बजे होटल पहुँचे। थोड़ी देर आराम किया, फिर शहर देखने निकल पड़े। हमारे होटल से सौ कदम की दूरी पर ही हेयुन्दे बीच (समुद्र का किनारा) था, इसलिए पहले हमने वहाँ गए। समुद्र शांत और किनारा बहुत ही सुंदर और साफ़ था। कुछ समय समुद्र की लहरों के साथ बिताने के बाद हमने वहाँ की फ़ूड स्ट्रीट पर पारंपरिक खाने का स्वाद चखा। बुसान में तीन दिन तक हम जहाँ-जहाँ घूमने गए वे थे -

- सबसे पहले हमने स्काई कैप्सूल ट्रेन की सवारी की, जो बेहद रोमांचक थी। समुद्र के किनारे धीरे-धीरे चलती कैबिन साइज की कैप्सूल ट्रेन से बहुत खूबसूरत नजारे दिखे। ट्रेन के साथ-साथ पैदल चलने का भी रास्ता था वहाँ से भी समुद्र और आसपास का नजारा खूबसूरत दिखता है। कैप्सूल ट्रेन से हम 'ग्लास ब्रिज' पर उतरे जो अद्भुत था। पारदर्शी शीशे पर चलना रोमांचक था। ऐसा लगता था जैसे हम हवा में तैरते हुए जा रहे हैं और दूर नीचे समुद्र है, यह देखकर धड़कने बढ़ने लगती थीं लैकिन मजा भी आता था।



- बुसान एयर क्रूज़, जहाँ 'कैबल कार' से समुद्र के एक छोर से दूसरे छोर पर गए। समुद्र के बीच हवा में झूलते हम, पैरों के नीचे पारदर्शी शीशा, वहाँ से भी समुद्र दिख रहा था। दिल थामे हम नजारों को देखते हुए अगले छोर पर उतरे। वहाँ एक सुंदर बगीचा था, जहाँ बेहतरीन कलाकृतियाँ और ऑब्जर्वेटरी भी थी, जिससे पूरा शहर एकदम पास दिखता है।
- 'कल्चरल विलेज' के रंग-बिरंगे पुराने घर देखे जिसे यूनेस्को ने एक धरोहर के रूप मान्यता दी है क्योंकि युद्ध के दौरान यहाँ शरणार्थी रहते थे। इस जगह को देखना अद्भुत है। वहाँ की दीवारों पर बनी चित्रकारी, वहाँ की गलियाँ, कैफे तथा ऊँचाई से बुसान शहर का नजारा बेमिसाल नज़र आता है।
- सोंगदो और ग्वांगली बीच देखा जो रात के समय बिजली की रोशनी में बहुत ही खूबसूरत लगते हैं। रात में समुद्र किनारे स्थित रेस्टोरेंट में अलग-अलग देशों के व्यंजन तथा कोरियाई पारंपरिक मदिरा 'मक्कगोली' भी चखी।
- कोरिया में माँसाहारी भोजन बहुतायत में मिलता है। खास तौर पर, समुद्री जीव जैसे मछली, केकड़ा, सैल्मन, मैकेरल आदि किमबाब, बिबिमबाब, रामेन, किमची, तोत्बोक्की आदि पारंपरिक भोजन हैं। कोरिया के व्यंजनों की विशेष बात यह है कि यहाँ खाने के साथ 'बानचान' (साइड डिश) दिया जाता है, जिसमें किमची (अचार), सलाद, भुनी और उबली

मछली, पकौड़े, भुना गोशत आदि होते हैं। छोटी-छोटी कटोरियों में थोड़ी-थोड़ी मात्रा में होते हैं। सबका स्वाद चखते-चखते चार दिन कब बीते, पता ही नहीं चलता।

अगले पड़ाव के लिए हम हवाई यात्रा द्वारा पहुँचे – जेजू द्वीप, जो ज्वालामुखी विस्फोट से बना है। प्राकृतिक संपदा से भरा यह द्वीप शांत और खूबसूरत है, जिसे 'विश्व शांति द्वीप' के रूप में जाना जाता है। यहाँ हमने ऐनबो कोस्टल रोड' पर इन्द्रधनुष के रंगों के पत्थर देखे जो समुद्र के किनारे लगे थे। वहाँ से समुद्र और आसपास का नजारा बहुत मोहक था। सड़क किनारे स्थित कैफे बेहद खूबसूरत लगे। जेजू की हर सड़क धूमते हुए प्रसिद्ध 'हाल्ला पर्वत' दिखता है जिसके शिखर पर एक क्रेटर (गड्ढा) है जिसमें एक झील है। हम 'सयोंगसंग इल्चुल्बोंग' गए जहाँ जल-ज्वालामुखी ठंडा होकर बड़ा पहाड़ बन गया है। इसके शिखर पर भी विशालकाय गड्ढा (क्रेटर) है जहाँ सीढ़ी द्वारा पहुँचा जा सकता है। इस जगह बहुत-सी वनस्पतियाँ पाई जाती हैं। यहाँ से सूर्योदय और सूर्यास्त का दृश्य अद्भुत दिखता है।

यहाँ हम महिला गोताखोरों से मिले, जिनके इतिहास और वर्तमान ने हमें बहुत प्रभावित किया। इन महिला गोताखोरों को 'हेन्यो' कहा जाता है। हेन्यो का जीवन चक्र 15 वर्ष की आयु से शुरू होता है और तब तक चलता है जब तक वे समुद्र में गोता लगाने में असमर्थ नहीं हो जातीं। सेवानिवृत्त होने के बाद भी, वे समुद्री संसाधनों की रक्षा करने वाले रक्षकों के रूप में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। जापान विरोधी आंदोलनों में इन महिला गोताखोरों का भरपूर

योगदान रहा है। शुरू में, पुरुष और महिलाएँ दोनों गोताखोरी करते थे, लेकिन 17वीं शताब्दी में नावों से मछली पकड़ते समय पुरुषों की समुद्र में मृत्यु दर अधिक होने के कारण महिलाओं ने धीरे-धीरे आजीविका के लिए गोताखोरी अपनाई। ये गोताखोर लगभग 400 से अधिक वर्षों से बिना ऑक्सीजन टैंक के समुद्र में गोता लगाकर समुद्री भोजन इकट्ठा करने का काम कर रही हैं। इससे ये परिवारों का भरण-पोषण करती हैं और स्थानीय अर्थव्यवस्था को बढ़ावा देती हैं। ये मातृसत्तात्मक समाज का अनूठा उदाहरण हैं जहाँ महिलाएँ परिवार और समुदाय की प्रमुख आर्थिक शक्ति होती हैं। इसीलिए 2016 में यूनेस्को द्वारा मानवता की अमूर्त सांस्कृतिक विरासत के रूप में इन महिला गोताखोरों को मान्यता मिली है। हमने इन महिला गोताखोरों द्वारा एक लोकगीत भी सुना। आज भी, कई हेन्यो, जिनमें 80 वर्ष से अधिक उम्र की महिलाएँ भी शामिल हैं, समुद्र में गोता लगाती हैं। इन्हीं उपलब्धियों को 'हेन्यो संग्रहालय' में संरक्षित किया गया है।

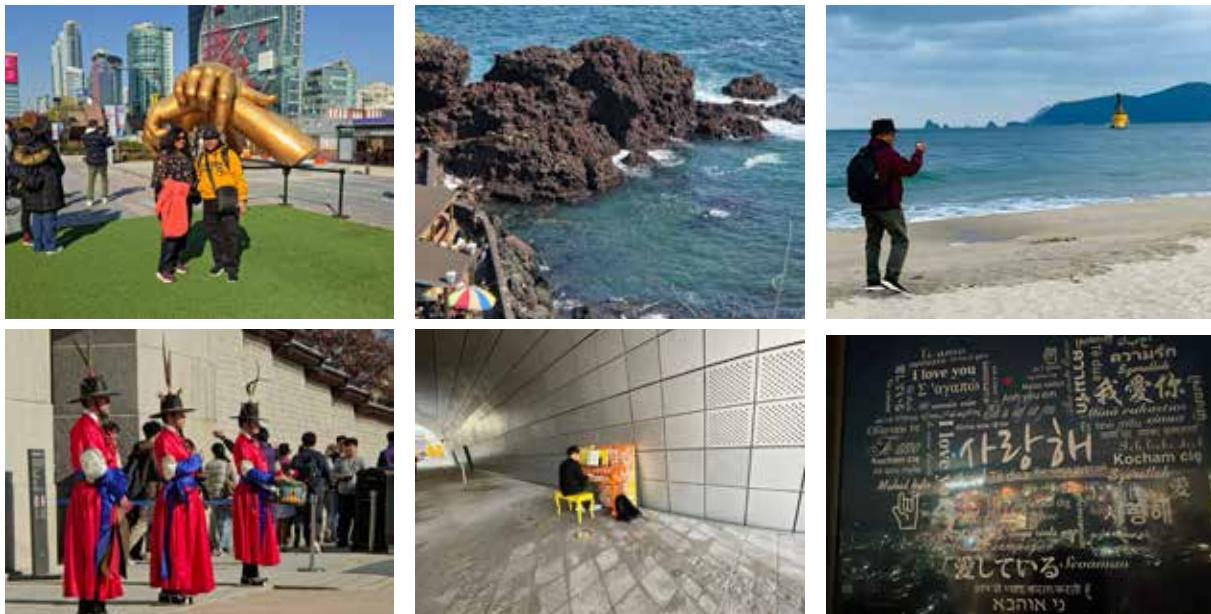
हमने 'हेम देओक' बीच देखा जो सफेद रेत से बना है। वहाँ हमने छोटे-बड़े पत्थरों से संतुलन बनाते हुए छोटी-सी मीनार भी बनाई। समुद्र की लहरों को देर तक निहारा। वहाँ के कैफ़े शानदार थे। हमने जेजू का सी फूड (समुद्री जीव भोजन के लिए) का बाज़ार भी देखा जो बहुत ही बड़ा था। जेजू का प्रमुख फल मैंडरिन संतरे का स्वाद भी चखा। ये फल छोटे, बीजरहित और बहुत मीठे होते हैं। हम तो अभी जेजू की प्राकृतिक खूबसूरती में खोये हुए थे कि वहाँ से विदा होने का समय आ गया।

जेजू द्वीप के बाद हम हवाई यात्रा से पहुँचे सियोल। जेजू और बुसान से एकदम उलट, भागता-दौड़ता शहर, जो आधुनिकता की चरम सीमा का उदाहरण है। सियोल शहर के बीचों बीच हान नदी बहती है जो इस शहर को दो भागों में बाँटती है। नदी के किनारों पर सुंदर पार्क और कई आकर्षण केंद्र हैं जैसे – वनस्पति उद्यान, क्रूज़ व बोट, साइकिलिंग, रेस्टोरेंट, कैफ़े, आतिशबाजी के उत्सव, पार्क आदि। हमारा होटल सियोल के बहुत जाने-माने स्थल मेयोंगदोंग में था जहाँ से प्रमुख आकर्षक प्रवास स्थल उचित दूरी पर थे। सियोल में हम जहाँ-जहाँ घूमे वे स्थल इस प्रकार हैं –

❖ अति आधुनिक स्थान 'गंगनम' के मॉल 'कोएक्स' में 'स्टारफ़ील्ड' नाम की बहुत बड़ी और आकर्षक

लाइब्रेरी देखी। किताबें एक बड़े-से हॉल में दो-मंज़िले की ऊँचाई तक रखी थीं। एक ओर से दूसरी ओर जाने के लिए स्वचालित सीढ़ियाँ हैं। पढ़ने के लिए कुर्सी, टेबल, डेस्क सब हैं। क्रिसमस के आगमन के कारण सजावट उसी अनुसार की गई थी। मज़े की बात यह है कि पढ़ने वाले कम और देखने वाले, फोटो लेने वाले ज्यादा थे। हम भी उन्हीं में से थे।

- ❖ नमसान टावर जो काफ़ी पुराना है, वहाँ से पूरा शहर और सूर्यास्त का नज़ारा दिखता है। यहाँ तक जाने के लिए टैक्सी, फिर पहाड़ पर जाने के लिए लिफ्ट, टावर तक जाने के लिए केबल कार की सुविधा है। केबल कार से पहाड़ी पर पीले, लाल रंग के पत्तों से लदी पहाड़ियाँ बहुत सुंदर लग रही थीं। वहीं हमने हज़ारों ताले देखे जो लोगों ने इच्छापूर्ति के लिए लगाये थे। यह जगह सभी का मन मोह लेती है।
- ❖ कोरिया के आखिरी राजवंश जेसोंग का महल 'ग्येओंगबोकांग पैलेस' बहुत ही विशाल और भव्य था। महल में एक झील भी है। महल की नक्काशी शानदार है। कोरियन के साथ पर्यटक तक कोरिया के पारंपरिक वस्त्र (हानबोक) पहनकर धूम रहे थे और फोटो खींच रहे थे। यहाँ हमने एक सांस्कृतिक कार्यक्रम भी देखा जो महल के इतिहास को दर्शा रहा था।
- ❖ दोंगेमून डिज़ाइनर प्लाज़ा आधुनिक शिल्प का अनूठा उदाहरण है। बाहर से यह एक 'स्पेसशिप' की तरह लगता है। इसके अंदर अत्याधुनिक सांस्कृतिक केंद्र, बाल कैफ़े, फैशन हॉल, गुड कोर्ट आदि हैं। रास्ता बताने के लिए रोबोट था जिससे हमने बात की। एक वाक्या बताना चाहूँगी – वहाँ एक प्यानो रखा था जिसे कोई भी बजा सकता था। एक युवक उसे बजा रहा था, जब उसे पता चला कि हम भारतीय हैं तो उसने अपने राष्ट्रीय गान की धुन बजाकर सुनाई हमारा दिल गदगद हो गया।
- ❖ 'चेओंग्येचेओन स्ट्रीम' देखी जो सियोल के मध्य से होकर बहने वाली एक पुनर्निर्मित नदी है। यह 10.84 किलोमीटर लंबी है, जिस पर 22 पुल हैं तथा यह शहर के कई हिस्सों को जोड़ती है। इसकी सुंदरता देखते ही बनती है। बहता झरना, सारस, रंगीन मछलियाँ, डिजिटल पेंटिंग, रंगीन रोशनी, दीवारों पर चित्रकारी आदि उसे बेहद आकर्षक बनाते हैं।



- ❖ हान नदी के किनारे ड्रोन शो देखा जिसमें दो हज़ार ड्रोन द्वारा एकसाथ मिलकर कोरियाई फिल्म के पॉप डेमन हंटर्स के पात्रों तथा अन्य जगहों को आसमान में उकेरा गया। हज़ारों की भीड़ यह शो देखने आई थी।
- ❖ 'लोटे टावर' अत्याधुनिक तकनीकी से बना टावर (मीनार) है, जिसमें 123 मंज़िलें हैं। एक लिफ्ट केवल एक मिनट में 117वीं मंज़िल तक ले जाती है। यहाँ भी पारदर्शी शीशे से नीचे शहर का कुछ हिस्सा देखना रोमांचक है। रात में पूरा सियोल और हान नदी अत्यंत सुंदर दिखाई देते हैं।
- ❖ 'जोग्येसा मंदिर' में महात्मा बुद्ध की तीन सुनहरे रंग की प्रतिमाएँ अद्भुत लगती हैं। मंदिर के अंदर फूल ही फूल बिखरे हुए थे। प्रवेश द्वार पर बनी कलाकृतियाँ लुभावनी हैं।
- ❖ हमारे होटल से कुछ कदम पर ही 'म्योंगदोंग' स्ट्रीट मार्केट थी जहाँ अनेक व्यंजन मिलते हैं। वहाँ इतनी भीड़ होती है जैसे कोई मेला लगा हो। सभी जगह क्रिसमस की सजावट की गई थी जिससे रातें जगमगाती थीं। हम देर रात तक शहर में घूमते रहते थे।
- ❖ 'बुकचोन हनोक' गाँव जो जेसोंग राजवंश में कुलीनों और उच्च पदस्थ अधिकारियों के आवासीय क्षेत्र थे, इतना खूबसूरत और शानदार कि क्या कहना! यह आज भी पारंपरिक कोरियाई संस्कृति और वास्तुकला

जैसे घुमावदार छतें और लकड़ी के काम को दर्शाते हैं।

बीस दिनों में हम कुछ चुनिंदा जगहें ही देख पाए। ये स्थान पूरे देश का प्रतिनिधित्व करते हैं अर्थात् पूरे देश के मिजाज को समझने में सहायक हैं। जापान की तरह ही दक्षिण कोरिया एक तकनीकी संपन्न, सफाई में अब्बल, ट्रैफिक नियमों को लेकर सख्त, सुरक्षा की दृष्टि से बेहतरीन, नागरिक व्यवहार (सिविक सेंस) में श्रेष्ठ, सार्वजनिक शौचालय की सुविधा शानदार, पैदल चलने वालों को बाधारहित रास्ते, साफ़ हवा आदि देश को सर्वश्रेष्ठ बनाते हैं। एक विशेष खूबी देखी कि सड़क या गली में कोई भी खोमचे वाला नहीं होता था। खाने-पीने के स्टॉल और दुकानों के लिए एक बड़ी चौड़ी सड़क पर जगह दी गई है। सड़क पर, बाजार में, लोगों के चलने की जगहों पर कहीं भी अपनी गाड़ी, स्कूटर या साइकिल पार्क नहीं कर सकते। दक्षिण कोरिया को कैफ़े का शहर भी कहा जाता है। प्रतिदिन हमारी शुरूआत किसी एक कैफ़े की कॉफ़ी से होती और अंत भी। यह शहर दुनिया में कैफ़े (कॉफ़ी पेय) के लिए बहुत प्रसिद्ध है। छोटे से लेकर बड़े-बड़े कैफ़े जहाँ का माहौल और साज-सज्जा लुभावनी होती है। 'ऑलिव यंग' नाम से सौंदर्य प्रसाधन की दुकान हो या 'सेवेन इलेवन', 'जी एस', और 'सी यू' नाम के सुविधा स्टोर पूरे दक्षिण कोरिया में फैले हैं। प्रवास के बीस दिन ऐसे लगे जैसे किसी और ही दुनिया में आ गए हों। सच में यह यात्रा बहुत यादगार रही!! भविष्य में फिर से मौका मिला तो एक बार फिर से दक्षिण कोरिया ज़रूर जाऊँगी... !!!

संस्थान की राजभाषा गतिविधियाँ

हमारा संस्थान भारत सरकार की राजभाषा नीतियों की अनुपालना सुनिश्चित करने के लिए पूरी तरह से प्रतिबद्ध है तथा राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय द्वारा जारी वार्षिक कार्यक्रम के अनुरूप वर्ष भर विभिन्न गतिविधियाँ आयोजित करता रहता है। संस्थान में राजभाषा कार्यान्वयन को बढ़ावा देने के उद्देश्य से पिछले वर्ष के दौरान आयोजित की गई राजभाषा संबंधी प्रमुख गतिविधियाँ इस प्रकार हैं :-

हिंदी पखवाड़े का आयोजन

संस्थान ने राजभाषा हिंदी को बढ़ावा देने के लिए सरकारी निर्देशों और नियमों का पालन करते हुए 16 से 30 सितंबर

2025 तक “हिंदी पखवाड़ा 2025” का आयोजन किया। चूंकि 14 सितंबर 2025 को रविवार था और 15 सितंबर 2025 को गृह मंत्रालय के तत्वावधान में पाँचवें अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन में अनिवार्य उपस्थिति के कारण 16 सितंबर 2025 को हिंदी दिवस मनाया गया और उसी दिन से पखवाड़े का प्रारंभ किया गया। हिंदी दिवस के आयोजन के साथ और हिंदी कविता प्रतियोगिता से हिंदी पखवाड़े की शुरूआत हुई। हिंदी पखवाड़े के दौरान विभिन्न हिंदी प्रतियोगिताएँ (हिंदी कविता, हिंदी सामान्य ज्ञान, हिंदी शब्द ज्ञान, हिंदी निबंध, और हिंदी सुलेख) आयोजित की गईं। इन प्रतियोगिताओं में 500 से अधिक हिंदी भाषी



और गैर-हिंदी भाषी स्टाफ सदस्यों और छात्रों ने भाग लिया। 30 सितंबर 2025 को हिंदी पखवाड़े का समापन समारोह आयोजित किया गया, इन प्रतियोगिताओं के सभी विजेताओं को कर्नल (डॉ.) जगदीश जोशी (सेवानिवृत्त), मुख्य प्रशासनिक अधिकारी द्वारा नकद पुस्कार और प्रमाण पत्र प्रदान किए गए। उन्होंने हमारे संस्थान के सभी सदस्यों को अपने दैनिक कार्यों में राजभाषा हिंदी के प्रयोग को

बढ़ाने के लिए प्रोत्साहित भी किया। 29 सितंबर, 2025 को हमारे विक्रम साराभाई पुस्तकालय में हिंदी पुस्तकों की एक प्रदर्शनी भी आयोजित की गई। इस समापन समारोह के दौरान माननीय गृह मंत्री और अन्य गणमान्य व्यक्तियों से प्राप्त संदेशों को भी पढ़ा गया। हिंदी पखवाड़े के दौरान आयोजित सभी प्रतियोगिताओं के विजयी प्रतिभागियों के विवरण निम्न प्रकार से हैं :-







16 सितंबर 2025 – हिंदी कविता-पाठ (स्वरचित) प्रतियोगिता

हिंदीतर भाषी	
प्रथम	श्री हरिश वाघेला
द्वितीय	श्री रवि पाबारी
तृतीय	श्री विवेक
प्रोत्साहन	श्री राजर्षि मुखर्जी
हिंदीभाषी	
प्रथम	श्री अनंत
द्वितीय	श्री हरीश प्रेमी
तृतीय	श्री नरेन्द्र शुक्ल
प्रोत्साहन	श्री उमेश मेहता

18 सितंबर 2025 – ऑनलाइन हिंदी सामान्य-ज्ञान प्रतियोगिता

प्रथम	श्री प्रकाश पटेल
द्वितीय	सुश्री रत्ना भट्ट
तृतीय	श्री प्रिन्स कुमार
प्रोत्साहन	सुश्री दिपाली चौहान

22 सितंबर 2025 – हिंदी शब्द-ज्ञान प्रतियोगिता

हिंदीतर भाषी	
प्रथम	श्री चिंतन पटेल
द्वितीय	श्री प्रतीक पटेल
तृतीय	श्री निरज दवे
प्रोत्साहन	श्री विरल सोलंकी
हिंदीभाषी	
प्रथम	सुश्री मोनिका पटेल
द्वितीय	श्री नरेन्द्र शुक्ल
तृतीय	श्री हरीश प्रेमी
प्रोत्साहन	सुश्री श्वेता सिंह

24 सितंबर 2025 – हिंदी निबंध प्रतियोगिता

हिंदीतर भाषी	
प्रथम	श्री जगदीशकुमार रबारी
द्वितीय	श्री रवि पाबारी
तृतीय	श्री नवनाथ नानासाहेब पवार
प्रोत्साहन	सुश्री उमा एच. जानी
हिंदीभाषी	
प्रथम	सुश्री मोनिका उमेश पटेल
द्वितीय	सुश्री मेदिनी राज
तृतीय	सुश्री तान्या आहूजा
प्रोत्साहन	श्री आयुष मिश्रा

26 सितंबर 2025 – हिंदी सुलेख प्रतियोगिता

प्रथम	श्री सुरेश कुमार चौहान
द्वितीय	श्री गोविंद देसाई
तृतीय	श्री महेश आर. देसाई
प्रोत्साहन	श्री जगदीशकुमार रबारी

हिंदी कार्यशालाओं का आयोजन

राजभाषा विभाग द्वारा जारी वार्षिक कार्यक्रम के अनुरूप सभी कर्मचारियों एवं अधिकारियों को हिंदी में काम करने के लिए प्रेरित करने और हिंदी में काम करने के प्रति उनकी द्विज्ञक को दूर करने के उद्देश्य से पिछले वर्ष संस्थान में चार कार्यशालाओं का आयोजन किया गया। पिछले वर्ष के दौरान संस्थान में कार्यशालाओं का आयोजन क्रमशः 5 मार्च 2025, 19 जून 2025, 26 सितंबर 2025 एवं 29 दिसंबर, 2025 को किया गया। इन कार्यशालाओं में 150 से अधिक प्रतिभागियों ने भाग लिया।

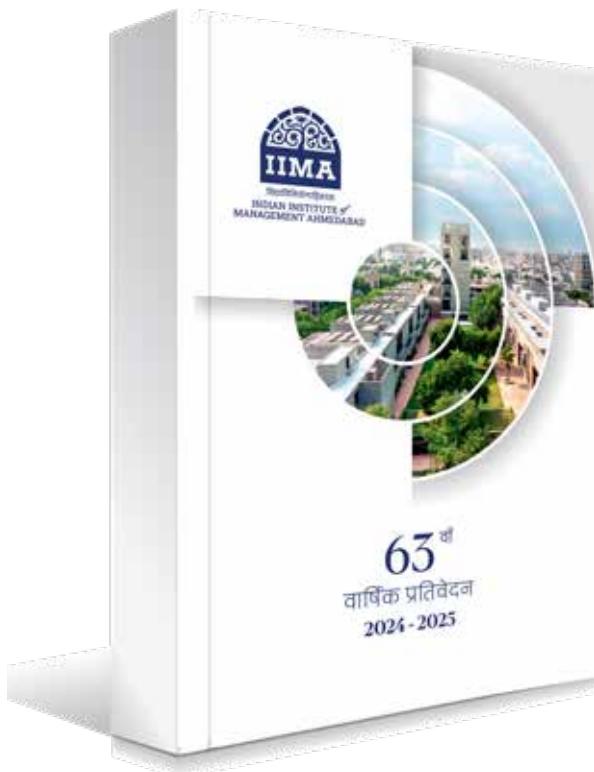


राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक

संस्थान की राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठकें समय-समय पर आयोजित की जाती रही हैं। पिछले वर्ष के दौरान प्रत्येक तिमाही के अनुरूप चार बैठकों का आयोजन किया गया। इन बैठकों में राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार से संबंधित विभिन्न निर्णय लिए गए तथा इन निर्णयों के कार्यान्वयन की समीक्षा भी गई। इन बैठकों के कार्यवृत्तों की प्रति शिक्षा मंत्रालय (राजभाषा विभाग) एवं नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति को भेजी गई।

संस्थान के वार्षिक प्रतिवेदन का हिंदी अनुवाद

वित्त वर्ष 2024-25 के संस्थान के 63वें वार्षिक प्रतिवेदन का हिंदी में प्रकाशन किया गया है। इस वित्त वर्ष का हिंदी वार्षिक प्रतिवेदन 200 से अधिक पृष्ठों में प्रकाशित हुआ है, जिसे भारत सरकार के दोनों सदनों – लोक सभा और राज्य सभा में प्रस्तुत किया जाता है। इस वर्ष के वार्षिक प्रतिवेदन का हिंदी अनुवाद कार्य निर्धारित समय सीमा में किया गया है और इसे निर्धारित समय पर प्रकाशित करते हुए शिक्षा मंत्रालय को भेजा गया है।



रोशनी

- नीलम वाडेर,
सहायक प्रबंधक



मुझे रोशनी चाहिए, कहाँ है रोशनी ?

बेटा तुझे रोशनी चाहिए, ये बटन दबा।

मैंने बटन दबाया तो अँधेरा गायब।

हर जगह रोशनी ही रोशनी।

तो ये रोशनी आई कहाँ से ?

ये रोशनी अंधकार से आई है।

इसी रोशनी से हम कई जगह रोशन कर सकते हैं।

लेकिन रोशनी को टटोलने के लिए हमें अंधकार में जाना चाहिए।

रोशनी को ढूँढ़ने के लिए हम यहाँ वहाँ घूमते हैं,
फिसलते हैं, ठोकरें खाते हैं,

लेकिन हमें कहीं रोशनी नहीं मिलती।

अंधेरों में उनकी चाबी भी नहीं दिखती।

अपनी आँखों से हमें कभी चाबी नहीं दीख पाएंगी।

उनको खोजने के लिए मन की आँखे खोलनी पड़ेंगी।

रोशनी तो हर जगह है,

अपनी आँखों से हम नहीं देख पाते।

अपनी आँखों से हम खुद को नहीं देख पाते तो रोशनी कहाँ से दिखाई देगी ?

हमें अपने आप को देखने के लिए दर्पण के सामने जाना पड़ेगा।

आध्यात्मिकता से देखेंगे तो ये संसार एक दर्पण है,

संसाररूपी दर्पण में हमें कैसे पेश आना है वो

हमें पता होना चाहिए।

दर्पण भी हमें रोशनी में ही दिखाते हैं,

तो हमें रोशनी पाने के लिए गुरु चरणों में जाना पड़ेगा।

गुरु रूपी चाबी हमारी मन की आँखे खोल देगी,

और हमारे जीवन में रोशनी ही रोशनी हो जाएगी।

भ्रष्टाचार : एक सामाजिक अभिशाप

मोनिका उमेश पटेल,
सहायक प्रबंधक



भ्रष्टाचार, एक सामान्य-सा शब्द है, पर आम तौर पर, आम लोगों द्वारा, आम बातों में जिक्र पाने वाला और अत्यंत ही आम हो चुका शब्द है। लेकिन क्यों? भ्रष्टाचार आखिर है क्या और क्यों ये अपने पैर इतने पसारे हुए हैं? इस शब्द का संधि विच्छेद किया जाए तो भ्रष्ट+आचार, याने भ्रष्ट व्यवहार। वैसे तो अमूमन लोग कहते हैं कि भ्रष्टाचार अर्थात् राजनीति अथवा कारोबार में किया जाने वाला गबन अथवा ऐसी कोई बेर्इमानी भरी हरकत। किंतु शाब्दिक अर्थ देखा जाए तो भ्रष्टाचार का अर्थ होता है, हर वह व्यवहार अथवा कार्य जो नीति के विरुद्ध हो।

भ्रष्टाचार की नींव : वैसे तो भ्रष्टाचार की नींव सदैव छोटी-छोटी चीजों पर ही टिकी होती है। कभी-कभी तो इसकी शुरूआत परिवार में भी होती है। एक छोटे बच्चे को विद्यालय से अवकाश दिलाने हेतु लिखा या लिखवाया गया हर गलत या झूठा आवेदन पत्र भ्रष्टाचार ही तो है, परंतु ये बहुत छोटे तौर पर मौजूदगी की वजह से भ्रष्टाचार की गिनती में नहीं आता। लेकिन यदि इन छोटी-छोटी बातों का ध्यान ना रखा जाए, तो ऐसे मासूम बच्चे झूठ बोलना और गलत तरीके से हालातों को अपने अनुकूल बनाना, इसे ही सामान्य बात समझना शुरू कर देते हैं।

आम तौर पर भ्रष्टाचार की श्रेणी में आने वाले कुछ क्षेत्र निम्नलिखित के अनुसार है :-

नौकरी : नौकरी पाने के लिए लोग रिश्तत देते हैं अथवा पहचान निकालने की कोशिश करते हैं। रिश्तत केवल पैसों से नहीं दी जाती, अपितु इस तरह की रिश्तत की भी विभिन्न प्रजातियाँ होती हैं। नौकरी वाली श्रेणी में सामान्यतः सरकारी संस्थाएँ अथवा सरकारी नौकरियाँ आती हैं। बिना भ्रष्टाचार के कदाचित् सरकार का कोई भी महकमा बाकी नहीं है जहाँ नौकरी देने और लेने, पदोन्नति में क्रम बदलने आदि का

कारोबार ना होता हो।

शिक्षा : इस क्षेत्र का एक पहलू नौकरी के साथ जुड़ा है और वह है शिक्षकों की भर्ती। इसके अलावा, शिक्षा में और भी कई तरह के भ्रष्टाचार देखे जाते हैं। कुछ विद्यालयों में शिक्षक अपनी कक्षा में पाठ्यक्रम सही तरह से पूरा नहीं करते और अपनी अलग से कोचिंग (निजी) दिया करते हैं। अच्छे अंक देने के लिए विद्यार्थियों से रिश्तत लेते हैं। एक समय था जब भारत में गुरु-शिष्य परंपरा मौजूद थी, जहाँ एक गुरु अपने शिष्य से कोई अपेक्षा नहीं रखता था और शिष्य अपने गुरु की उपेक्षा नहीं करता था।

शिक्षा के क्षेत्र में तो वर्तमान में एक नई किस्म भी पैदा हो गई है। जबसे भारत में शिक्षा का अधिकार के तहत प्रत्येक निजी विद्यालय में कुछ बैठकें आरक्षित रखना शुरू हुआ है, लोग अपने बच्चों को महँगे स्कूलों में दाखिला दिलाने के लिए गलत दस्तावेजों का उपयोग करने लगे हैं और कुछ विद्यालयों के प्रबंधक स्वयं इस कानून के प्रावधानों के पालन में छेड़छाड़ करने लगे हैं, ऐसा देखने में आया है।

राजनीति : राजनीति अर्थात् भ्रष्टाचार का गढ़। वैसे तो राजनीति में अब केवल राज ही रह गया है, नीति तो कदाचित् विलुप्त होने के कगार पर है। पार्टी का टिकट मिलने में, चुनाव के प्रचार में, मतदाताओं को प्रलोभन देने में, मत गणना में और स्वार्थ में आकर पार्टी बदलने में यानि आरंभ से अंत तक, हर कदम पर भ्रष्टाचार अपनी जड़ें फैला चुका है।

व्यवसाय : राजनीति का ही छोटा भाई है व्यवसाय। कारोबारियों का काम मानों कि आज भ्रष्टाचार के बिना चलता ही नहीं। सरकारी टेंडर लेने की बात हो अथवा बनाई जाने वाली सङ्करियों और इमारतों में लगने वाले घटिया गुणवत्ता के सामान की, भ्रष्ट तो तकरीबन सब ही हैं।

चिकित्सा : चिकित्सा एक ऐसा क्षेत्र है जहाँ भ्रष्टाचार का होना इंसान के जीवन के साथ और उसके शरीर के साथ खिलवाड़ के समान है। आए दिन अखबारों में हम पढ़ते हैं कि फलाँ-फलाँ अस्पताल में ऑपरेशन के दौरान किसी मरीज का गुर्दा निकाल लिया गया थथा गलत दवाई दे दी गई। इतना ही नहीं, सरकार द्वारा चलाए गए कई अभियानों अथवा नई स्कीमों का भी गलत लाभ उठाने का भ्रष्टाचार ऐसे अस्पतालों में ही होता है।

उपरोक्त तो केवल एक झाँकी है, भ्रष्टाचार के इस वृक्ष की जड़ें तो ना जाने कहाँ-कहाँ और कौन-कौन सी दिशाओं में प्रस्थापित हैं। किंतु भ्रष्टाचार हमारे समाज के लिए एक बहुत बड़ा अभिशाप बन चुका है। जब एक विद्यालय में शिक्षक रिश्वत लेकर गलत विद्यार्थी को उत्तीर्ण करता है तब बाकी अर्हक विद्यार्थियों के साथ अन्याय होता है। जब एक कार्यालय भ्रष्टाचार के तहत किसी को नौकरी देता है तो यह किसी योग्य इंसान के साथ अन्याय है और जब एक पुलिस कर्मी रिश्वत लेकर किसी बड़े पदाधिकारी के दबाव में एक अपराधी को छोड़ देता है, तब ऐसा भ्रष्ट आचरण पूरे समाज के साथ अन्याय है।

भ्रष्टाचार की रोकथाम : भारत की वर्तमान परिस्थितियों के परिप्रेक्ष्य में यदि देखा जाए, तो भ्रष्टाचार को मिटाना या जड़ से सफाया करना नजदीक के भविष्य में संभव नहीं लगता, किंतु कुछ कदम उठाने से धीरे-धीरे इसे काबू में लाया जा सकता है।

- बचपन से ही घर में नैतिकता और ईमानदारी की सीख दें और स्वयं के उदाहरण से बच्चों को सिखाएँ।
- रिश्वत देकर कोई कार्य करने एवं करवाने का आग्रह ना रखें।
- सतर्कता एवं भ्रष्टाचार निरोधक विभाग की मदद लें।
- अपने विभागों में स्पष्ट एवं कठोर नियमावली बनाएँ और उसका पालन करें।
- अपराध तभी रुक सकता है जब इंसान को यह डर हो कि उसको उचित परिणाम भुगतना पड़ेगा। विधि और विधान को इतना मजबूत बनाएँ कि यह डर बना रहे।
- अपने सिस्टम को इतना मजबूत रखें कि कहीं कोई गलती होने की संभवना ही ना रहे।

भारत वही देश है जहाँ न्याय के लिए विभीषण ने रावण का और पांडवों ने कौरवों का साथ छोड़ दिया। इसी परंपरा को आगे बढ़ाने की अब भी आवश्यकता है। भारत में भ्रष्टाचार एक बीमारी नहीं, बल्कि एक गहरा सामाजिक संक्रमण है। यह व्यक्ति, परिवार, समाज, राजनीति, शिक्षा और अर्थव्यवस्था में जड़े जमा चुका है। लेकिन बीमारी चाहे जितनी पुरानी हो, अगर इलाज सही हो, इच्छाशक्ति मजबूत हो और समाज जागरूक हो जाए तो उसका अंत संभव है। एक ईमानदार व्यक्ति भ्रष्ट समाज में अकेला नहीं होता, वह परिवर्तन का पहला कदम होता है। अब वो दिन दूर नहीं हैं जब भारत सिर्फ सबसे बड़ा लोकतंत्र ही नहीं, बल्कि सबसे ईमानदार राष्ट्र कहलाएगा।

मन छोटे

- प्रतीक पटेल,
एमटीएस, आईजीपीसी



कुछ अजीब-सी है,
दस्तान-ए-ज़िन्दगी !!

तलाश किसी को अच्छे खाने की,
तो किसी को सिर्फ दो जून खाने की !!

खुशी है किसी को की शाम हो गई,
तो किसी को लगता है डर, ल्यो शाम हो गई !!

माँग रहा कोई अपनों के लिए,
तो कोई माँग रहा अपनों से !!

हँस रहा है कोई हालात में,
तो कोई हँस रहा हालात पे !!

थोड़ा रुक के देखा जब,
तो पता चला ...

बड़ी होती गई इमारतें,
और मन छोटे!!

आत्मा का बंधन

श्रीमती सविता शर्मा,
पत्नी, डॉ. मुकेश शर्मा



कमरे की रोशनी धीमी थी। बाहर बारिश हो रही थी। रोहन के मन में एक तूफान चल रहा था। रोहन एक सौम्य और खुशमिजाज लड़का जिसने जानबूझकर कभी किसी का दिल दुःखाने की कल्पना भी नहीं की। ऐसे व्यक्ति के साथ विधाता ने कुछ ऐसा मज़ाक किया जिसे सुनकर हर किसी को झटका लगा। आज रोहन की पत्नी निशा ने रोहन को तलाक का नोटिस भिजवाया है जिसे देखकर ना केवल वह रोहन बल्कि उसके माता-पिता, छोटा भाई - सब हैरान हैं। किसी को समझ नहीं आ रहा कि आखिर निशा ने इतना बड़ा कदम कैसे उठाया।

निशा अपने ही नाम की तरह काली अंधेरी रात बन जायेगी यह किसी ने स्वप्न में भी नहीं सोचा था। दो साल पहले ही रोहन और निशा का विवाह बड़ी ही धूमधाम से हुआ था और दोनों का जीवन बहुत ही सुखमय बीत रहा था। शादी के चार-पाँच महीने कैसे बीत गए किसी को पता ही नहीं चला। इतनी सुंदर और संस्कारी पत्नी पाकर जहाँ रोहन अपने आपको धन्य मान रहा था, वहीं उसके माता-पिता भी खुशी से फूले नहीं समा रहे थे। ससुराल में आते ही जहाँ निशा ने अपने गुणों से सबका मन जीत लिया, वहीं चार महीने में परिवार जनों को उनके जीवन में आने वाले नए मेहमान की खुशखबरी देकर भाव विभोर कर दिया।

निशा माँ बनने वाली है यह जानकर रोहन के माता-पिता भी खुशी से उछल पड़े। निशा के मम्मी-पापा तो उसकी शादी से पहले ही चल बसे थे इसलिए रोहन की माँ तो यही चाहती थी कि निशा की डिलिवरी उनके पास ही हो लेकिन जैसा कि हर लड़की चाहती है कि उसका पहला बच्चा अपने मायके में हो। तो निशा जिद करके अपने भाई-भाई के पास चली गई और वहीं उसने एक प्यारी-सी बिटिया को जन्म दिया। मायके जाने से पहले तक निशा का व्यवहार बहुत मूदुल था। वह सास-ससुर को अपने माता-पिता की तरह ही आदर देती थी। निशा और रोहन भी एक दूसरे को

प्रेम और मान-सम्मान देते थे लेकिन बिटिया के जन्म के बाद से ही निशा एकदम बदल गई। रोहन जब भी उसे अपने घर चलने के लिए कहता, उसके भाई-भाई और निशा हर बार उसके साथ नहीं आने के बारे में कोई न कोई बहाना बना देते।

रोहन का कपड़े का व्यापार है तो वह बार-बार अपना काम धंधा छोड़कर निशा के पास नहीं जा सकता था। इसी बात को लेकर दोनों के रिश्ते में खिंचाव आने लगा। रोहन के मम्मी-पापा ने भी एक दो बार प्रयास किया कि अब तो बच्ची चार-पाँच माह की हो गई है और निशा की भी रिकवरी हो गई है। अब तो उसे अपने घर चलना चाहिए, लेकिन अब निशा ने अपना असली रंग दिखाना शुरू कर दिया।

अब तक जो रूप निशा ने अपने ससुराल वालों को दिखाया था असल में वह तो बनावटी था। अब तो वह यह समझ रही थी कि आखिर रोहन की कमाई कितनी है। उसके परिवार वालों की धन सम्पत्ति कितनी है। और सोचती रहती कि ये तो सिर्फ सामान्य-से लोग हैं। रोहन तो सिर्फ जीवन-यापन करने भर का ही कमाता है। अब निशा को रोहन और अपने सास-ससुर में सिर्फ कमी ही कमी दिखाई देने लगी। निशा को जो भी समझाते उन सबको वह जलील करने लगी। जब भी रोहन ने उसे अपने घर चलने को कहा, उसका एक ही जवाब रहता था, कि "तुम जितना कमाते हो उतने में तो मेरी हसरतें पूरी नहीं हो सकती"।

रोहन ने उसे अपनी बच्ची का वास्ता दिया, हर सम्भव प्रयास किया कि वह कैसे भी करके अपनी बच्ची से दूर ना हो, लेकिन अहंकारी और पैसों की भूखी निशा ने अपनी फूल-सी बच्ची की परवाह किये बिना आज रोहन को तलाक का नोटिस भिजवा दिया। रोहन इतना भी कम नहीं कमाता है कि वह अपने परिवार का भरण-पोषण ना कर सके। वह इस लायक तो है ही कि अपनी बेटी को एक खुशहाल जिंदगी दे सके। लेकिन आज एक अभिमानी माँ ने, पिता और बेटी

को हमेशा के लिए अलग करने के लिए रोहन को दहेज और घरेलू हिंसा के झूठे केस में फँसा दिया। रोहन रह-रह कर यही सोच रहा है कि अपनी पत्नी के साथ इस तरह के व्यवहार की तो वह कल्पना भी नहीं कर सकता। निशा ने अपने बच्चे की माँ होकर, पत्नी होकर इस तरह का आरोप कैसे लगा दिया!!

क्या आज की लड़की ईश्वर से ज़रा भी नहीं डरती! क्या यही असली आधुनिकता है! क्या यही न्याय व्यवस्था है, जहाँ एक सीधे-सादे परिवार को बिना किसी गलती के कोर्ट-कचहरी के चक्कर कटवाये जा रहे हैं। सरकार ने लड़कियों की सुरक्षा के लिए जो कानून बनाए, उसका दुरुपयोग निशा जैसी लड़कियाँ कितनी बेशर्मी से कह रही हैं। निशा इतनी लालची निकलेगी यह तो कोई सपने में भी नहीं सोच सका। रोहन अपने आपको तो कैसे भी करके समझा लेगा, लेकिन उसे उस बच्ची का कसूर समझ नहीं आ रहा जिसका इतना भरा-पूरा परिवार होते हुए भी उसे अपने परिवार से वंचित रखा जा रहा है। एक लालची माँ ने सिर्फ पैसों के लिए एक बच्ची को अपने पिता, दादा, दादी, चाचा-चाची, भैया जैसे प्यार भरे रिश्तों से दूर कर दिया।

कानून चाहे रोहन के साथ अन्याय कर दे, लेकिन एक अदालत ऐसी भी है, जहाँ हर कर्म की सजा मिलती है। एक नहीं-सी जान को अपने पिता से अलग करने का कुर्कम जो निशा कर रही है उसकी सजा उसे अवश्य मिलेगी। यह रोहन की आत्मा की आवाज़ है। आज नहीं तो कल, रोहन अपनी प्यारी गुड़िया से अवश्य मिलेगा यह उसके दिल की आवाज़ है। रोहन और उसकी बच्ची का रिश्ता, निशा के रिश्ते जैसा खोखला और लालच पर टिका हुआ नहीं है बल्कि, एक सच्चे और सीधे पिता की आत्मा का बंधन है। जिसे स्वयं परमात्मा ने जोड़ा है, किसी के लिए भी इस बंधन को तोड़ पाना असंभव है।



**“ हिंदी के द्वारा सारे भारत को
एक सूत्र में पिरोया जा सकता है। ”**
महर्षि स्वामी दयानंद

शतरंज

नीलम वाढेर,
सहायक प्रबंधक



ये शतरंज है चौसठ खानों का खेल, दो लोग नहीं इसे खेल रही दो टीम। सोलह सदस्यों की बनी हर एक टीम, एक दूजे के साथ बिना जीत नहीं मुमकिन।
ये शतरंज है

सबसे बड़ा राजा है, जो एक कदम ही चल पाए, बिना किसी की सहायता के वो कुछ भी न कर पाए। उसकी जीत का आधार है उसकी बेहतर टीम।
ये शतरंज है

रानी के पास है सबसे ज्यादा ताकत, शुरुआत से ही वो खड़ी है अपने राजा के साथ। इधर-उधर कहीं पर भी जाकर वो किसी को भी दे सकती है मात।
ये शतरंज है.....

दो कोने में दो हाथी खड़े, सीधा चलना जिनका काम, दोनों अगर मिल जाये तो जीत करदे आसान, रानी के बाद है आता हाथी का नाम।
ये शतरंज है.....

दो घोड़ों के पास है कुछ गजब की शक्ति, ढाई कदम में कूद के वह करदे सबकी छुट्टी। उनके लिए मुमकिन है चलना पहली चाल। ये शतरंज है.....

टेढ़े चलते दोनों ऊंट के हैं कुछ ऐसे बंधन, एक दूजे के स्थान पे रख नहीं सकते कदम, है घोड़े जितना मूल्य उनका, हो खड़े राजा-रानी के पास।
ये शतरंज है.....

आगे खड़े हैं आठ-आठ सिपाही, लड़के मरने को तैयार, एक-एक कदम बढ़ते जाते हैं, बनते हैं एक दूजे के सहायक, उनका मूल्य कम नहीं आँकना, कुछ भी बन सकते हैं वो अगर पहुँचे सामने किनारा।
ये शतरंज है.....

सिर्फ एक बोर्ड गेम समझने की न करना भूल कोई, इसकी हर एक चाल है सबके जीवन से जुड़ी। सोच समझ के है बढ़ाना अपना हर एक कदम।
ये शतरंज है.....

हम कभी खेलते हैं खुद को बचाने को, तो कभी खेलेंगे सामने वाले को हराने को, कभी हम खुद को भी मिटा देंगे, अगर जीतती है हमारी टीम। ये शतरंज है.....

डिस्लेक्सिया: बाल्यकाल में भाषाई अधिगम की तंत्रिका-जैविक वृन्दावियाँ एवं समावेशी समाधान

मृदुल जोशी,
पति, बिन्दु डोडिया



कल्पिता अपने पुत्र के आलस से कलांत रहती थी। वो बार-बार शिकायत करती की उसका बच्चा पढ़ने में आलसी है, पढ़ता नहीं है, और उसे याद करने में जोर आता है। वो पढ़ाई करने बैठता है तो बस किताब को घूरता रहता है। फिर मन में आया तो एक पन्ना पढ़ कर किताब रख देता है।

यही हाल अभिषेक बच्चन की पुत्री आराध्या का था और उसकी भांजी नव्या नवेली का भी यही हाल था। अभिषेक की पुत्री और भांजी साथ-साथ खेलती थी पर पढ़ाई करने में उन्हें बहुत दिक्कत होती थी। अभिषेक तो यह मान चुका था की शायद उसकी पुत्री में बुद्धि की अल्पता है। लेकिन एक बार उसकी पुत्री ने एक अजीब-सी समस्या को बहुत सरलता से सुलझा दिया और तो अभिषेक को आश्वर्य हुआ। एक दिन अभिषेक ने अपने दोस्त जो कि एक चिकित्सक हैं, उससे बात करी और अपने आश्वर्य को बताया। चिकित्सक दोस्त ने कहा कि शायद उसकी पुत्री डिस्लेक्सिक है।

मानव के उन्नयन में संवाद का प्रादुर्भाव उत्क्रांती में महत्वपूर्ण पड़ाव बनकर उभरा था और यही कारण है कि विकास की समय रेखा में भाषा एक गहन नींव से लेकर आधारभूत स्तंभ के नाई प्रस्तुत हुई है। मस्तिष्क में बदलाव और संवाद की उन्नत विधा का जन्म एक दूसरे से जुड़े ही रहे हैं। भाषा के उपयोग में मस्तिष्क में सूचना का प्रसंस्करण अत्यंत गहन व जटिल रूप में होता है। और यह सूचारू रूप में होने से हम कुछ शब्दों के समुच्चय को संवाद का माध्यम बना कर प्रस्तुत करते हैं। किंतु, संज्ञानात्मक मनोविज्ञान और तंत्रिका विज्ञान के क्षेत्र में हुए कई शोधों में यह स्पष्ट हुआ है कि प्रत्येक मस्तिष्क सूचनाओं का प्रसंस्करण एक सामान नियामक और रीति से नहीं करता है। फलस्वरूप कई मस्तिष्क एक सामान्य संवाद में अक्षमता का आभास

कराते हैं। वैज्ञानिक भाषावली में इसे डिस्लेक्सिया कहा जाता है। ‘डिस्लेक्सिया’ (Dyslexia), जिसे हिंदी में ‘पठन वैकल्प्य’ या ‘वाचन अक्षमता’ के रूप में परिभाषित किया जा सकता है। यह एक ऐसी ही विशिष्ट अधिगम अक्षमता है जो मुख्य रूप से शब्द-पठन, वर्तनी-लेखन और ध्वन्यात्मक प्रसंस्करण को प्रभावित करती है। यह लेख डिस्लेक्सिया के वैज्ञानिक पक्षों, शोध सन्दर्भों और इससे प्रभावित बच्चों के प्रति अपेक्षित संवेगात्मक व शैक्षणिक व्यवहार का एक गहन विश्लेषण प्रस्तुत करता है।

डिस्लेक्सिया कोई बौद्धिक न्यूनता नहीं है, अपितु लिखित भाषा के प्रतीकों को उनकी ध्वनियों के संयोजन में मस्तिष्क की निर्बाधता की अक्षमता है। आधुनिक तंत्रिका-बिम्बण तकनीकों (न्यूरो इमेजिंग), जैसे एफएमआरआई (फ़ंक्शनल मैग्नेटिक रीजोनेंस इमेजिंग) अथवा कार्यात्मक चुम्बकीय अनुनाद बिम्बण, ने यह प्रमाणित किया है कि डिस्लेक्सिया से प्रभावित बालकों के मस्तिष्क के वाम गोलार्द्ध के उन क्षेत्रों में सक्रियता कम होती है जो भाषाई प्रसंस्करण के लिए उत्तरदायी होते हैं।

डॉ. सैली शायविट्ज़: येल डिस्लेक्सिया एवं रचनात्मकता केंद्र की सह निदेशक डॉ. शायविट्ज़ ने अपने दीर्घकालिक शोध कनेक्टिकट लोंगीत्युडनल स्टडी में प्रतिपादित किया कि डिस्लेक्सिया एक ‘अपेक्षित उपलब्धि और वास्तविक क्षमता के बीच का अंतराल’ है। उन्होंने स्पष्ट किया कि यह विकार उच्च बुद्धिलब्धि वाले बालकों में भी समान रूप से विद्यमान हो सकता है। ज्ञातव्य है की कई वैज्ञानिक और प्रभावशाली व्यक्तित्व शुरू में इस अक्षमता का शिकार रह चुके थे और शनैः शनैः उन्होंने इसे दूर किया। एक और परिकल्पित विचार है जिसे द डबल डेफिसिट हाइपोथिसिस कहते हैं जो कि मेरीएन वोल्फ और पेट्रीसिया

बोर्स द्वारा प्रस्तुत किया गया है। इस विचार के अनुसार ‘डिस्लेक्सिया’ केवल ध्वन्यात्मक जागरूकता की कमी नहीं है, बल्कि इसमें ऐपिड ऑटोमैटाइज्ड नेमिंग अथवा द्रुत स्वप्रेरित नामोल्लोख’ की अक्षमता भी सम्मिलित है, जिससे कोई भी बालक शीघ्रता से अक्षरों को पहचानने में विफल रहता है।

बाल्यकाल में डिस्लेक्सिया के लक्षणों को पहचानना दुरुह ही होता है। प्रारंभिक अवस्था में इसे ‘असावधानी’ या ‘आलस्य’ समझ लिया जाता है। इसके प्रमुख लक्षण निम्नलिखित हैं:-

- **ध्वन्यात्मक विखंडन :** इसके कारण शब्दों के भीतर ध्वनियों के हेर-फेर को समझने में कठिनाई होती है। उदाहरण स्वरूप, ‘कमल’ और ‘कलम’ के सूक्ष्म अंतर को न समझ पाना। कल्पिता का बालक शब्द में अक्षर के हेर फेर को समझ नहीं पाता था। और कल्पिता को लगता था कि शायद बच्चा प्रमादी है इसलिए इसको शब्द याद नहीं रहते।
- **दृश्यात्मक विपर्यय:** अक्षरों के दर्पण प्रतिबिंब (मिरर इमेज) बनाना, जैसे अङ्ग्रेजी ‘बी’ को ‘डी’ या हिंदी के ‘प’ को ‘फ’ समझना। कई बच्चे शब्द को यथावत देखकर दुहराने के बजाए थोड़ी विलगता दिखाते हुए कुछ और ही पढ़ने लगते हैं।
- **स्मृतिजन्य व्यवधान:** इस व्यवधान में दिए गए निर्देशों को क्रमानुसार याद रखने में अक्षमता और नवीन शब्दावली को आत्मसात करने में विलंब होता है। ऊपर जैसे बताया की अभिषेक की भाँजी डिस्लेक्सिक थी। उसको वाक्य याद करने में दिक्कत होती थी। जब भी उसे भाषा का पाठ पढ़ाया जाता तो वह शब्दों को उलट फेर कर के दोहराती।

आप सभी ने डिस्लेक्सिक बालक पर एक चलचित्र देखा होगा ‘तारे ज्मीन पर’। असल में डिस्लेक्सिया से ग्रस्त बालक को बहुत जिम्मेदारी से संभालना होता है। क्योंकि वह काबिल तो होता है लेकिन एक अलग ही तंत्र को समावेश किये हुए। ऐसे बालक सार्वभौमिक स्तर के अनुरूप स्थापित सामाजिक व्यवस्था में प्रायः अपनी शैक्षणिक और सामाजिक विफलताओं के कारण हीन भावना और सामाजिक अलगाव का अनुभव करते हैं। उनके भाषाई

कौशल को परिष्कृत करने के लिए समाज और शिक्षकों को ‘समानुभूति’ (एम्पैथी) और ‘वैज्ञानिक प्रविधियों’ का समन्वय करना अनिवार्य है। वैज्ञानिक कहते हैं कि ऐसे बालकों के साथ एक प्रशिक्षित व्यवहार और संवाद से संपर्क स्थापित करना चाहिए। यह एक शारीरिक समस्या है जो मनोवैज्ञानिक स्तर पर परिभाषित होने लगती है।

मनोवैज्ञानिक एवं संवेगात्मक अवलंबन: डिस्लेक्सिया से पीड़ित बच्चों के साथ व्यवहार करते समय ‘धैर्य’ सर्वोपरि है। उनकी त्रुटियों को अनुशासनहीनता के बजाय एक ‘तंत्रिका-जैविक भिन्नता’ के रूप में स्वीकार करना चाहिए। निरंतर आलोचना उनके ‘आत्म-सम्मान’ को खंडित कर सकती है, जिससे ‘अधिगम-विमुखता’ (लर्निंग एवर्जन) की स्थिति उत्पन्न होती है। वे संभवतः अंतर्मुखी होने लगते हैं और समाज से दूर रहने लगते हैं।

बहु-संवेदी शिक्षण पद्धति: सैमुअल ऑर्टन और अन्ना गिलिंघम द्वारा विकसित ‘ऑर्टन-गिलिंघम पद्धति’ डिस्लेक्सिया के उपचार में स्वर्ण-मानक मानी जाती है। इसमें दृश्य, श्रव्य, और स्पर्श इंद्रियों का एक साथ उपयोग किया जाता है।

स्पर्श विधि: एक उथली थाल में रंगीन रेत या नमक फैलाकर बालक को अपनी उंगलियों से अक्षरों की आकृति उकेरने को कहें। रेत का खुरदारापन मस्तिष्क को तीव्र संवेदी संकेत भेजता है, जिससे अक्षर की छवि स्थायी होती है। रेगमाल (सैंड पेपर) से कटे हुए अक्षरों पर उंगली फेरते हुए बालक को उस अक्षर की ध्वनि का उच्चारण करना चाहिए। यह स्पर्श और श्रवण का एक शक्तिशाली समन्वय है। बालक को अपनी पूरी भुजा का विस्तार करते हुए हवा में बड़े अक्षरों को ‘लिखने’ के लिए प्रोत्साहित करें। इसमें कंधे की मांसपेशियों का उपयोग होता है, जो ‘ग्रॉस मोटर मेमोरी’ को सक्रिय करता है, जिससे अक्षरों के दर्पण प्रतिबिंब की समस्या कम होती है।

रंग-वर्गीकरण: विभिन्न स्वर और व्यंजनों के लिए विशिष्ट रंगों का प्रयोग करना ताकि मस्तिष्क उन्हें अलग-अलग श्रेणियों में संकलित कर सके। बालक को इस तरह से शब्द और अक्षर एक विभिन्नता में प्रस्तुत हो जाते हैं। उदाहरण के लिए, ‘हिंदी’ में मात्राओं को सदैव लाल रंग से और मूल अक्षरों को नीले रंग से अंकित करना, जिससे बालक

मात्राओं के विभेद को स्पष्ट रूप से समझ सके। प्रत्येक कठिन शब्द के साथ एक लघु चित्र जोड़ें। यदि बालक 'वृक्ष' शब्द पढ़ रहा है, तो शब्द के साथ वृक्ष का एक स्पष्ट रेखाचित्र एक भिन्न रंग में उसकी 'दृश्य शब्दकोष' बनाने में सहायता करेगा। इसके अलावा कई अन्य चिकित्सीय रणनीतियों को समावेश कर इस बिमारी को न्यूनतम किया जा सकता है। चिकित्सक कई विधियों का उपयोग करके डिस्लेक्सिया को दूर करने का प्रयास करते हैं।

उपचारात्मक रणनीतियाँ

ध्वन्यात्मक जागरूकता : शब्दों को खंडों में तोड़कर पढ़ने का अभ्यास।

- सहायक तकनीक :** 'स्पीच-टू-टेक्स्ट' और 'ऑडियो-बुक्स' का उपयोग करना ताकि बालक की सूचना ग्रहण करने की क्षमता केवल पठन तक ही सीमित ना रहे।
- अतिरिक्त समय और लचीलापन:** परीक्षाओं और कक्षा-कार्यों में इन बालकों को अतिरिक्त समय प्रदान करना उनके मानसिक तनाव को कम करने में सहायक सिद्ध होता है।

श्रव्यात्मक एवं ध्वन्यात्मक अभ्यास

- ध्वन्यात्मक पृथक्करण:** शब्दों को ध्वनियों के छोटे-छोटे खंडों में तोड़ना। जैसे 'पाठशाला' को 'पाठ-शाला' के रूप में ताली बजाते हुए बोलना। प्रत्येक ताली एक ध्वनि खंड का प्रतीक होती है, जिससे बालक को शब्द की आंतरिक संरचना का बोध होता है।
- लयबद्ध पठन :** अक्षरों और शब्दों को एक विशिष्ट लय या संगीत के साथ पढ़ना। कविता या छंद के रूप में सीखी गई सूचनाएँ डिस्लेक्सिक मस्तिष्क में अधिक समय तक सुरक्षित रहती हैं।

एकीकृत समन्वय अभ्यास

- एल्कोनिन बॉक्सेस:** एक कागज पर कुछ वर्गाकार खाने बनाएँ। बालक को एक शब्द (जैसे 'नल') दें। प्रत्येक ध्वनि (न... ल...) के लिए बालक को एक खाने में कंकड़ या बटन सरकाना होगा। यह अभ्यास दृष्टि, स्पर्श और ध्वनि का पूर्ण एकीकरण है।

- स्काई-लेखन के साथ स्वर-उच्चारण:** हवा में अक्षर लिखते समय उस अक्षर की ध्वनि का उच्च स्वर में निरंतर उच्चारण करना। यह मस्तिष्क के दृश्य, श्रव्य और गतिज केंद्रों को एक साथ उद्भेदित करता है।

भाषा अधिगम को उत्तम बनाने हेतु विशेष हस्तक्षेप

बच्चों को भाषा में दक्ष बनाने के लिए "संरचित साक्षरता" का मार्ग अपनाना चाहिए। इसमें भाषा के नियमों को स्पष्ट, क्रमिक और संचयी रूप से सिखाया जाता है। भाषा अधिगम को एक विशेष संरचना जैसी व्यवस्था में बुनकर, बालक को परत दर परत अधिग्रहण कराया जाता है।

- पुनरावृत्ति का महत्व:** सामान्य बालकों की तुलना में डिस्लेक्सिक बालकों को एक ही नियम की अनेक बार पुनरावृत्ति की आवश्यकता होती है ताकि वह 'दीर्घकालिक स्मृति' का भाग बन सके।
- सकारात्मक सुदृढ़ीकरण :** उनकी छोटी-सी उपलब्धि पर भी उनकी प्रशंसा करना उनके डोपामाइन स्तर को बढ़ाता है, जो अधिगम की प्रक्रिया को सुगम बनाता है।

शोध एवं भविष्य की राह

समकालीन शोध अब 'न्यूरोप्लास्टिस्टिटी' पर केंद्रित हैं। मैसाचुसेट्स इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी के शोध बताते हैं कि यदि प्रारंभिक अवस्था में ही हस्तक्षेप किया जाए, तो गहन प्रशिक्षण के माध्यम से मस्तिष्क के प्रभावित क्षेत्रों के परिपथों को पुनर्गठित किया जा सकता है।

निष्कर्ष

इन अभ्यासों का मूल मन्त्र 'पुनरावृत्ति' और 'धैर्य' है। बहु-संवेदी अभ्यास बालक के आत्मविश्वास में वृद्धि करते हैं क्योंकि वे उसकी क्षमताओं के अनुरूप अधिगम का मार्ग प्रदान करते हैं। जब शिक्षण का माध्यम केवल 'कागज-पेंसिल' तक सीमित न रहकर 'अनुभव' बन जाता है, तब डिस्लेक्सिया से प्रभावित बालक भी भाषाई कौशल में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने में सक्षम होते हैं।

डिस्लेक्सिया कोई अभिशाप नहीं, अपितु सूचना प्रसंस्करण की एक वैकल्पिक विधि है। अल्बर्ट आइंस्टीन, थॉमस एडिसन और लियोनार्डो दा विंची जैसे महान

व्यक्तित्व भी इसी श्रेणी में थे। यदि हम अपने शैक्षणिक ढाँचे में समावेशिता, वैज्ञानिकता और अपार धैर्य का समावेश करें, तो ये बालक न केवल भाषा पर अधिकार प्राप्त कर

सकते हैं, बल्कि अपनी विलक्षण रचनात्मकता से समाज को नवीन दिशा भी दे सकते हैं। आवश्यकता इस बात की है कि हम ‘अक्षमता’ को नहीं, बल्कि ‘अद्वितीयता’ को पहचानें।

ज़िन्दगी एक पहेली

हरीश प्रेमी,
पीएच.डी. छात्र



कहते हैं ज़िन्दगी एक बहुत बड़ी पहेली है, और इस पहेली के अन्दर भी कितनी ही पहेलियाँ हैं। हर क़दम पर कुछ सवाल हैं, हर रास्ते में कुछ चुनौतियाँ हैं।

और हम इन चुनौतियों की जकड़ में जकड़े हुए, इन पहेलियों की उलझनों में उलझे हुए, इस ज़िन्दगी के चक्रव्यूह में धँसे हुए, इन सवालों की कशमकश में फँसे हुए।

दृढ़ते हैं इन सवालों के जवाब, खोजते हैं वो रास्ते, जिन पर चलकर पता चले, ज़िन्दगी का हिसाब-किताब।

ताकि मिल पाए कुछ नए आयाम, ताकि ज़िन्दगी थोड़ी हो जाए आसान,
ताकि खुल पाए कुछ नई खिड़कियाँ, और हासिल हो पाए कुछ नए मुकाम।

लेकिन, रास्ते कहाँ हैं आसान? हम टूटते हैं, गिरते हैं, गिरकर संभलते हैं, और कभी-कभी बिखरते हैं। मेहनत और लगन की भट्टी में, जल-जल कर ही निखरते हैं।

और फिर पूछते हैं—ज़िन्दगी में इतनी तपिश क्यों? रूह तो चाहती है मोहब्बत, फिर दिल में इतनी खलिश क्यों? किसी ने सच ही कहा है—ज़िन्दगी फूलों की सेज नहीं, और फूल तो बीज के टूटने से ही खिलता है।

इसलिए टूटना भी ज़रूरी है, टूट कर ही बीज में से अंकुर निकलता है। बिखरना भी ज़रूरी है, बिखर कर ही कली में से महकता फूल निकलता है। तपना भी ज़रूरी है, तप कर ही भट्टी में जलकर सोना निकलता है। जलना भी ज़रूरी है, जल कर ही चिराग से उजाला निकलता है।

और तुम सोचते हो—ज़िन्दगी फूलों की सेज कैसे बनेगी!

तुम्हें भी तपना पड़ेगा, तुम्हें भी जलना पड़ेगा, तुम्हें भी बिखरना पड़ेगा, तुम्हें भी निखरना पड़ेगा।

और फिर तुम भी महकोगे और दुनिया को महकाओगे, तुम भी चमकोगे और आस-पास जगमगाओगे, तुम भी भरोगे उड़ान और पंख फैलाओगे, उड़ जाओगे आसमान में, ऊँचाइयाँ छू जाओगे।

यह मेरा और तुम्हारा फ़र्ज़ है, और शायद यही मक्सद है ज़िन्दगी का, इन पहेलियों को सुलझाना, इन उलझनों को मिटाना, रास्तों को बेहतर बनाना, मुश्किलों में भी मुस्कराना। ज़िन्दगी भले ही पहेली हो, पर यही इंसान होने की पहचान है।

इन पहेलियों को सुलझाकर ज़िन्दगी को उत्सव बनाना।

हम भारत हैं

- चिंतन पटेल,
अकादमिक सहयोगी



हम मनु अनंति वंशज हैं, हम सभ्यताओं में अग्रज हैं, (2)
हम संतान सिंधु-धाटी की, हम गौरव-गान आर्य माटी का।

ये जड़ें पुरातन युग-युग से, ये धर्म-पारायण युग-युग से,
हम सतलुज हैं, हम रावी हैं, हम प्राचीनतम काशी हैं।

हम दूर्गम थार मरुस्थल हैं, हम गंगा का पावन जल हैं, (2)
हम हिन्द महासागर से लेकर, वृहत हिमालय पर्वत हैं।

हम अदम्य, अमर, अनवरत भारत हैं, हम गर्वित हैं, हम भारत हैं। (2)

भूमि हम तर्क और ज्ञान की है, उत्पत्ति योग और विज्ञान की है।
हम तक्षशिला, हम नालंदा, हम कांचीपुरम्, हम बोधगया, (2)

हम काव्य-महाकाव्य की खान हैं, जीवन-रण में गीता का ज्ञान हैं।
हम आर्यभट का शून्य महान, आयुर्वेद से धरा ध्यस्थान,

हम हैं दर्शन का गहन आनंद, मन में बसते स्वामी विवेकानंद,
हम वास्तुकला का वैभव रूप, हम खजुराहो, हम साँची स्तूप। (2)

गुफाएँ हम अजंता-एलोरा की, सूर्यमंदिर की सत्य रश्मियाँ, हम हम्पी के रम्य स्मारक हैं,
हम महिमामयी, प्रभामयी, कीर्तिमयी भारत हैं, हम गर्वित हैं, हम भारत हैं। (2)

हम माहिर अष्ट कलाओं के, हम धनी फलित भाषाओं के,
हम भरतनाट्यम्, हम कथकली, हम मोहिनीयट्टम्, हम कुचिपुड़ी। (2)

सितार-तान से गूँजित स्वर, संगीत-सप्तक जीवन-अंतर,
जितने हैं प्रश्न कलाओं के, सामवेद हैं सबका उत्तर।

हम संस्कृतियों की रंगोली, पग-पग नई प्रथा, नई बोली, (2)
संपन्न त्योहारों के मेले, दीपावली ईद औणम होली।

हम विविधताओं की एकता हैं, गंगा-जमनी के द्योतक हैं,
हम भाषिणी, अश्विनी, तेजस्विनी भारत हैं, हम गर्वित हैं, हम भारत हैं। (2)

हम भूमि वीर मराठों की, रणकुशल अमर राणाओं की, जो सवा लाख से एक लड़े, उन तेजस्वी योद्धाओं की।

हम राजनीति के चाणक्य हैं, रणनीति के हम छत्रपति, (2)
राणा प्रताप और पृथ्वीराज, शत्रु की निश्चित वीरगति।

हम दुर्गा-रूपी एक लक्ष्मी, झांसी की कोख से जो जन्मी, एक चंद्रशेखर, एक मौलाना, दो ऐसे भी आज्ञाद हम।

हम वल्लभ हैं, हम बोस हैं, हम भगत भी, हम गाँधी भी, संतुलन हम हैं शक्ति का, और इतने सक्षम होकर भी,
संदेश है देते शांति का।

हम वीर हैं परशुराम की भाँति, पर धीर भी श्रीराम की भाँति, महान लोकशाही के हम प्रहरी हैं, संविधान के अनुयायी,
न्याय, समता और बंधुता, सच्ची विरासत यह हमारी।

हम द्रविड़ स्वाद संगम हैं, ओडिशा रथोत्सव दायक हैं, बंसी की मधुर तान यहाँ, कश्मीर की काव्य-विभा यहाँ,
हम उज्ज्यिनी की ज्योतिर्मयी, बंगाल क्रांति की ज्वाला सदा, नारी तू नारायणी से खिलता भारत सदा सर्वदा,
भारत-माँ के श्री चरणों में, हम सब शत-शत नतमस्तक हैं।

हम अद्वितीय, अभय, अजेय भारत हैं, हम गर्वित हैं, हम भारत हैं। (2)



विद्याविनियोगाद्विकासः

भारतीय प्रबंध संस्थान अहमदाबाद

वस्त्रापुर, अहमदाबाद - 380 015

दूरभाष: 91-79-7152 4691 • फैक्स : 91-079-26300352, 26308345

ईमेल : agm-hindi@iima.ac.in • वेबसाइट : www.iima.ac.in